Dr. Chandarkiran R. Ghate
Professor
Dept of Music
Smt. V. N. M. Mv. Pusad
Pusad – 445204

Inter Disciplinary
International Conference

on

Academic Research and Innovation in Teaching
&
Arising Inclination in Professional Education

(ARIT – AIPE 2019)

27th - 28th December, 2019

Conference Proceeding Editors

EDITOR

Prof. R. D. Chandak

Dr. J. M. Chatur

CO-EDITORS

Prof. Y. M. Patil

Prof. S. S. Kane

Prof. U. R. Kantode

Prof. A. S. Kalekar

Prof. H. A. Bharmal

Prof. S. R. Batulwar

Prof. M. P. Shende

Prof. K. S. Panpaliya

Prof. S. S. Malani

CamScanner

307.	Prof. Satish S. Bhagwat	Development And Innovations In Cricket	1001
308.	Dr. B. N. Mahajan	Recession And Economy	1004
309.	Digambar D.Wankhede	Correct Pronunciation of English Language	1008
310.	प्रा.डॉ. चंद्रकिरण घाटे	परम्परागत 'संगीत'कला पर विज्ञान एवं नवीन प्रवृत्तियों का प्रभाव	1011
311.	प्रा.ड. अजय श्री. बोंडे	महाराष्ट्र राज्याचे क्रीडा धोरण–२०१२: एक दृष्टीक्षेप	117
312.	प्रा. वंदना मा. इंगोले	भारतीय संगीताचा उत्पत्ती आणि विकास	1021
313.	चिराग रा. बोरवार	पाश्चात्य देशामध्ये भारतीय संगीताचे बीजारोपण	1025
314.	प्रा. डॉ. संजय कांबळे	उच्च शिक्षणात राष्ट्रीय उच्चस्तर शिक्षा अभियान (रुसा) ची भूमिका व वस्तुस्थिती	1027
315.	डॉ. मंदा माणिकराव नांदुरकर	आधुनिक तंत्रज्ञान आणि भाषेचा प्रचार प्रसार:एक चिंतन	1031
316.	प्रा.कल्पना एस.गोडघाटे	अध्यापन प्रकियेत समाजमाध्यमांची भूमिका	1034
317.	Prof. Manoj M. Jantre	Goods Exports–Imports Of India And China With Rest Of The World: A Benchmarking	1037
318.	Miss. Kasturi D. Kashikar	Artificial Intelligence In HR	1043
319.	Syed Arizul Islam Dr. Kalpana B. Zarikar	A Comparative Study On Cardiovascular Endurance, Speed And Explosive Leg Strength Among Football, Handball And Basketball Players Of Aurangabad Clubs	1047
320	विद्या उत्तमराव घोटे (बोंडे)	भारतीय संगीतात इलेक्ट्रॉनिक वाद्यांची उपयोगीता	1052
321.	डॉ. अंजली खु. मुळे	सामाजिक विकास और मीडिया	1054
322.	प्रा. डॉ. संदिप विठ्ठलराव भुरले	वंचितांचा अभ्यास लेखन प्रवाह (सबाल्टर्न)	1056
323.	Dr.Avinash Uttamrao Jadhao	A Dynamic Role of Libraries in ICT Environment	1058
324.	Dr. Sachin G. Mahajan	Web Portal and its use in Library: a application of WINISIS	1061
325.	Dr.Gajendra B. Raghuwanshi	Technology Improves Sport Performance	1064
326.	Prof. Aslam N. Khan	Role of Central Government In Promoting Sports in India	1069

परम्परागत 'संगीत'कला पर विज्ञान एवं नवीन प्रवृत्तियों का प्रभाव

प्रा.डॉ. चंद्रकिरण घाटे
असोसिएट प्रोफेसर और संगीत विभागाध्यक्ष
श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय, पुसद

सारांश

भारतीय संगीत मे विज्ञान का योगदान यही आज के डिजीटल युग का महत्वपूर्ण 'शोध' माना जाय तो अतिशयोक्ति नही होगी। आज भारतीय संगीत की प्रगती और उपयोगिता पर एक दृष्टीक्षेप डाला जाए तो भारतीय संगीत मे विज्ञान का महत्व कितना है, यह हमारे समझमें आ जायेगा।

प्राचीन कालसे ही भारतीय संगीत एक 'कला' के रूप में उभरा है। हमारी भारतीय संस्कृती में '६४' कलाओं में संगीत इस कला को अग्रस्थान दिया गया है। जिसमें 'स्वर और ताल' के माध्यम से नादब्रम्ह का अनुभव किया जा सकता है।

वर्तमान समय के लिऐं कुछ वैज्ञानिक साधनों एवं उपकरणों की उपयोगिता संगीत जगत में लोकप्रिय हो रही है। जिसके द्वारा न केवल मानवी मनोरंजन होता है, बल्की संगीत के अध्ययन एवं अध्यापन में भी इन साधनों एवमु उपकरणों का भली-भाँति उपयोग होता है। इन साधनों में रेडिओ, ग्रामोफोन, टेपरेकार्ड, सी.डी.प्लेअर, ऑडीओ - व्हीडीओं, डिव्हीडी, मेमरी कार्ड आदि।

'मोबाईल' यह विज्ञान का अत्याधुनिक शोध है। मोबाईल जैसे पोर्टेबल उपकरण को मानव अपने साथ पाकीट में नित्य रुप से रखते है। 'मोबाईल' का मुख्य उद्देश फोन है किन्तु मोबाईल मे अत्याधुनिक क्रांती होकर आज मोबाईल यह छोटा कॉम्प्युटर हो गया है। जिसमें हार्ड-डिस्क की जगह एक छोटी मेमरी चिप ने ली है। जिसमें ३२ जी.बी. तक डाटा संकलीत किया जा सकता है। फिर वह डाटा सांगीतिक क्यों न हो। मोबाईल यह केवल मोबाईल न रहकर टेपरेकॉर्डर, दुरदर्शन, दुरचित्रवाणी, दुरध्वनी और इंटरनेट एवमु चॅनल्स का एक संदेश वहन हो गया है। जिसका उपयोग संगीत के लिऐं भी किया जा सकता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिऐं प्रसार माध्यम के उपकरण इलेक्ट्रॉनिक वाद्यों का अविष्कार ध्वनी पर विविध शोध द्वारा अविष्कृत उपकरणों से कि जानेवाली प्रक्रियाँए यह बहुमुल्य कार्य विज्ञान ने भारतीय संगीत मे किया है। इतना ही नही आज के डिजीटल युग में मायक्रोप्रोसेसर्स एवं मायक्रो कंट्रोलर इन उपकरणों का शोध करके भारतीय में संगीत एक नविन परिवर्तन विज्ञान द्वारा लाया गया है। इन प्रोसेसर्स किट द्वारा कृत्रिम आवाज में भारतीय संगीत के ख्याल को ज्यु के त्युं फिड करके सुनाया जा सकता है। यहॉं तक विज्ञान ने शोध लगाकर नविन कृत्रिम संगीत की नींव रखी। यह प्रोसेसर द्वारा निर्मित संगीत 'नविन संगीत' के नाम से जाना जायेगा ऐसी मे आशा करता हूँ।

इन वैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम सें प्रवृत्तियो कां प्रभाव हो रहा है।

- संगीत में इलेक्ट्रानिक्स् उपकरणों का योगदान :-
  तानपुरा (इलेक्ट्रानिक) :-
  इलेक्ट्रानिक तानपुरे की उपयोगीता :-
  इलेक्ट्रानिक तानपुरे की सीमाएँ :-
- संगणक :-
  "भारतीय संगीतमें संगणक (ब्वउचनजमत) द्वारा रेकॉर्डिंग" :-
  ऑडिओ एवंम व्हिडिओ रेकॉर्डींग :-
- माईक्रोप्रोसेसर :-
- "संगीत इस प्रदर्श्य कला में 'रिमिक्स, फयुजन व पाश्चात्य संगीत' का प्रवेश"
  फयुजन और भारतीय संगीत :-
- जानकारी एवं सम्प्रेषण तंत्र :-
  ॰ ब्वदमितमदबम 'ास :-
  डिजीटल क्लास रूम :- (क्पहपजंस ब्सेंेतववउ) :-
  शिक्षा प्रणाली में (॰॰॰॰) की उपयुक्तता :-
- वैश्विकरण एवं संगीत में आधुनिकता :-
- भारतीय संगीत व चिकित्सा :-
- योग्मुद्रा व संगीत चिकित्सा :-

प्रस्तावना

भारतीय संगीत मे विज्ञान का योगदान यही आज के डिजीटल युग का महत्वपूर्ण 'शोध' माना जाय तो अतिशयोक्ति नही होगी। आज भारतीय संगीत की प्रगती और उपयोगिता पर एक दृष्टीक्षेप डाला जाए तो भारतीय संगीत में विज्ञान का महत्व कितना है, यह हमारे समझमें आ जायेगा।

प्राचीन कालसे ही भारतीय संगीत एक 'कला' के रूप में उभरा है। हमारी भारतीय संस्कृती में '६४' कलाओं मे संगीत इस कला को अग्रस्थान दिया गया है। जिसमें 'स्वर और ताल' के माध्यम से नादब्रम्ह का अनुभव किया जा सकता है।

वर्तमान समय के लिऐं कुछ वैज्ञानिक साधनों एवं उपकरणों की उपयोगिता संगीत जगत में लोकप्रिय हो रही है। जिसके द्वारा न केवल मानवी मनोरंजन होता है, बल्की संगीत के अध्ययन एवं अध्यापन में भी इन साधनों एवमु उपकरणों का भली-भाँति उपयोग होता है। इन साधनों मे रेडिओ, ग्रामोफोन, टेपरेकार्ड, सी.डी.प्लेअर, ऑडीओ - व्हीडीओं, डिव्हीडी, मेमरी कार्ड आदि।

'मोबाईल' यह विज्ञान का अत्याधुनिक शोध है । मोबाईल जैसे पोर्टेबल उपकरण को मानव अपने साथ पाकीट में नित्य रूप से रखते है । 'मोबाईल' का मुख्य उद्देश फोन है किन्तु मोबाईल मे अत्याधुनिक क्रांती होकर आज मोबाईल यह छोटा कॉम्प्युटर हो गया है । जिसमें हार्ड-डिस्क की जगह एक छोटी मेमरी चिप ने ली है । जिसमें ३२ जी.बी. तक डाटा संकलीत किया जा सकता है । फिर वह डाटा सांगीतिक क्यों न हो । मोबाईल यह केवल मोबाईल न रहकर टेपरेकार्डर, दुरदर्शन, दुरचित्रवाणी, दुरध्वनी और इंटरनेट एवम् चॅनल्स का एक संदेश वहन हो गया है । जिसका उपयोग संगीत के लिए भी किया जा सकता है ।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए प्रसार माध्यम के उपकरण इलेक्ट्रॉनिक वाद्यो का अविष्कार ध्वनी पर विविध शोध द्वारा अविष्कृत उपकरणों से कि जानेवाली प्रक्रियाँए यह बहूमुल्य कार्य विज्ञान ने भारतीय संगीत में किया है । इतना ही नही आज के डिजीटल युग मे मायक्रोप्रोसेसर्स एवं मायक्रो कंट्रोलर इन उपकरणों का शोध करके भारतीय संगीत मे एक नविन परिवर्तन विज्ञान द्वारा लाया गया है । इन प्रोसेसर्स किट द्वारा कृत्रिम आवाज में भारतीय संगीत के ख्याल गीत को थ्यु के त्युं फिड करके सुनाया जा सकता है । यहं तक विज्ञान ने शोध लगाकर नविन कृत्रिम संगीत की नीवं रखी । यह प्रोसेसर द्वारा निर्मित संगीत 'नविन संगीत' के नाम से जाना जायेगा ऐसी मै आशा करता हुँ। इन वैज्ञानिक उपकरणो के माध्यम से प्रवृत्तियो का प्रभाव हो रहा है ।

संगीत में इलेक्ट्रानिक्स् उपकरणों का योगदान

इलेक्ट्रानिक तबला (तालमाला), लहरा यंत्र (सुरमाला), इलेक्ट्रानिक तानपुरा यह गत २०-२५ वर्ष पुरानी कलाकृती है । विज्ञान का एक शोध है । २५ वर्ष पहले रेंडल कंपनी, बेंगलोर ने इस वाद्य की निर्मिती की । गत २५ वर्षों से उस उपकरणपर नवनवीन प्रयोग कर प्रगती की ओर चलकर आज इसकी प्रगत आवृत्ती दिखाई पडती है। रेंडल एवं रागिनी कंपनीयों के विद्युत उपकरणों की माँग आज भारी मात्रा में है।

अ) तानपुरा (इलेक्ट्रानिक) :-

इस वाद्य में प्रत्येक तार के नाद-गुणधर्म का भौतिकशास्त्रीय पृथःकरण एवं विकास कर यह नाद इलेक्ट्रॉनिक्स लहरियों मे परिवर्तित करने का तंत्र विकसित करना यही इस शोध की प्राप्ती लगती है । विकास के अनेक टप्पों को प्राप्त करके आज एक छोटासा, अच्छासा, तानपुरे समान गुंजनेवाला बिजलीपर चलनेवाला 'इलेक्ट्रानिक्स तानपुरा' माफक किमतमें मार्केटमें उपलब्ध है ।

यह एक इलेक्ट्रानिक उपकरण है । .'डिजीटल' पध्दती द्वारा इसे बनया गया है । इसका आवाज कम अधिक करने के लिए बटन दिया गया है । अखंडीत नादमाधुर्य एवं सुर की समसापुतता, एकसंघ व निरंतर चलने के लिएँ शास्त्रज्ञो नें इसमें काफी श्रम किएँ है, यह आवाज हम तक पहुँचने के लिए आगे और पिछे दोनो ओर स्पिकर्स से निकलकर ध्वनी गुँजती रहती है ।

यह वाद्य सुविधाजनक है किंतु श्रुत्यांतर की दृष्टीसें इसमें से उत्पन्न ध्वनी एक सकेल में योग्य हो सकती है । किंतु षडज-पंचम, स्केल बदलने के बाद ध्वनी पूर्ण रूप से प्राप्त होना चाहिएँ

इससे समय की बचत होती है, खर्च कम होता है । बुध्दी को बहुत ज्यादा ट्रेस की आवश्यकता नही होती, जल्द से जल्द सब सेट हो जाता है । यह इसके फायदे है । जवार निकालना, एक गांव से दुसरे गांव आना एवं ले जाना, यह सुविधाजनक है । यह एक यंत्र है । तानपुरा के लिए विकल्प के नाते इसे बहुत-जगह पर मान्यता ही मिल रही है । यह बिजली पर चलनेवाला स्वयंचलित उपकरण है । इसे 'इलेक्ट्रानिक तानपुरा' कह सकते है ।

ब) संगणक :-

संगणक को ही 'कॉम्प्युटर' कहां जाता है । 'कॉम्प्युटर' मे डिसप्ले के लिए मॉनिटर की जरूरत होती है । और कार्य करने के हेतु 'की बोर्ड' लगाया जाता है । जिसके द्वारा डाटा 'कॉम्प्युटर' मे 'इनपुट' होता है । कॉम्प्युटर के 'हार्डडिस्क' या मेमरी में डाटा स्टोअर करने से पहले उस डाटा को भली-भाँती मॉनीटरपर देखा या रचनात्मक रिती से समझाया जा सकता है । इसे ही 'सेटींग' कहते है। 'अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, संस्कृत' जैसे किसी भी भाषा में 'सॉफटवेअर' की मदत से डाटा स्टोअर किया जाता है । कॉम्प्युटर मे मॉनीटर, सिपीयु, की बोर्ड, माउस, प्रिन्टर, स्कॅनर जैसे हार्डवेअर होते है । जिनकी मदद से कॉम्प्युटर का संच निर्माण होता है। इसमें विनडो '१९९७', मायक्रोसॉफट '२०००', विनडो एक्सपी यह प्रोग्राम फिड करके काम करना पडता है । इन विनडो के अलावा कुछ अन्य सॉफटवेअर काप्रयोग कॉम्प्युटर मे करना पडता है । जिससे कॉम्प्युटर पर काम करना आसान हो जाता है । और मानव के कार्य का उद्देश सफल होता है, इस पुरे काम को करना आसान हो जाता है । और मान के कार्य का उद्देश सफल होता है । और इस पुरे काम को सिडी या डिव्हीडी राईटर द्वारा डाटा संकलित करके हम सामग्री को संकलित कर सकतें है । प्रिन्टर द्वारा भाषिक या छायाचित्र का कागज पर प्रिन्ट भी उतार सकते है । यह सुविधा आज के डिजीटल युग में किसी भी साधन में उपलब्ध नही है । यह कारण है की संगणक यह मानीव जीवन का अभिन्न अंग बन गया है । हर क्षेत्र में कॉम्प्युटर की उपयोगिता बढ रही है । संगणक में 'मायक्रोप्रोसेसर' यह सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है । बिना प्रोसेसर के संगणक का कार्य असंभव है ।

"भारतीय संगीत में संगणक (ब्वउचनजमत) द्वारा रेकॉर्डिंग" :-

आज २१ वी शती डिजीटल एवं कॉम्प्युटर युग है । इस विज्ञानयुग ने शोध प्रशोध करके हर विषय के क्षेत्र मे अनेक संसाधन उपलब्ध किएँ है, एवं इन संसाधनो द्वारा प्रगती के द्वार खोल दिएँ है । आज संगीत की प्रगती एवं उपयोगिता पर एक दृष्टिक्षेप डाला जाएँ तो विज्ञान इलेक्ट्रानिक्स और कॉम्प्युटर इन विषयों से कही -न-कही जुडे हुएँ नजर आते है । जैसे ' रेकॉडिंग, ब्रॉडकास्टींग, रेडीओ, टेलिव्हजन कॅसेट, सी.डी आदि संगीत से जुडे इन वैज्ञानिक संसाधनो से दूर रह पाना नामुमकीनसा लगने लगा है ।

ऑडिओ एवंम व्हिडिओ रेकॉर्डींग :-

कॉम्प्युटर की माध्यम से रेकॉर्डिंग स्टुडिओ मे सभी प्रकार के संगीत का डिजीटल रेकॉर्डिंग किया जा सकता है । उसे सी.डी पर उतार भी जा सकता है । इसीप्रकार टी.व्ही. -सिरियलर्स चलचित्र एवं नाटक इस सभी का व्हिडीओ रेकॉडींग कॉम्प्युटर की माध्यम से किया

CS CamScanner

हिन्दुस्थानी एवं कर्नाटक संगीत का मिश्रण करके पं. भिमसेन जोशी एवं पं. बालमुरलीकृष्णंन एवं पंकृबालमुरलीकृष्णंन व किशोरी आमोणकरजी का अलगसा मिश्रण, पं. रतनमोहन शर्माजी व पं. शंकर महादेवन का फयुजन इन्हे हम शास्त्रीय संगीत की आधुनिकता कह सकते है ।

दो भिन्न कलाओं को एकसाथ पेश करना यह भी एक आधुनिकता हमारे सन्मुख आई है । इससे दो कलाओं का एकसाथ आनंद रसिकजन लेते है । जैसे चित्रकला व गायन, शिल्पकल व गायन, आदि.

सुगम-संगीत में 'श्री.अवधुत गुप्तेजी' बकउरा डनेपब इस प्रकार में 'जय जय महाराष्ट्र माझा' एवं 'बाई-बाई मन मोराचा कसा पिसारा फुलला' इन दो प्रसिध्द मराठी गानों को गाया है । यह आधुनिक संगीत ही कहलाऐगा ।

शास्त्रीय संगीत में प्रतिभासंपन्न कलाकार पं रविशंकरजी (सितार), पं. झाकीर हुसेन (तबला), उ.तौफीक कुरेशी एवं पं. हरिहरन इन्होने 'आंतरराष्ट्रीय फयुजन' में सहभाग लेकर भारत देश का नाम सम्पूर्ण विष्व में प्रसिध्द किया । इसे हम आधुनिक संगीत से वैश्विकरण कह सकते है ।

क) संगीत व चिकित्सा का परिणाम :-

जहाँ आज एलौपेथी, होमियापैथी, बायोकेमिकल, नैचुरोपैथी आदि चिकित्सा पध्दतियों को प्रोत्साहन मिल रहा है वही संगीत से भी रोगों के उपचार की विधि खोज ली गई है और इसका सफलतापुर्वक उपयोग किया जा रहा है ।

भारतीय संगीत में अनेक राग है तथा प्रत्येक राग की अपनी अलग - अलग प्रकृति, प्रवृति तथा गायन समय निर्धारित है । किसी भी एक रोग के लिए एक राग न होकर प्रत्येक रोग के लिए भिन्न - भिन्न रागों को प्रयोग हो सकता है। यह चिकित्सा शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार के रोगों के लिए रामबाण औषधि सिध्द हो रही है, जिसका श्रवण मात्र करने से ही तात्कालिक शान्ति महसूस होती है । संगीत योगसाधना का अंग माना जाता है, जिससे बडे - बडे रोगों का निवारण आसान हो गया है । भारत मे वैदिक काल से ही सांगीतिक उपचार के प्रमाण मिलते है । संगीत को स्नायविक मानसिक तनाव के निराकरण की महत्वपूर्ण औषधी कहा गया है ।

संगीतिक उपचार के माध्यम से रोगी के शरीर में एड्रीनेल की कमी हो जाती है । जिससे रोगी के दर्द को एकदम से शांत किया जा सकता है । संगीत का प्रभाव मनुष्य या रोगी के केन्द्रिय स्नायु -तंत्रिका - तंत्र पर पडता है । संगीत के माध्यम से जो ध्वनि - तरंगे उत्पन्न होती है, वे स्नायु प्रवाह पर वांछित प्रभाव डालती है और इससे न केवल उसकी सक्रियता को बढाती है बल्कि विकृत चिन्तन रोकने के अलावा मनोविकारों को भी मिटाती है ।

संगीत के सुनियोजित प्रयोग से रोग निवारण, भावनात्मक अभिव्यक्ति, स्फूर्तिवर्धन एवं प्रतिभा उन्नयन से लाभ सम्भव है । मानसिक रोगियों में सांगीतिक प्रचार का प्रभाव बडे कम समय में देखने को मिल जाता है । संगीत प्रत्येक जीव को प्रभावित करने में सक्षम सांप जैसे जानवर भी इससे मन्त्रमुग्ध हो जाते है । इस परिक्षण के अनुसारपेड -पौधे भी संगीत सुनते है । कलबध्द ध्वनियाँ स्नायु तंतुओं की संवेदनशीलता और गतीशिलता को बढाती हैं । हृदय रोग और रक्तचाप के संतुलन में संगीत की ध्वनि तरंगे विशेष रूप से लाभप्रद सिध्द हुई है ।

एक सफल परिक्षण से पता चला है कि गर्भाशय में शिशु तथा गर्भवती मां को विशेष संगीत की मददत से आहट, रक्तचाप, पीलीया और मानसिक तनाव पर नियंत्रण किया जा सकता है तथा तनावमुक्त प्रसव होने मे भी सुविधा मिल सकती है।

इस संगीत-चिकित्सा का कोई दुष्परिणाम नही होता बल्कि संतान की बौध्दिक क्षमता बहुआयामी एवं उत्कृष्ट होने की सम्भावना बिनी रहती है ।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में अनेक प्रकार के राग है और प्रत्येक की अलग - अलग प्रकृति तथा प्रवृति है जिनके आधार पर व्यक्तियों को राजसी, तामसी और सात्विक इन तीन गुणों में वर्गीकृत किया गया है । होमियोपैथी मे भी तीन तरह का वर्गीकरण मिलता है । इसी तरह आयुर्वेद मे भी त्रिदोष- वात, पित्त और कफ के आधार पर रोगों का वर्गीकरण किया गया है ।

अतः रोग निवारण हेतु संगीत या राग का निर्धारण केवल रोगी के व्यक्तिगत परिक्षण के बाद ही किया जा सकता है ।

आनंद इस उदिष्ट को रोगी यदि अपने दृष्टिसमोप रखकर पसंतीदार संगीत का श्रवण करे तो रोग की तीव्रता घटाने में मदद मिल सकती है । किसी भी प्रकार का कोई श्रम न करते हुएँ केवल श्रवण इंद्रिय की सहायता से संगीत का रसास्वाद मनमुराद लिया जा सकता है और व्याधी को भूलाया जा सकता है । अर्थात वैद्यकिय भाषा में कहीं जाएँ तो 'अनेस्थेषिया' का काम संगीत द्वारा हो सकता है ।

पाश्चात्य देशों मे लोगों ने इस चिकित्सा को खुशी-खशी स्वीकार कर लिया है। अब हमे भी इसे स्वीकारना है तथा इसके प्रचार - प्रसार में हिस्सेदारी पाकर संगीत को संस्कृति के रूप में संजोए रखना है। संगीत चिकित्सा के द्वारा रोगनिवारण पक्ष्याय है, मनःशांती प्राप्त है, एवं सहिष्णुता इसमें व्याप्त है ।

निष्कर्ष :-

''भारतीय संगीत यह सर्व संगीत का मूलस्थान है'' । ''इजिप्शियन संगीत का आधार भारतीय संगीत है'' । जिस समय संगीत की निर्मिती हुई उसी समय से वह एक जागतिक कला है, 'संगीत' कला मात्र 'स्वर व लय' के द्वारा ही सौंदर्य की सृष्टी करती है । विश्व मे सभी संगीत मे स्वर समान है केवल उनके नाम में अंतर है एवं उसे प्रकट करने की पध्दती अलग-अलग है

CamScanner

केवल उनके शैलीयों में अन्तर है । दो अलग-अलग प्रवाह का मिलन जागतिकीकरण अथवा वैश्विकरण कह सकते है । यह नविन प्रवृत्तीयो एवं विज्ञान का प्रभाव परंपरागत संगीत कला पर आज दिखाई पडता है । यह सभी कलाकारों को अमान्य न होगा ।

संदर्भ ग्रंथसुचि :-

ग्रंथनाम	लेखक	प्रकाशक
१) भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग	डॉ.अनिता गौतम	कनिष्क प्रकाशक, नवी दिल्ली
२) हमारा आधुनिक संगीत	डॉ.सुशिलकुमार चोबे	उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान लखनौ
३) भारतीय संगीत वाद्य	डॉ. लालमणी मिश्रा	भारतीय ज्ञानपीठ, नवि दिल्ली

४) संगीत कला विहार -जुलै २०१२, पृष्ठ ११ से १५, लेखक - चंद्रात्रे, नाशिक.
५) संगीत कला विहार - ऑगस्ट २०१०, पृष्ठ १६ से २१, लेखक - डॉ. महावती शर्मा, इलहाबाद
६) संगीत कला विहार - फेब्रुवारी २००७, पृष्ठ २० से.
७) भौतिकशास्त्र ध्वनी - लेखक डॉ.म.ग. केळकर
८) विश्व संगीत का इतिहास - अमोलकुमार द्वाश शर्मा.

CamScanner

IQAC | NAAC B | CGPA 2.21 (B)

Certificate

Organized by

College Of Management And Computer Science, Yavatmal

In Collaboration With

Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalay, Yavatmal.

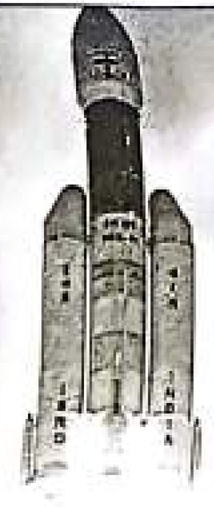

27th & 28th December 2019

This is to certify that

Shri. / Smt. / Ku. / Dr. / Prof Chandrakiran Ghate

of SMT V. N Mahila pusad has actively participated in the two days International Conference organized by College Of Management And Computer Science, Yavatmal in Collaboration with Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya, Yavatmal on **"Academic Research and Innovation in Teaching & Arising Inclination in Professional Education."** He/She has presented / published a paper on [illegible]

Prakash H. Jajoo	Jagdish G. Wadhwani	Dr. Jayant M. Chatur	Prof. Ritesh D. Chandak
President	President	Principal	Principal

CamScanner

IQAC | NAAC B | National Assessment & Accreditation Council | CGPA 2.21 (B)

Sr. No.

Certificate

Organized by

College Of Management And Computer Science, Yavatmal

In Collaboration With

Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalay, Yavatmal.

27th & 28th December 2019

This is to certify that

Shri. / Smt. / Ku. / Dr. / Prof Dr. Chandrakiran Ghate

of SMTV N Mahila Pusad has participated as Chief Guest /Resource Person / Chairperson / Co-Chairperson in two days International Conference organized by College Of Management And Computer Science, Yavatmal in Collaboration with Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya, Yavatmal on "Academic Research and Innovation in Teaching & Arising Inclination in Professional Education."

Prakash H. Jajoo	Jagdish G. Wadhwani	Dr. Jayant M. Chatur	Prof. Ritesh D. Chandak
President	President	Principal	Principal
Harikisan Jajoo Education Sanstha	Yavatmal Zilla Vikas Samiti, Yavatmal	Smt. Nankibai Wadhwani Kala Mahavidyalaya	College Of Management And

CamScanner

Sr.No.	Name Of Author	Title Of Paper	Page No.
96	डॉ. संजय जे. भगत	मानवाधिकार आणि कौटुंबिक हिंसाचार	348
97	प्रा. संतोष लोभासिंग जाधव	स्त्रियांची स्थिती आणि मानवाधिकार	351
98	प्रा. मुकेश भाउराव सरदार	मराठी साहित्याचे सामाजिक योगदान	356
99	डॉ. श्याम मु. जाधव	संत तुकाराम महाराजांच्या अभंगातील सामाजिक योगदान	359
100	डॉ. दिपक शृंगारे	जागतिकीकरणाचे भारतीय अर्थव्यवस्थेवरील आर्थिक परिणाम	362
101	डॉ. विवेक जी. सिरस्कार	स्त्रियांचे मानवी हक्क व स्त्रियांवरील कौटूंबीक हिंसाचार	366
102	दिपाली प्रकाश तोटे	मानवाधिकार और घरेलू हिंसा	370
103	डॉ.वंदना दामोधर आरक	स्त्री आरोग्य आणि तणाव व्यवस्थापन	374
104	प्रा. वनिता किसनराव बोदडे	बालकांच्या विकासात आईची भूमिका	377
105	डॉ. एन.आर. वर्मा	नक्षलवाद –भारतीय लोकशाही, संसदीय शासन प्रणाली आणि विकासाला मारक एक अभ्यास	383
106	डॉ.विद्या भैसारे	ताणाचा महिलांच्या आरोग्यावर होणारा परिणाम	386
107	प्रा.विक्रांत कृष्णराव मेश्राम	मराठी साहित्य आणि आंबेडकरी सहित्य सामाजिक, सांस्कृतिक चळवळ	391
108	कु.प्रज्ञा बाळकृष्ण पंडित	मानवी हक्क आणि घरगुती हिंसा	394
109	प्रा. कु. प्रतिभा सुभाषराव काटकर	महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांच्या शारीरिक विकासामध्ये आहाराचे महत्व	398
110	प्रा. सुधीर मा. गोटे	मानवी अधिकार आणि कौटुंबिक हिंसाचार	402
111	प्रा.डॉ.रावसाहेब पिराजी इंगळे	भारताचा सामाजिक प्रगती निर्देशांक : एक दृष्टीक्षेप	404
[illegible]	[illegible]	[illegible]	407
113	डॉ. उज्ज्वला वंजारी	मराठी साहित्याचे सामाजिक योगदान	410
114	डॉ.दामोदर चंद्रभान दुधे	सामाजिक विकास आणि आव्हाने	413
115	प्रा.डॉ. चंद्रकिरण घाटे	संगीत ललित कला पर वैश्विकीकरण का प्रभाव	417
116	Dr. Rajesh G. Maske	Evils of Patriarchy in Chinua Achebe's Things Fall Apart	421
117	Dr. Sarita Dinkarrao Deshmukh	Child Growth and Development Stages	423

संगीत ललित कला पर वैश्विकीकरण का प्रभाव

प्रा.डॉ. चंद्रकिरण घाटे
असोसिएट प्रोफेसर और संगीत विभागाध्यक्ष
श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय, पुसद
जि. यवतमाळ (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :

व्यक्ति के जीवन में संगीत का स्थान महत्वपुर्ण व अनिवार्य है। अपने रूचिनुसार प्रत्येक व्यक्ति संगीत का श्रवण करता है एवं आनंद लेने का प्रयास करता है। प्रत्येक व्यक्ति को मनोरंजन की आवश्यकता होती है। मनोरंजन हेतू 'संगीत' एक प्रभावी ललित कला एवं माध्यम है।

'स्वर और ताल' पर संगीत का भवन स्थित है। स्वर संगीत का आत्मा है, स्वर से मन के भाव प्रकट होते है। सारा विश्व स्वर की भाषा को भली–भाँति समझता है। स्वर एवं ताल के माध्यम से मानवी मन को आकर्षित करनेवाली ललित कला 'संगीत' है। 'संगीत' ललीत कला यह मानवी मन को आकर्षित कर आंतरिक प्रकिया करती है। इसलिएँ 'संगीत' को स्वर की भाषा एवं विश्व की भाषा कहाँ गया है। सारा विश्व इस भाषा को भलि–भाँति जानता है।

संगीत एवं वैज्ञानिक तंत्र :–

प्राचीन काल से ही भारतीय संगीत एक कला के रूप में उभरा है। हमारी भारतीय संस्कृती में '६४' कलाओं में 'संगीत' इस कला को अग्रस्थान के रूप में माना गया है, जिसमें स्वर और ताल के माध्यम से नादब्रम्ह की अनुभूती की जा सकती है। 'कला' पक्ष के साथ कुछ समय बाद 'शास्त्र' पक्ष भी उभरने लगा और आज संगीत के साथ विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स् और कंम्प्युटर इनका दृढ रिश्ता बना हुआ अनुभव किया जा सकता है। नाद–श्रुती–स्वर–ताल–राग का संस्करित रूप ही हमारा शास्त्रीय 'संगीत' है। अभिजात संगीत है।

विज्ञान, पदार्थ विज्ञान (Physic), परमाणु विज्ञान (इलेक्ट्रॉनिक्स) एवं संगणक (कॉम्प्युटर) यह सभी वैज्ञानिक विषय संगीत की भाँती ध्वनी (Sound) एवं 'ध्वनी' के अलग–अलग पहलुओं का सखोल अध्ययन वैज्ञानिक दृष्टि से करते है। वैज्ञानिको व्दारा नवनवीन शोध–प्रशोध करके ध्वनी एवं आंदोलन के माध्यम से नवनवीन तंत्रो का उपयोग करके आज संगीत में नवनवीन वाद्यों–यंत्रो का निर्माण कॉम्प्युटर एवं इलेक्ट्रॉनिक्स के माध्यम से हुवा है। इसके फलस्वरूप न की केवल मानवी मनोरंजन होता है, बल्की संगीत के अध्ययन एवं अध्यापन में भी इन संसाधनों एवं उपकरणों व्दारा संगीत को सिखाया जा सकता है। आज के डिजीटल युग में संगीत के अध्ययन–अध्यापन प्रकिया में इलेक्ट्रॉनिक्स एवं कॉम्प्युटर का महत्व अनन्यसाधारण है जैसे–रेडिओ, टि.व्ही.। ऑडिओ, व्हिडीओ आदि, इसलिएँ एक अध्यापन पध्दती के रूप में (Teching Method) ICT का प्रयोग हम भली–भाँती कर सकते है। यह भी वैश्विकरण का एक अंग है। विज्ञान के शोध है, एवं सामग्री का प्रभाव है और उपयोगिता है।

वैश्विकरण अथवा वैश्विकीकरण अर्थ व परिभाषा :–

वैश्विकीकरण का प्रथम उल्लेख १९६१ में 'वेबस्टर के डिक्शनरी' में मिलता है – "The growing significance of the world wide connectedness of social event and relationships."

मार्टिन अल्ब्रो – "This is the process where by the population of the world is increasingly bonded into a single society."

रॉनाल्ड रॉबर्टसन – "वैश्विकीकरण यह केवल पश्चिम में जन्मी प्रकिया नही अपितु विश्व के सभी संस्कृतियों का इसमें अंश है।"

वैश्विकीकरण :–

मानवता एवं संस्कृति के साथ–साथ ललित कलाओं का भी उद्‌गम एवं विकास हुँआ। प्रत्येक ललित कला अपने चरम स्वरूप में संगीत कला को प्राप्त होती है। 'संगीत' कला मात्र 'स्वर व लय' के व्दारा ही सौंदर्य की सृश्टी करती है। वैश्विकीकरण के आज के दौर में सामन्य जन को भास्त्रीय संगीत से दूर भागता पाते है। इसका कारण है आज का संगीतकार अपने संगीत को सुक्ष्म विशेशताओं और उनकी वैज्ञानिकता से वंचित हो चुका है और रसों की सृश्टि करने में असमर्थ है, जो 'प्राचीन भारतीय संगीत' मे थी। पाश्चात्य संगीत का प्रभाव व संगीत में प्रयोज्य प्रचलीत स्वर संज्ञाएँ परिवर्तित हो गई है। जहाँ भारतीय संगीत में विश्व में अपना परचम लहराया है वही दुसरी ओर अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को छुपी क्षति को भी अविष्कृत नही किया जा सकता इस प्रकार भारतीय संस्कृति पर वैश्विकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनो ही प्रभाव पडे हैं। हमारा भारतीय संगीत ही हमारे दे । की आत्मा है। भारतीय संगीत मे वह विशेशताएँ एवं वैज्ञानिकता निहित है। जिसे खोकर हम अपने प्राचीन भास्त्रीय संगीत से भ्रमित हो गएं है। आज आवश्यकता है कि हमारा आज का शास्त्रीय संगीत फिर से रसमय हो सके और सौंदर्य की उन प्राचीन गौरवमयी ऊँचाईयों को छु सके जो आज मात्र किवदंतियों प्रतित होती है। आज वैश्विकीकरण व पाश्चात्य संगीत के प्रभाव से ब्रम्हानंद का सहोदर माना जाने वाला भारतीय संगीत विलासानंद का प्रेरक मात्र बनकर रह गया है।

भारत देश अपनी 'सांस्कृतिक–भिन्नताओं' के लिएँ सम्पूर्ण विश्व में प्रसिध्द है। हमारे पूर्वज कितने दूर द्रष्टा थें, यह इस बात का दयोतक है कि, जिस वैश्विकीकरण (Globalization) के महत्व को भौरा विश्व के लोग आज समझ पाएँ है। उसे हमारे मनिशियों ने बहूत पहले ही निर्धारित कर दिया था। वर्तमान में यह बिल्कुल स्पश्ट एवं निश्चित हो चुका है कि, खंडित विश्व के स्वरूप से मानव का कल्याण संभव नही है। वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में हुएँ तकनिकी एवं संचार क्रान्ति के कारण ही 'समस्त विश्व ही एक ग्राम' के समान है। विश्वव्यापीकरण की प्रकिया में तेजी आई है। वैश्विकरण का अर्थ केवल आर्थिक वैश्विकीकरण नही होता बल्कि पश्चिमी संस्कृति तथा प्रतिमानो का दुसरे देशो में प्रसार भी होता है।

वैश्विकीकरण समाज व्यवस्था एवं अर्थव्यवस्था एवं सांस्कृतिकीकरण के कारण कुछ दशको से वैश्विकीकरण इस प्रक्रिया का आरंभ हुंवा। वैश्विकीकरण यह प्रक्रिया होकर भी एक संकल्पना के रूप में उभरकर सामने आ रही है। सभी सामाजिक शास्त्रो व्दारा इस प्रक्रिया एवं संकल्पना को विकसित करने के पुख्ता प्रयास किएँ जा रहे है। ठिक इसी प्रकार सांस्कृतिक एवं सांगीतिक प्रकिया और संकल्पना के नाते हमे भी इसका स्विकार करना अनिवार्य हो जाता है।

''जानकारी एवं तंत्रज्ञान'' का बढता स्त्रोत एवं विस्तार इस कारण विश्व में देशो–विदेशो में भौगोलिक अंतर कम हुआ है। "Internet का प्रचार–प्रसार बहुत तेज गती से संपूर्ण विश्व में हुँआ है। विश्व में "World Wide Web के जंजाल मे फँसा नजर आ रहा है। जानकारी एवं तंत्रज्ञान (Information Technology) मे हो रहे क्रांतीकारी परिवर्तन से हो रहा है। दूरध्वनी, भ्रमणध्वनी, ई–मेल, फेसबुक, व्हाटस अप इत्यादी वैज्ञानिक उपकरणो का विकास, प्रवास यात्रा हेतु विमानो की उपलब्धी ई–जर्नल्स, ई–बुक्स, इलेक्ट्रॉनिक सांगीतिक उपकरण एवं वाद्य आदि वैज्ञानिक प्रगत साधनो–संसाधनो व्दारा सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सांगीतिक संक्रमण हो रहा है और संपूर्ण विश्व एकात्म हो रहा है। विश्वग्राम का स्वरूप एवं मानव समुह को प्राप्त

१९८० के उपरान्त जानकारी तंत्रज्ञान मे आएँ क्रांतिकारी परिवर्तन से [illegible] होनेवाली [illegible] इस प्रक्रिया को अधिकतर गति प्राप्त हुई है। प्रकिया है। जानकारी–तंत्रज्ञान के क्षेत्र मे हुएँ अधिकाधिक शोधो से वैश्विकीकरण

वैश्विकीकरण एवं संगीत –

वैश्विकीकरण एवं संगीत इस विषय पर शायद ही कभी चर्चा हुई हो। मेरे विचार से– 'जब संगीत इस कला का निर्माण एवं प्रचार–प्रसार हुँवा, उस समय यह एक जागतिक कला एवं वैश्विक कला के स्तर पर ही उभरी है।' संगीत भारतीय (Indian) हो या पाश्चात्य (Western) हो या पौर्वात्य (Oriental) हो, इस सभी संगीत में CDEFG इस प्रकार केवल नामो मे अंतर है। चीनी संगीत मे '५' स्वर है। इसे 'पेंटेटोनिक' कहा जाता है। इस स्वरसप्तक में कुंग, भोंग,

चिआओ, चिट, एवं यु इसप्रकार स्वरो के नाम है। हिन्दुस्थानी संगीत मे '१२' स्वर, कर्नाटक संगीत मे '१६' स्वर एवं चिनी संगीत मे यंग (पुरुष) एवयिन (स्त्री) स्वरो के सिध्दांत को माना जाता है। चीन व जापान में एक ही परम्परा है।

इराणी संगीत, पर्शियन संगीत, अरबी संगीत, एवं भारतीय संगीत में प्रच्युर मात्रा में समानता दिखाई पडती है। इतिहास की और एक दृष्टि डालने पर बहुतसे प्रमाण प्राप्त होते है–

सर सुरेंद्रमोहन ठाकुरजी के मतानुसार – ''सातवे शतक के उपरान्त मे इराण व भारत में कलाकारो में आदान–प्रदान शुरू हुआ, इसका दोनो ही संगीत कलाओ पर परस्पर परिणाम होने लगा। इसी को हम सांस्कृतिकता कह सकते है, यह जागतिकता के स्तर पर हुई है। आज की भाषा मे कहा जाय तो यह एक रिमिक्स है। यह वैश्विकीकरण का उदाहरण है।''

पायथागोरस के स्वरसप्तक के निर्मिती यह संगीत जगत के वैश्विकीकरण का प्रथम प्रमाण माना जाय तो अतिशयोक्ति नही होगी। संगीत के प्रथम सप्तक का अविष्कार पायथागोरस ने किया भारतीय संगीत का स्वरसप्तक जिसे 'हम बिलावल–थाट' का स्वरसप्तक कहते है। यह स्वरसप्तक और पायथागोरस का स्वरसप्तक यह दोनो स्वरसप्तक निकटवर्तीय है। संगीत के एकीकरण की प्रक्रिया इसी समय शुरू हुई थी यह हम कह सकते है।

पर्शियन, इराणी, अरबी एवं भारतीय संगीत यह अपने–आप मे मेल खाते है। बहुतसी बातो में समानता दिखाई पडती है, यह वैश्विकीकरण का प्रमाण है।

आज के '२१' वी सदी में भारतीय संगीत सम्पूर्ण विश्व में लोकप्रिय हो रहा है। युरोप में युरोपियन भारतीय संगीत को सीखना चाहते है। पं.रविशंकर जिन्हे हम 'सांस्कृतिक–राजदुत' कहते है। पाश्चात्य देशो मे भारतीय संगीत लोकप्रिय करने का श्रेय पं. रविशंकरजी को ही जाता है। भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत पध्दती का मिलाप करने का सर्वाधिक श्रेय पंडीतजी को ही जाता है। पंडितजीने 'यहुदी–मेनुहिन' के संगीत से भारतीय संगीत का संयोग करके Fusion' यह एक उपशाखा की निर्मिती की है। जो आज पुरे विश्व मे प्रचुर मात्रा मे प्रचलित एवं लोकप्रिय हो रही है।

वैश्विकीकरण के कारण संगीत में परिवर्तन –

आज के वैश्विकीकरण में वैज्ञानिक प्रगती के साथ–साथ मानव की जीवनशैली मे परिवर्तन आ रहा है। इस बदलते जीवनशैली में संगीत के साथ–साथ मिलनेवाला संगीत, परम्परा, श्रध्दा, विश्वास इन्हें छेद देनेवाला संगीत, स्वर से ताल को (रिदम को), गायन से वादन को महत्व देनेवाला, एवं गायन–वादन से नृत्य को महत्व देनेवाला संगीत, इसे हम 'आधुनिक संगीत' कह सकते है। आज के संगीत में 'सुफी संगीत' का प्रभाव बडी मात्रा में है। रिमिक्स एवं फ्युजन से युक्त संगीत को आधुनिक संगीत कह सकते है। शास्त्रीय संगीत में शहनाई व सरोद इनका मिश्रण उ. बिसमिल्ला खाँ एवं उ. अमजद अली खाँ ने करके एक फ्युजन बनाया। हिन्दुस्थानी एवं कर्नाटक संगीत का मिश्रण करके पं. भिमसेन जोशी एवं प. बालमुरलीकृष्णन व किशोरी आमोणकरजी का अलगसा मिश्रण, पं. रतनमोहन शर्माजी व पं. शंकर महादेवन का फ्युजन इन्हे हम शास्त्रीय संगीत की आधुनिकता कह सकते है।

दो भिन्न कलाओं को एकसाथ पेश करना यह भी एक आधुनिकता हमारे सन्मुख आई है। इससे दो कलाओं का एकसाथ आनंद रसिकजन लेते है। जैसे चित्रकला व गायन, शिल्पकला व गायन, आदि.

सुगम–संगीत मे 'श्री. अवधुत गुप्तेजी' Combo Music इस प्रकार मे 'जय जय महाराष्ट्र माझा' एवं [illegible] 'गुलजार' ये दो प्रसिध्द मराठी गानो को [illegible] है। यह आधुनिक संगीत का कहलाएगा।

शास्त्रीय संगीत में प्रतिभासंपन्न कलाकार पं. रविशंकरजी (सितार), पं. झाकीर हुसेन (तबला), उ. तौफीक कुरेशी एवं पं. हरिहरन इन्होने 'आंतरराष्ट्रीय फ्युजन' में सहभाग लेकर भारत देश का नाम सम्पूर्ण विश्व में प्रसिध्द किया। इसे हम आधुनिक संगीत से ' वैश्विकीकरण' कह सकते है।

निष्कर्ष –

''भारतीय संगीत यह सर्व संगीत का मूलस्थान है''। ''इजिप्शियन संगीत का आधार भारतीय संगीत है''। जिस समय संगीत की निर्मिती हुई उसी समय से वह एक वैश्विक कला है, 'संगीत' कला मात्र 'स्वर व लय' के व्दारा ही सौंदर्य

CamScanner

की सृष्टी करती है। विश्व में सभी संगीत मे स्वर समान है केवल उनके नाम में अंतर है एवं उन्हे प्रकट करने की पध्दती अलग–अलग है केवल उनके शैलीयों में अन्तर हैं। दो अलग–अलग प्रवाह का मिलन वैश्विकीकरण कह सकते है। रिमिक्स, फ्युजन, पाश्चिमात्य वाद्यो का भारतीय संगीत पर हो रहा प्रभाव यह उदाहरण वैश्विक प्रभाव के प्रभावशाली उदाहरण दिऐ गये है।

संदर्भ ग्रंथ सुची :–

ग्रंथ नाम	लेखक	प्रकाशक
१) आधुनिक राजकीय विचार प्रणाली	प्रा.डॉ.पी.डी. देवरे डॉ.डी.एस. निकुंभ	प्र.भां. पब्लीकेशन, जळगांव
२) आधुनिक जग	डॉ. धनंजय आचार्य	साईनाथ प्रकाशन, नागपूर
३) संगीत कला विहार २००६	डॉ. भोभा गुर्जर	अ भा गा म मुंबई
४) मानवी हक्क	प्रा. व्हि.बी. पाटील	के सागर पब्लिकेशन
५) भारतीय संगीत कलाकार	डॉ. निझी माथूर	पब्लिकेशन, जयपूर
६) संगीत दर्शन	विजय लक्ष्मी जैन	राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपूर

ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com

CamScanner

Shree Durgamata Bahu-Uddeshiya ...

Smt. Savitabai Uttamrao Deshmukh Mahavidyalay Digras,
Dist. Yavatmal

Interdisciplinary National Conference on

Emerging Trends in Higher Education, Social Science and Humanities

Certificate

This is to certify that Prof. Dr. /Mr. /Ms. चंद्रकिरण राम घाटे

Of श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय, पुसद has actively participated in the Conference held on 11th March 2020 and has presented a research paper in the subject संगीत entitled संगीत इस ललीत कला पर वैश्वीकरण का प्रभाव during technical session of the conference.

Sau. Vaishali Sanjayrao Deshmukh
Secretary,
S.D.B.K.S.S. Chincholi No 2

Dr. Vijay M. Gawande
Off. Principal/Convener

CamScanner

Impact Factor – SJIF 6.293 ISSN-2349-638x

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

Smt. Savitabai Uttamrao Deshmukh Mahavidyalay, Digras

Organize

One Day Interdisciplinary National Level Conference

on

Emerging Trends in Higher education: Arts and Humanities

Chief Editor

Pramod P. Tandale

Editor

Dr. Dipak Ulemale

CamScanner

Impact Factor – SJIF 6.293 ISSN-2349-638x

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

Smt. Savitabai Uttamrao Deshmukh Mahavidyalay, Digras

Organize

One Day Interdisciplinary National Level Conference

on

Emerging Trends in Higher education: Arts and Humanities

Chief Editor

Pramod P. Tandale

Editor

Dr. Dipak Ulemale

CamScanner

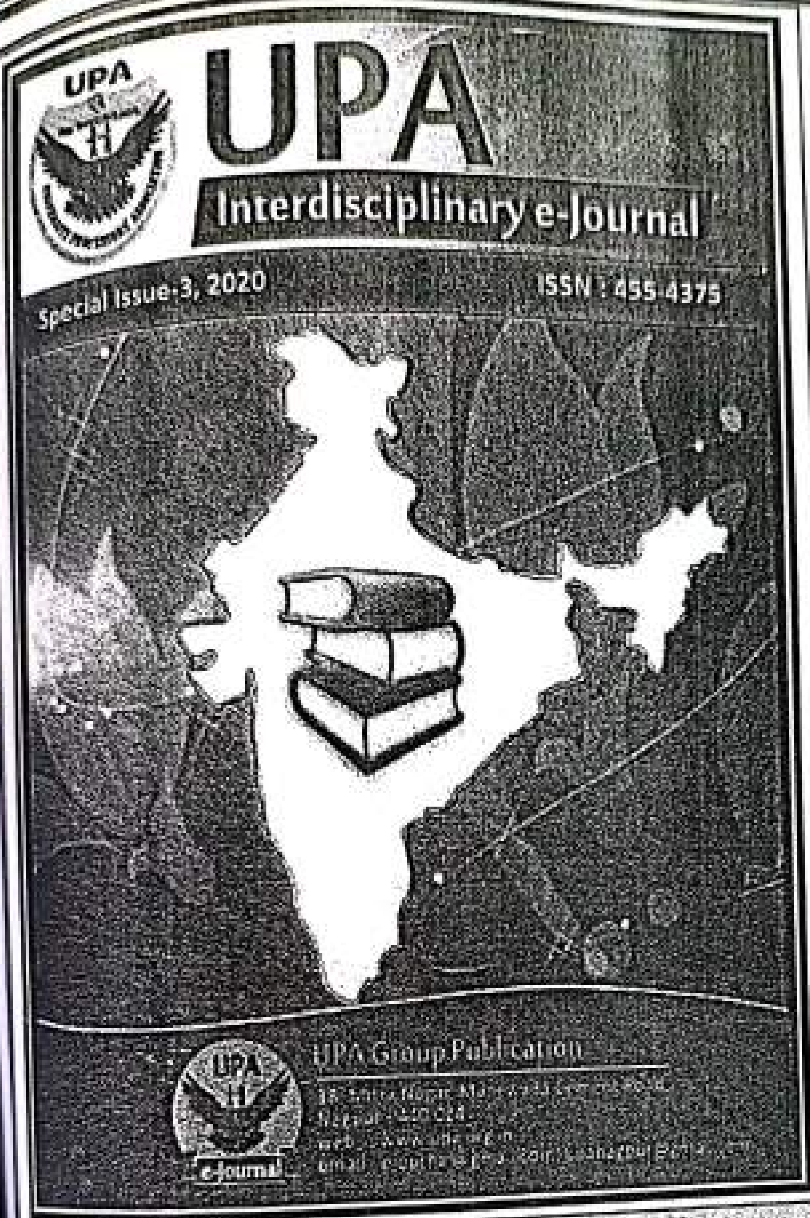

CHIEF EDITOR
Dr. Anil Dodewar

EDITORS
Prof. Akash Bele

EXECUTIVE EDITORS
Dr. Radhesham Choudhari
Prof. Naresh Mahajan
Prof. Suyog Mankar

PUBLISHED BY :
UPA Group Publication In Association with University Professors' Association. 38, Mitra Nagar, Manewada Cement Road, Nagpur-24.

CORPORATE OFFICE:
38, Mitra Nagar, Manewada Cement Road, Nagpur-24.

PUBLICATION :
The UPA Interdisciplinary e-journal is publish_d Bi-annually.

© All Rights Reserved.
The views expressed in this publication are purely personal judgments of the authors and do not reflect the views of Journal or the body under whose auspices the journal is Published.

SPECIAL ISSUE – III : JUNE - 2020

For downloading the Issue, Click the link given below
http://upa.org.in/ejournal_june_2020
Visit : www.upa.org.in

Share your valuable feedback at
upanagpur@gmail.com
upajournal@gmail.com

UPA National Peer-Reviewed Interdisciplinary e-Journal

Published By
UPA Group Publication
In Association With
Shivramji Moghe Arts, Commerce & Science College
Kelapur (Pandharkawada)
June - 2020

प्राचीन काळापासून वर्तमान कोविड १९ संक्रमण काळापर्यंत संगीत अध्ययन–अध्यापनात झालेली स्थित्यंतरे

प्रा.डॉ. चंद्रकिरण घाटे
असोसिएट प्रोफेसर और संगीत विभागाध्यक्ष
श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय,
पुसद
Email :crghate@gmail.com

प्रस्तावना : संगीत कला ही अतिप्राचीन कला आहे. या कलेचा परिणाम मानवी शरीर व मनावर होतो. या कलेचे आकर्षण मानवी मनावर परिणाम करून जाते. म्हणून संगीत म्हणजे आनंद, स्थिर आनंद, संगीत म्हणजे सौंदर्य, संगीत म्हणजे उर्जा, स्थिर उर्जा, म्हणून मौलिक घटकेचा आधार 'संगीत' आहे. म्हणून संगीतामध्ये अध्ययन–अध्यापनाला अतिशय महत्व आहे. संगीत ही मानवी जीवनातील सत्य आणि सौंदर्याची अनुभूति आहे.

वेदकाळापासूनच भारतीय संगीतामध्ये गुरूकुल–पध्दती अस्तित्वात होती. ऋग्वेद यजुर्वेद अथर्ववेद व सामवेद या चार वेदांपैकी सामवेद हा संगीत दृष्टया अतिशय महत्वाचा वेद आहे. उदात्त, अनुदात्त व स्वरीत यामध्ये ऋचांचे गायन होत असे व साथीला वीणा, बासरी, डमरू सारखी वाद्ये असत. या काळात नृत्यकलेचाही उल्लेख मिळतो. बौध्द काळ व जैन काळातही संगीताचा उल्लेख प्राप्त होतो. रामायणात लंकाधिपती रावण वीणावादक होता. तर महाभारतातील श्रीकृष्ण मुरलीधर, शिवाचे तांडव नृत्य व डमरू वादन, सरस्वतीचे वीणवादन, नारदाचे वीणावादन व अप्सरांचे नृत्य हे सर्व संगीताचेच दाखले आहेत.

प्राचीन काळ : 'संगीत' ही अतिप्रचीन कला आहे. या संगीत कलेच्या शिक्षणाच्या इतिहासाकडे दृष्टी टाकल्यास वैदिक काळातील संगीत शिक्षण व सामगायनाचा उल्लेख प्राप्त होतो. साम शिक्षणाची तीन रूपे १) पिता–पुत्र प्रशिक्षण, २) गुरू–शिष्य परंपरा, ३) गुरूकुलामधील प्रत्यक्ष शिक्षण. महाकाव्य रामायण व महाभारत काळातही गुरू–शिष्य प्रणाली होती. ६ व ७ व्या शतकात नालंदा विश्वविद्यालयात संगीत शिक्षणाची व्यवस्था होती. नंतरच्या काळात मंदिरामध्ये संगीत शिक्षणाची व्यवस्था होती याचे काही दाखले मिळतात.

1) १० व्या शतकात् विजापुर जिल्हयात सलोरगी च्या मंदिरातील एका कक्षात संगीत शिकविले जाई.

2) ११ व्या शतकात चिंगलीपूरक जिल्हयातील व्यंकटेश मंदिरामध्ये.

3) १४ व्या शतकात तिरौवर्गिपूर आणि मलकापूरक येथे विद्या मंदिरांची स्थापना झाली

मध्यकाळ : गुरूशिष्य–परंपरा संगीत शिक्षणाची सर्वात प्राचीन पध्दती मानली जाते. प्राचीन काळात जाती गायन होत असे याचा उल्लेख भरतमुनींच्या नाटयशाळात मिळतो. नंतरच्या काळात ६ मुख्य राग व ३६ रागिण्यांचा उल्लेख राग रागिणी पध्दतीच्या माध्यमातून प्राप्त होतो. अमीर खुस्रु, गोपालनायक, स्वामी हरिदास, नायक बैजू, तानसेन यांचा धृपद गायकीचा काळ येतो. यामध्ये स्वामी हरिदास, तानसेन नायक बैजू यांनी रचलेली अनेक पदे आजही उपलब्ध आहेत. धृपदाच्या चार वाणी म्हणजे गुरूशिष्य–परंपरा व धृपद गायन शैलीचा उल्लेख मिळतो. ही गुरुशिष्य–परंपरेची मध्यकाळातील बाब आहे. तानसेनचा काळ म्हणजे 'संगीताचे सुवर्णयुग' होय

धृपदानंतर ख्यालशैली अस्तित्वात आली व ख्यालाची घराणी अस्तित्वात आली. ग्वाल्हेर, आग्रा, जयपुर, किराणा, पतियाला व दिल्ली. सदारंग–अदारंग यांनी शेकडो ख्यालाची रचना केली. घराणे म्हणजे परंपरा व शैली होय. हे देखील अध्ययन–अध्यापनाचे उदाहरण होय.

आधुनिक काळ : आधुनिक काळात पं. विष्णू दिगंबर पलुसकर व पं.वि.ना. भातखंडे यांच्या अथक परिश्रमाने राजदरबारातील बंदिस्त संगीत लोकांमध्ये प्रचलित झाले. यांनी स्वरलिपीच्या निर्मितीतुन व तत्कालीन संगीतज्ञांचे ख्याल लिपीबध्द करून त्याने ग्रंथ प्रकाशित व प्रसारीत केले त्यामुळे आज अभिजात संगीत लोका–लोकांमध्ये पोहचले व शाळांमध्ये आणि विद्यापीठांमध्ये संगीत हा वैकल्पिक विषय म्हणून विद्यार्थ्यांना संगीत शिकण्याची संधी प्राप्त झाली.

स्वातंत्र्योत्तर काळात भारतातील विद्यापीठांमध्ये संगीत या विषयात डिग्री कोर्स केल्या जातो. आज अनेक विद्यापीठामध्ये संगीत शिकणा–यांची संख्या खूप वाढत आहे. अनेक विद्यार्थी बी.ए., एम.ए., हया पदव्या व पी.एच.डी. साठी शास्त्र व क्रियात्मक विषयात कार्य करीत आहेत व संशोधन करीत आहेत. पं. सुब्बालक्ष्मी, पं. रविशंकर, लता मंगेशकर, उ. खासाहेब बिस्मिल्ला खॉ या प्रतिष्ठीत संगीतकारांना भारतातील 'भारतरत्न' हा सर्वोच्च पुरस्कार भारत सरकारने प्रदान केला आहे. संगीतक्षेत्रासाठी ही महत्वपूर्ण बाब आहे. गुरू सानिध्यात सीना–बसीना तालीम घेउन व रियाज करून हे सर्व कलावंत नावारूपाला आले आहेत.

नवीन संगीत शैक्षणिक पध्दतीचा जणू उगमच झाला. यात्रा संगीतामधली नव शिक्षण पध्दती संशोधल्यास वावगे ठरणार नाही.

आजची नवशिक्षण पध्दती : सर्व लोक घरामध्ये बसले असतांना एका नवीन पध्दतीचा अवलंब शिक्षक व प्राध्यापकांनी करून आपले कार्य केले. Whatapp, Facebook, You tube, Video Recording & Display, Google Class room, Online class room, Vartual class room तसेच Zoom app, Webex, Go on the meeting, Google meet अशा अनेक Apps चा उपयोग करून विद्यार्थ्यांना शिकविता येते, Online education video confarancing ही नवीन संकल्पना या नवीन प्रवाहात उलगडली व शिक्षकांनी या व्यवस्थेचा उपयोग केला. या नवीन संकल्पना संगीत शिक्षणात उदयास आली.

अनेक अध्ययन–अध्यापनाच्या संधी विज्ञानाने उपलब्ध करून दिल्या. याचा प्रत्यक्ष अनुभव या कोविड १९ च्या संक्रमण काळात झाला आणि त्याचा उपयोग करायला सुरूवात झाली. या काळात Zoom App व्दारे अनेक मीटींग्ज, अनेक परफॉर्मन्स लोकांपर्यंत पोहचविले. अध्ययन–अध्यापनात याचा प्रयोग करण्यात आला. अनेक E-seminar, E-confernces, State level, National level and International level वर आयोजित करण्यात आले. विनामुल्य तत्वावर त्याचा उपयोग सर्वांना प्राप्त झाला.

शिक्षण किंवा कार्यक्रम चार भिंतीच्या आत न राहता ही संकल्पना आता विस्तीर्ण झाली आहे. एकाच कार्यक्रमाला शेकडो व हजारो लोक किंवा एकच व्याख्यान हजारो लोक फेसबुक या लिंकव्दारे श्रवण करू शकतात व पाहू देखील शकतात. यात खर्च कमी व उपयुक्तता जास्त आहे. यामुळे या काळात खूप Webinar, E-Work-Shop, E-conference चे आयोजन व Online courses चे विनामुल्य आयोजन संगीताचा विद्यार्थ्यांना व शिक्षकांना व विचारवंतांना internet च्या सहकार्याने व Online च्या रूपात चर्चेला संधी मिळाली. अनेक क्लिष्ट विषयांवर व्याख्याने, सप्रयोग व्याख्यान, सादरीकरण विव्दानांशी प्रश्नोत्तरी जणू प्रत्यक्षत्वाचा आभासच होऊ लागला. संगीत शिक्षकांचा तुटलेला बंध पुनश्च जोडला गेला.

ह्या संगीत कलेच्या 'अध्यायन–अध्यापनाची' नवीन प्रणालीस आरंभ झाली असे म्हणावे लागेल. ह्याला नवीन शिक्षण पध्दती नवीन दिशा व नवीन प्रवाह असेच म्हणावे लागेल. माहिती व तंत्रज्ञान युक्त नवीन शिक्षण प्रणालीचे सर्वतोपरी स्वागत होत आहे व ती निश्चितपणे स्वीकारल्या ही जात आहे.

निष्कर्ष : वैदिक काळात सामवेदाच्या समागायनाने तत्कालीन उदात्त, अनुदात्त व स्वरीत या तीन स्वरापासून सात स्वरापर्यंत म्हणजे सप्तकापर्यंत संगीत विकसित झाले व तत्कालीन वाद्यांचा विकास झाला. गुरूकुलाची बीजे रोवली गेली व संगीत मंदिरामध्ये विकसित होऊ लागले.

मध्यकाळात 'धृपद' आपल्या चर्मोत्कर्षावर होते. गुनिजनांच्या अथक परिश्रमांनी प्रतिभा संपन्न विव्दान कलावंतांनी संगीतकलेचा दर्जा वाढवून तिला सर्वोच्च स्थान प्राप्त करून दिले व संगीत कला मंदिरातून राजाश्रयाकडे वळली व गुरू–शिष्य परंपरा मात्र अबाधीत राहिली.

आधुनिक काळात औद्योगिकरण, शहरीकरण, जागतिकीकरण यांमुळे सर्व क्षेत्रात परिवर्तन होउ लागले. वैज्ञानिक प्रगती झाली. ख्यालाची असलेली घराणी लोप पाउ लागली. विद्यालयीन शिक्षण प्रणाली व्दारे सामुहिक शिक्षणाकडे समाजाचा व संगीताचा कल वाढू लागला. कोविड १९ एक संकट न मानता या संक्रमण काळात एक नवीन दिशा, नवीन प्रवाह व संगीत हे विज्ञानाच्या पाठीवर स्वार होउन पुन्हा एका वेगळया प्रवासात विकसित होउ लागले व विकासाचा मार्ग अवलंबु लागले. याला पुन्हा एक नवयुग म्हटल्यास वावगे ठरणार नाही.

प्रगतीचे टप्पे कितीही विकसित असले तरी वरील सर्व प्रगतीस आभासी म्हणावे लागेल कारण शेवटी वास्तविक सत्य म्हणजे सीना–बसीना तालीमच होय. प्रत्यक्ष रागविस्तार स्वरमाध्यमाने करून नादसौंद–र्यांचा साक्षात्कार साधणे हे संगीत साधकच करू शकतो.

संदर्भ ग्रंथ सुची :

1) संगीत शोध निबंध – डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग
2) संगीत मॅन्युवल – डॉ. मृत्यंजय शर्मा
3) संगीत – संगीत कार्यालय हाथरस
4) संगीत शिक्षणाच्या विविध पध्दती – पं.ना.द.कशाळकर
5) आस्वादक संगीत समिक्षा – श्रीरंग संगोराम
6) भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणो का प्रयोग – अनिता गौतम कनिष्क पब्लिकेशर्स नई दिल्ली.

PARISHODH JOURNAL
UGC-CARE List - Group I
An ISO : 7021 - 2008 Certified Journal
ISSN NO: 2347-6648 / Web : http://www.parishodhpu.com// e-mail : submitparishodh@gmail.com

2019-20

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the paper entitled

"ANALYTICAL STUDY OF REPRESENTATION AND POWERSHARING OF SCHEDULED CASTES IN STATE LEGISLATIVEASSEMBLY IN VIDARBHA REGION OF MAHARASHTRA IN INDIA(SPECIAL REFERENCE TO STATE LEGISLATIVE ASSEMBLY ELECTIONS 2009, 2014, 2019)"

Authored by

DR. ASEEM KAPRE, ASSOCIATE PROFESSOR

From

WATSALABAI NAIK WOMEN'S COLLEGE, PUSAD (INDIA)

Has been published in

PARISHODH JOURNAL, VOLUME IX, ISSUE III, MARCH- 2020

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

6.3
IMPACT FACTOR

Siva N. Ramachandra
Editor-In-Chief
PARISHODH JOURNAL
http://www.parishodhpu.com

ISO
International Organization for Standardization
7021-2008

CamScanner

IJRSSIS, Spl Issue (III), July-2020 : 264-269
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
OPEN ACCESS
e-ISSN 2347 – 8268 & 2347-8209 (P)
Original Article
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCE AND INFORMATION STUDIES
© VMS RESEARCH FOUNDATION www.ijrssis.in

"संगीत या प्रदर्श्य कलेच्या अध्ययन व अध्यापनात माहिती व तंत्रज्ञानाची (ICT) उपयोगिता"

C. Ghate
Smt. Vatsalabai Naik Mahila Mahavidyalaya, Pusad.
*Corresponding Author: crghate@gmail.com

सारांश :

'संगीत' ही अतिप्राचीन कला आहे. या संगीत कलेच्या शिक्षणाच्या इतिहासाकडे एक दृष्टी टाकल्यास वैदिक काळातील संगीत शिक्षण व सामगायनाचा उल्लेख प्राप्त होतो. 6 व 7 व्या शतकात नालंदा विश्वविद्यालयात संगीत शिक्षणाची व्यवस्था होती. नंतरच्या काळात मंदिरांमध्ये संगीत शिक्षणाची व्यवस्था होती याचे काही दाखले मिळतात. गुरूशिष्य–परंपरा संगीत शिक्षणाची सर्वात प्राचीन पध्दती मानली जाते.

प्रस्तावना :

आज 21 वे शतक म्हणजे विज्ञानाने प्रगत असे डिजीटल आणि कॉम्प्युटर युग आहे. या वैज्ञानिक प्रगतीने शिक्षणामध्ये क्रांती केली आहे. आज संगीत कलेच्या प्रगतीकडे पाहिल्यास त्यामध्ये विज्ञानाशिवाय हे सर्व अशक्य वाटायला लागते. सहज प्रवृत्तीने सर्व विव्दान शिक्षक शोधकर्ता विद्यार्थी कलाकार विज्ञानाशी कुठे न कुठे ICT च्या माध्यमातून जोडल्या गेले आहेत. जसे ध्वनिक्षेपण, रेडिओ, टेलिव्हिजन, कॅसेट, सी. डी., डि.व्ही.डी., पेन ड्राईव्ह, मोबाईल इत्यादी या साधनांपासून दूर रहाणे केवळ अशक्य झाले आहे. ही ICT संसाधने जीवनाचा एक अभिन्न अंग होउन बसली आहेत. त्याशिवाय जीवन जगणे केवळ आणि केवळ अशक्य झालेले आहे. इंटरनेट हे जीवनाचा आवश्यक घटक म्हणून ऑक्सिजन प्रमाणे कार्य करीत आहे. हवेतील ऑक्सिजन व इंटरनेट हया दोन्ही गोष्टी मानवासाठी अनिवार्य झाले आहे. यापैकी एक गोष्ट तर उपलब्ध नसेल तर मानवाचे जगणे धोक्यात आले आहे. इतक्या पर्यंत माहिती व तंत्रज्ञान विकसित व अनिवार्य झाले आहे.

संगीत व वैज्ञानिक तंत्रज्ञान –

संगीत ही एक अतिप्राचीन व दृष्य कला आहे. प्राचीन काळापासूनच संगीत कलेच्या विकासाकरिता अनेकानेक विव्दानांनी व कलावंतांनी प्रयत्नांची शर्त केली आहे. त्यातील स्वर व तालाच्या माध्यमांनी नादब्रम्हाच्या अनुभुतीचे प्रयत्न साकर झाल्याचे व मोक्ष प्राप्ती पर्यंतच्या ध्येयसिध्दी करण्याकरिता ही कला सुकर असल्याची उदाहरणे प्राचीन ग्रंथात वाचायला मिळतात. प्राचीन काळात संगीत हे अध्यात्माशी जुळलेले होते.तर आधुनिक काळात संगीत हे विज्ञानाशी जुळलेले आहे. संगीताच्या क्रियात्मकतेसोबत शास्त्र पक्षालाही आधुनिक काळात समसमान महत्व प्राप्त झालेले आहे. संगीत कला ही केवळ मनोरंजनासाठी सीमित न राहता ती एक शास्त्र स्वरूपात पुर्ण विकसित झालेली आहे. एक कला व शास्त्र ही संगीत कलेची आकृती आज सर्वसामान्यांनाही मान्यता

I J R S S I S, Spl Issue (III), July-2020 : 264-269
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
e-ISSN 2347 – 8268 & 2347-8209 (P)
Original Article

प्राप्त झाली आहे. 'वैज्ञानिक प्रगतीच्या व संगीत' यामुळे 'संगीत' एक अभ्यासविषय म्हणून त्याला अमृतरूप प्राप्त झाले आहे. या अभ्यासाकरीता अनेक विद्यार्थी, संशोधक, शिक्षक, अध्यापक कार्यरत आहेत.

'माहिती व तंत्रज्ञान' या विज्ञानाच्या नवीन शोधाने आज सर्वच विषयात कांती केली आहे. त्यात 'संगीत' कला ही कुठेही मागे नाही. इतर विषयांसोबत संगीत कला व अभ्यासविषय आपले वर्चस्व प्रस्थापित करित आहे. जसे कॉम्प्युटर, डिजीटलाईजेशन, इंटरनेट च्या माध्यमाने जनसामान्यामध्ये संचार विद्युतच्या सहाय्याने इलेक्ट्रॉनिक्स नवीन वाद्ययंत्रे यांचा सर्वदूर प्रयोग व वापर याचे प्रमाण वाढत आहे. अशाप्रकारे ऑडिओ, व्हिडीओ, डिजीटल साधनांचा उपयोग कलावंत, शिक्षक, अभ्यासक, संशोधक व विद्यार्थी आपल्या दैनंदिन जीवनात करित आहेत. संगीताच्या प्रगतीसाठी सदैव कार्य सिध्दीसाठी झटत आहेत.

माहिती व तंत्रज्ञानात उपयुक्त उपकरणे व संसाधने –

'माहिती व तंत्रज्ञान' या तंत्राने आजच्या काळात सर्वदूर आपले पाय घट्ट रोवले आहेत, असे एकही क्षेत्र नाही, जिथे माहिती व तंत्रज्ञानाने शिरकाव केला नाही. आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, शेती, कला, मनोरंजन, व्यापार, गणित, भाषा, दैनंदिन मानवी व्यवहार या सर्वच क्षेत्रात माहिती व तंत्रज्ञानाने शिरकाव केलेला आहे. संगीत क्षेत्रातही माहिती व तंत्रज्ञानाने आपली उपयुक्तता सिध्द केली आहे या तंत्रज्ञानासाठी काही वैज्ञानिक उपकरणांची व साहित्यांची आवश्यकता आहे जसे –

1. स्मार्ट व डिजिटल टेलिव्हिजन सेट – याला कॅम्प्युटर कनेक्ट करून येणारे चित्र पाहु शकतो.
2. अत्याधुनिक व लेटेस्ट कॉन्फिग्रेषन कॉम्प्युटर अथवा लॅपटॉप – कंम्प्युटर प्रमाणेच सहज व सुलभ हाताळल्या जाणारे वायरलेस कंम्प्युटर म्हणजे लॅपटॉप होय.
3. लेटेस्ट जनरेशन स्मार्ट फोन – या काळातला स्मार्ट फोन म्हणजे Palm Computer होय. ज्यामुळे कंम्प्युटरचे सर्व काम करणे सोपे जाते.
4. माहिती जतन करून ठेवण्यासाठी खालील साधनांचा प्रयोग केला जातो –

अ) एक्टरर्नल हार्ड डिक्स – मेमरी साठविण्याकरिता दोन प्रकरच्या हार्ड डिक्स उपयोगी आहेत. 1) इंटरनल हार्ड डिक्स जी सिपीओ मध्ये आधिच फिट केली जाते., 2) एक्टर्नल हार्ड डिक्स ही बाहेरून सिपीयु ला जोडली जाते. आज जवळ जवळ 2 टी.पी. पर्यंत ची माहिती व्ही.डी.ओ. व टेक्स स्वरूपात साठविला जातो.

ब) पेन ड्राईव्ह – एक ते दोन इंच लांब असलेले साधन आहे. यामध्ये जवळ–जवळ 120 जि.बी. पर्यंतचा डाटा साठविला जातो.

क) मोबाईल चीप – मोबाईल मध्ये डाटा साठविण्यासाठी अतिशय लहान आकाराची मोबाईल चिप असते ज्यामध्ये 64 जी.बी. पर्यंत डाटा साठविला जातो.

ड) डि.व्ही.डी. – यामध्ये 4 जी.बी. पर्यंत चा डाटा साठवुन ठेवला जातो.

IJRSSIS, Spl Issue (III), July-2020 : 264-269
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
e-ISSN 2347 – 8268 & 2347-8209 (P)
Original Article

3) आज शिक्षण क्षेत्रात केंद्रीय स्तरावर ऑनलाईन प्रशिक्षण दिल्या जाते. उदा. www.swayam.gov.in आणि MOOC's.

4) आजच्या शिक्षण प्रणालीमध्ये नविन आणि समर्थ Modules सपरिणाम कार्य करीत आहे.

5) Blended learning या ICT पध्दतीने अनेक विषयांचे प्रशिक्षण विद्यार्थ्यांना परिणामकारक पध्दतीने दिले जाते.

6) Online Class room, Virtual Class room, Google Class room या ऑनलाईन पध्दतीचा वापर आज संपुर्ण शाळा, कॉलेज मध्ये अनिवार्य करण्यात आला आहे. या पध्दतीमध्ये संपुर्ण ICT चा प्रयोग केला जातो. हे शिक्षण अधिक परिणामकारक आहे. असे दाखले दिले जातात.

7) Conferancing Tools च्या माध्यमाने ऑनलाईन क्लासेस घेवुन अनेक विद्यार्थ्यांना लाभ प्राप्त होतो.

8) Learning Management System (L.M.S.) या सॉफ्टवेअर च्या माध्यमाने वेबबेस तंत्राचा उपयोग करून ऑनलाईन प्रोसेस चालविता येते. यामध्ये ऑडीओ, व्हीडीओ, प्रश्नावली, ऑनलाईन प्रश्नावली बँक, व्हीडीओ बेस क्वीज आयोजित करता येते.

9) या पध्दतीत फाईल व्यवस्थापनासाठी Drop box, e-file cabinet या ई सॉफ्टवेअर वापर करता येतो.

10) राष्ट्रीय स्तरावर NCERT, IGNOU, AICTE हे ऑनलाईन कोर्सेस चालविले जातात. याचा लाभ शेकडो विद्यार्थी घेतात.

11) माहिती तंत्रज्ञानामुळे e-Conference, e-Seminar, e-Workshop यांचे आयोजन राज्यस्तरीय, राष्ट्रीयस्तरावर, अंतरराष्ट्रीयस्तरावर सहजरितीने करता येते.

संगीत क्षेत्रात ईलेक्ट्रॉनिक्स वाद्यांची निर्मिती व उपयोगिता –

आजच्या वैज्ञानिक काळात संगीतात इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्यांची निर्मीती झाली. जसे इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा, रागिनी रॅडल, तालमाला सूरतमाला, (लहरायंत्र) स्वरमंडल, तालयंत्र, स्वरयंत्र, अशा अनेक वादयांची वैज्ञानिक साहाय्याने निर्मिती झाली. मायक्रोफोन, इयरफोन, पी.ए. साउंड सिस्टीम, हायरेंज स्पिकर्स डी.जे. साउंड सिस्टीम, डॉलबी साउंड सिस्टीम, इको साउंड सिस्टीम, साउंड मिक्सर, मोने, स्टिरिओ या वैज्ञानिक प्रगतीचा परिणाम सर्वात जास्त संगीतावर झाला. यामुळे संगीत समाजात लोकाभिमुख होउ लागले.

माहिती व तंत्रज्ञानाचे फायदे व तोटे –

फायदे –

1. विद्यार्थ्याला आपल्या घरी बसुनच अध्ययन अध्यापनाची सोय उपलब्ध होते.
2. दिन–प्रतिदिन आपल्या इच्छेप्रमाणे व वेळेप्रमाणे शिक्षकांचे मार्गदर्शन प्राप्त होते.
3. या संपुर्ण पध्दतीमध्ये वेळेची खुप बचत होते

CamScanner

IJRSSIS, Spl Issue (III), July-2020 : 264-269
A Double-Blind Peer Reviewed Journal
e-ISSN 2347 – 8268 & 2347-8209 (P)
Original Article

class room, Virtual class room तसेच Zoom app, Webex, Go on the meeting, Google meet अशा अनेक Apps चा उपयोग करून विद्यार्थ्यांना शिकविता येते. Online education video confarancing ही नवीन संकल्पना या नवीन प्रवाहात उलगडली व शिक्षकांनी या व्यवस्थेचा उपयोग केला. या नवीन संकल्पना संगीत शिक्षणात उदयास आली.

निष्कर्ष :

आधुनिक काळात माहिती तंत्रज्ञान हे नविन तंत्र आल्यामुळे परंपरागत शिक्षण पध्दती बरोबरच या तंत्राच्या माध्यमाने अध्ययन अध्यापन होण्यास मदत होते. संगीत ही प्रदर्श्य कला असल्याने शेवटी गुरू सन्मुख सिना–ब–सिना तालिम एक कलावंत घडण्याकरिता अनिवार्य आहे. म्हणुन एक सहकारी म्हणुन माहिती तंत्रज्ञान उपयोगी आहे. परंतु प्रत्यक्षदर्शी गुरू महात्म्यालाच महत्व आहे. गुरू सन्मुख सिना–ब–सिना तालिम एक कलावंत घडण्याकरिता अनिवार्य आहे.

संदर्भ ग्रंथ सुची :

शास्त्रीय संगीत शिक्षा समस्याएं एवं समाधन – लेखक डॉ. अलकनंदा पलनिटकर.

प्रकाशक – अरूण पब्लीसिंग हाउस, नई दिल्ली

संगीत शिक्षण प्रणाली – लेखक शोभना शाह

प्रकाशक – विनोद पुस्तक मंदिर, आग्रा

भौतिकशास्त्र ध्वनी – लेखक डॉ. म.ग. केळकर

CamScanner

Nutan Vidarbha Shikshan Mandal's
Mahila Mahavidyalaya, Amravati,
Dist- Amravati, MS, India

Chintamani Shikshan Prasarak Mandal, Ballarpur's
Chintamani Mahavidyalaya, Ghugus, Dist- Chandrapur

Shri Samarth Shikshan Sanstha, Ahiri's
Chintamani College of Arts & Science, Gondpipri, Dist- Chandrapur

Chintamani Bahuddeshiya Shikshan Mandal Ballarpur's
Chintamani College of Commerce,
Pombhurna, Dist- Chandrapur, MS

Chintamani Shikshan Prasarak Mandal, Ballarpur's
Chintamani Mahavidyalaya, Pombhurna, Dist-Chandrapur

Chintamani Education Society, Ballarpur's
Chintamani College of Science, Pombhurna, Dist- Chandrapur

Two days Interdisciplinary International e-Conference on

Impact of COVID-19 on Various Areas of Global Economy, Science & Humanities

24 & 25 June, 2020

Certificate of Paper Publication & Presentation

This is to certify that Prof/Dr./Mr./Miss **Dr. Chandrakiran Ram Ghate, Smt. Vatsalabai Naik Mahila Mahavidyalaya Pusad** has submitted and virtually presented his/her research paper on **'संगीत या प्रदर्श्य कलेच्या अध्ययन व अध्यापनात (ICT) महिती व तंत्रज्ञानाची उपयोगीता.'** in two days Interdisciplinary International e-Conference on "Impact of COVID-19 on Various Areas of Global Economy, Science & Humanities" collaboratively organised by us on 24 & 25 June, 2020. His/her research paper has been published in international peer reviewed open access journal named 'International Journal of Researches in Social Science and Information Studies' in special issue (III) July-2020 with e-ISSN 2347-8268 & 2347-8209 (P) which is available on www.ijrssis.in.

Date: 27/06/2020

Mr. O. A. Sonone Convener, Asst. Prof. & Coordinator IQAC, Chintamani College of Com., Pombhurna, Dist-Chandrapur, MS, India	Dr. Sudhir Hunge Principal, Chintamani College of Science, Pombhurna, Dist-Chandrapur	Dr. C. S. Kumbhare Principal, Chintamani Mahavidyalaya, Ghugus, Dist Chandrapur	Dr. N. H. Pathan Principal, Chintamani Mahavidyalaya, Pombhurna, Dist Chandrapur	Dr. C. A. Nikhade Principal, Chintamani College of Arts and Science, Gondpipri	Dr. T. F. Gulhane Principal, Chintamani College of Commerce, Pombhurna, Chandrapur	Dr. Sushma S. Deshmukh Principal, Mahila Mahavidyalaya, Amravati, Dist Amravati, MS, India	Dr. Ishwar S. Mohurley Registrar, Gondwana University, Gadchiroli, Dist Gadchiroli, MS, India

(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

April-2021

SPECIAL ISSUE CCXCIII (293)

Dhrupad : It's Various Aspects, Style and Development

धृपद शैली : विविध आयाम तथा क्रमिक विकास

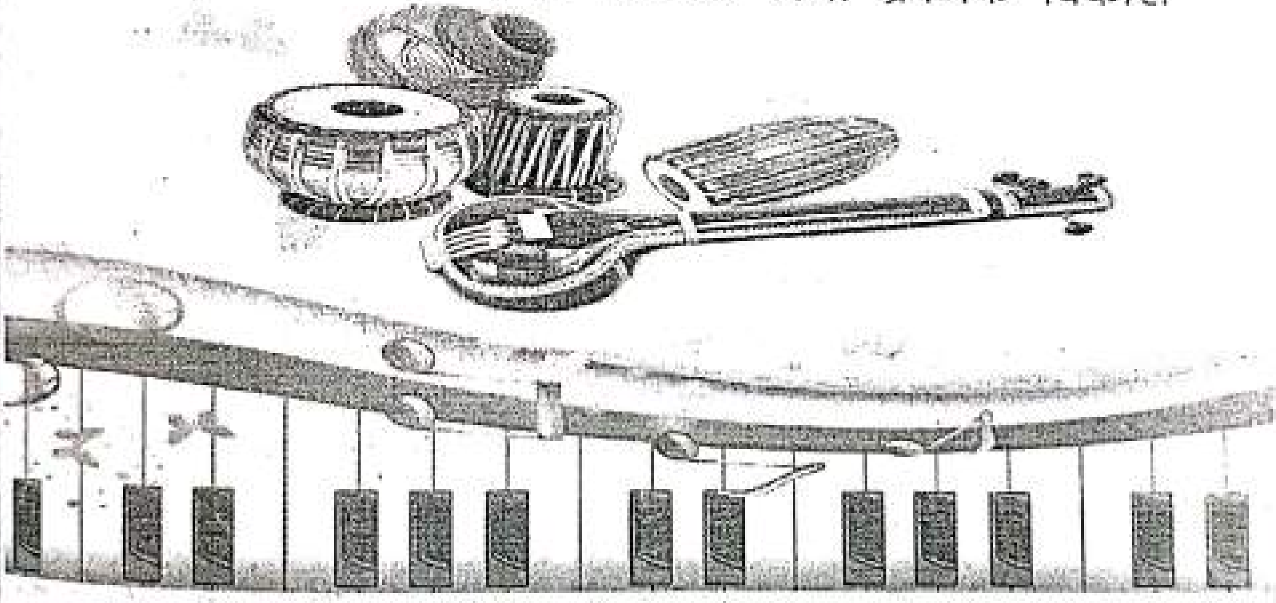

Prof. Virag S. Gawande

Chief Editor & Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Dr Sarita Sanjiv Ingale

Editor
Head, Department of Music
Late Chhaganlal Muljibhai Kadhi kala Mahavidyalaya,
Achalpur Camp .444805
Dist.Amravati.

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

Aadhar International Publication

CamScanner

Impact Factor – 7.675

ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

April -2021

ISSUE No- 293 (CCXCIII)

Dhrupad : It's Various Aspects, Style And Development

धृपद शैली : विविध आयाम तथा क्रमिक विकास

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor :
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Dr Sarita Sanjiv Ingale
Editor
Head, Department of Music
Late Chhaganlal Muljibhai Kadhi Kala Mahavidyalaya,Achalpur camp .444805
Tq.Achalpur .Dist.Amravati.

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com
© All rights reserved with the authors & publisher

'Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - (SJIF) -7.675, Issue NO, 293 (CCXCIII)
ISSN : 2278-9308
April, 2021

Shri Samarth Institute of Education,
Achalpur City's
&
affiliated to Sant Gadgebaba Amravati
University, Amravati

LATE C.M. KADHI KALA MAHAVIDYALAYA

Achalpur Camp Paratwada Dist. Amravati

through its

Department of Music

- organizes -

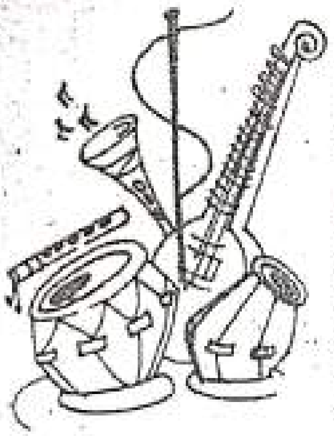

Two Days National Music E-Conference

on

Dhrupad :
It's various aspects, style
and development.

on : 22nd & 23rd March 2021
on Zoom app

- Organizers -

Dr Kashinath Barhate
The Principal,
Late C.M. Kadhi Kala Mahavidyalaya, Achalpur Camp

Co-ordinator
Dr Sarita Ingale
Head, Department of Music

21	वर्तमान संगीत शिक्षा में ध्रुपद गायन शैली के प्रचार एवं प्रसार की आवश्यकता प्रा. राहुल सोनवणे	79
22	वर्तमान संगीत शिक्षा में ध्रुपद गायन शैली के प्रचार–प्रसार की आवश्यकता डॉ. श्रद्धा चोपड़ा	81
23	ध्रुपद गायन कि परंपरा और घरानियाँ श्री.भागवत लहुबुवा ढोले / डॉ. अंकुश गिरी	84
24	ध्रुपद की उत्पत्ति एवं विकास डॉ. वृशाली र. देशमुख	87
25	ख्यालगायन शैली उत्पत्ती और विकास प्रा.मीनाक्षी बसवंत	90
26	मध्यकालीन संगीत के इतिहास में ध्रुपद शैली का विकास किशोरचंद राठौड़	92
27	ख्याल गायन और उसका विकास प्रा.डॉ.वनिता तुकारामजी भोपत(केतकर)	97
28	"ध्रुपद की उत्पत्ती एवं विकास" प्रा. नेत्रा मानकर (सोलव)	100
29	भारतिय शास्त्रीय संगीत मे ध्रुपद गायक एवं वाग्येयकारोंका योगदान सौ .संगीता पवार/डॉ. अंकुश गिरी	103
30	भारतीय संगीतमें ध्रुपद एवं उसका विकास प्रो.डॉ.राहुल के.एकबोटे / शुभम नरेश उदावंत	106
31	ध्रुपद एक समृद्ध गायन शैली डॉ.सुरेखा मुरलीधर जोशी (रत्नपारखी)	108
32	ध्रुपद–धमार गायन शैली प्रा.डॉ.राहुल काशिनाथराव एकबोटे/ आशिष सुरेश कैथवास	111
33	ध्रुपद शैली – स्वरूप एवं विशेषताएं प्रा.सोनाली आसरकर (शिलेदार)	113
34	ध्रुपद, ख्याल एवं ठुमरी : एक अनुबन्ध डॉ.प्रसाद शं. मडावी	116
35	ध्रुपद की उत्पत्ती एवं विकास डॉ. योगिनी भास्करराव सोनटक्के	118
36	ध्रुपद की उत्पत्ती एवं विकास प्रा.डॉ.सारिका विवेक श्रावणे	122
37	ध्रुपद की उत्पत्ती एवं विकास प्रा.डॉ.जयश्री विश्राम कुळकर्णी	126
38	वर्तमान संगीत शिक्षा में ध्रुपद गायन शैली के प्रचार एवं प्रसार की आवश्यकता डॉ. सरिता इंगळे	128
39	भारतीय संगीताच्या इतिहासातील स्वर्णगान–ध्रुपद – एक लेखाजोखा प्रा.डॉ. चंद्रकिरण घाटे	132
40	भारतीय शास्त्रीय संगीतात ध्रुपद गायक आणि वाग्गेयकार यांचे योगदान प्रा.डॉ.साधना हरणे (मोहोड)	137

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - (SJIF) -7.675, Issue NO, 293 (CCXCIII)
ISSN : 2278-9308
April, 2021

"भारतीय संगीताचे इतिहासातील स्वर्णगान-धृपद" - एक लेखाजोगा

प्रा.डॉ. चंद्रकिरण घाटे
असोसिएट प्रोफेसर और संगीत विभागाध्यक्ष श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय, पुसद
मो.नं. 8766774414 Email ID – crghate@gmail.com

प्रस्तावना :-

प्राचिन काळात शास्त्रीय संगीतालाच 'गांधर्व संगीत परंपरा' किंवा 'गांधर्व विद्या' म्हणत असत. त्याचे दोन प्रकार म्हणजेच 'मार्ग' आणि देशी संगीत 'व्यक्त' आणि 'अव्यक्त' हे दोन ध्वनीचे प्रकार होत. दुर्व्यक्त ध्वनीचे दोन प्रकार म्हणजे निबध्द आणि अनिबध्द आलाप निबध्दालाच 'मार्ग' म्हणतात. संगीताच्या अनेक ऋषिंनी संगीत शास्त्राची रचना केली आहे. पं. शारंगदेव, नारद, भरत, मतंग, दत्तिल, नंदिकेश्वर, नान्यदेव, सिंहभूपाल, सोमेश्वर, कालिनाथ, अहोबल, दामोदर, श्रनिवास, हृदयनारायण देव, लोचन, भावभट्ट, राममाल्य, सोमनाथ, व्यंकटभरवी, महाराणा कुंभा इ.

"गीतं, वाद्यं, नृत्यं, च त्रयं, संगीत मुच्यते"

अशा प्रकारे पं. शारंगदेवानी संगीताची व्याख्या केली आहे. कंठसंगीताला सम्राट मानले गेले आहे. सहा ऋतुसाठी सहा रागांची निर्मिती केली आहे. त्यावेळी या सहा रागांमध्ये ऋतुमानाप्रमाणे ईश्वराचे स्तुतिगान करित असत ज्याचे वर्णन शास्त्रामध्ये 'धृवागीत' या नावाने केले आहे. धृवागीतानंतर प्रबंध गायनं अस्तित्वात आले. 'प्रबंध' म्हणजे 'प्रकर्षण बन्धतात प्रबंधाच्या सहा अंगांचा उल्लेख मिळतो. स्वर, विरूद,पद, पाट, तैनक, ताल इ. निबध्द संगीतात 'धृवपद' गान महत्वाचे ठरले.

चौदाव्या शतकात ग्वाल्हेरचे राजा मानसिंह तोमर यांनी धृपद गायकी अविष्कृत केली. ग्वाल्हेर घराण्याची परंपरा सुरू झाली त्यावेळी धृपद गायकांना कलावंत म्हणत असत. धृपद गायकांचे 4 भेद त्यांच्या वाणीनुसार करू लागले.– 1) गोबरहार 2) खंडहार 3) डागूर 4) नौहार आज इतर वाणी लुप्त झाल्यासारख्या आहेत. परंतु डागूर वाणी आज प्रचलीत आहे. धृपद गायनांमध्ये रुपांतर आणि नामांतरावरोबरच प्रबंधाची अंगे आणि धातू आजही विद्यमान आहेत. आज प्राप्त असणा–या धृपदांमध्ये धार्मिक पर्व, राजदरबार, सामाजिक रितीरियाज, भक्तिचे विविध पंथ, वैदिक सिध्दांत या हजारो गत वर्षांच्या अक्षुण्य परंपरेमुळे भारतीय संस्कृतीचे स्थान आज जगात सर्वश्रेष्ठ आहे. यात धृवपदाचा 'महत्वाचा' वाटा आहे.

धृपद शैलीला आश्रय देऊन तेवत ठेवणारे इतिहासातील काही व्यक्तित्व –

धृपद या सर्वश्रेष्ठ दानाला खालील शासक व प्रशासकांनी संजीवनी दिली. ज्यामुळे धृपद गायकी प्रसिध्दीच्या चर्मोत्कर्षावर जाऊन पोहचली. विक्रमाजित, मानसिंह जोमर, राजा फिरजशाह, बहादूरशाह गुजराती, दरिया खाँ, हुमायूं, सम्राट, अकबर, दौलत खाँ, मोहम्मद आदिलशाह, बाज बहाददूर, राजा रामचंद्र बघेला, बहिरम खाँ, खानखाना, राजा वीरभद्र, जमी जहांगीर, इब्राहिम अदिलशाह, मारनशाह शाहजहाँ, पहाडसिंह, राजा अनिरूध्द गौड, मुरादी खाँ, शुजा, किरन सिंह, गैरत खाँ, शाहजादा आलम, बेदारबख्न, बहाददूर शाह जफर, जहाँदार शाह, महंमदशाह (रंगीले), आमीर खाँ, कमरूद्दीन खाँ, अहमदशाह, माधोसिंह, आलमगीर (व्दितीय), सुरजगल, शाह आलम, चैतसिंह, छत्रसिंह, जगतसिंह, विक्रमशाह इ. राजे महाराजांनी व बादशाहांनी 'धृपद' शैलीला प्रोत्साहन दिले व राजदरबारी धृपदीय कलावंतांना आश्रय देऊन धृपद गायकी जीवंत ठेवली.

धृपद प्राचीनता इतिहास परंपरा व वैशिष्टये –

CamScanner

भारत देशाला जगदगुरू असे संबोधत असत. आपल्या प्राचीन व गौरवशाली संस्कृतीमुळे [illegible] विश्वबंध आहे. भारतीय संगीताच्या प्राचीनतेचे माध्यम धृवपद हे प्रमुख आहे. धृपद आपल्या प्राचीन सांगीतिक संस्कृतीचा मुख्य पाया आहे. 'ध्रुव' प्रबंधापासून धृपदाचा जन्म झाला. 'धृपद' ही संगीतातील प्राचीनतम गानशैली होय. धृपद गायकांना 'कलावंत' संज्ञा प्राप्त होती. धृपदाचा विशेष प्रचार मध्यकाळात झाला. तत्कालीन काळात धृपद 'लोकप्रिय व राजाश्रित गानशैली होती. याच काळात धृपद गायकी सोबतच धृपद 'नर्तनाचे' देखील प्रमाण प्राप्त होतात. धृपदा सोबतच वाद्यांमध्ये 'वीणा आणि मृदंग' या स्वरताल वाद्यांचा देखील बोलबाला होता. म्हणजेच ख-या अर्थाने 'गीतं, वाद्यं, नृत्य [illegible] संगीत मुच्यते' या पं. शारंगदेवाच्या व्याख्येला धृपद गायकीने खरा न्याय दिला असे म्हणावयास हरकत नाही.

धृपदाची परंपरा 'स्वामी हरिदासजी' यांचे पासुन मानली जाते. स्वामीजींनी शेकडो धृपदाची रचना केली व शिष्य गण देखील तयार केले. जो धृपद गाण्यामध्ये प्रवीण होता ज्यांची नांवे संगीत क्षेत्रात आजतागायत घेतली जातात जसे – तानसेन, गोपाल बैजू, नायक बैजू व बक्षू ग्वाल्हेरचे राजा मानसिंहांनी धृपद गायकीला प्रोत्साहन दिले व प्रचार–प्रसाराचे विशेष कार्य केले. परंतु धृपद परंपरा [illegible] स्वामी हरिदासांपासुनच मानली जाते. 'धृपद' या गानशैलीकडे त्यावेळी आदर भावाने बघितले जात असे व आजही बघतात.

धृपद शैलीचा –हास होण्याची काही कारणे –

1. धृवपद विलासी प्रवृत्ती विरोधक आहे. म्हणून पाहिजे ते प्रोत्साहन मिळाले नाही.
2. विदेशी आक्रमणामुळे भारतीय संस्कृतीचा –हास होत गेला.
3. इंग्रजी राजवटीत भारताने पाश्चात्य संस्कृतीला आपलेसे केले व त्याचे अनुकरण केले म्हणून धृपद शैलीचे पतन होत गेले.
4. गत 200–300 वर्षापासून ख्यालगायनाचा प्रचार धृपदाच्या तुलनेत अधिक झाला.
5. धृवपदाबरोबरच 'वीणा व मृदंग' या वाद्यांची प्राचीन भारतीय परम्परा देखील लुप्त होत चालली आहे.
6. महंम्मद खॉं व सदारंग –अदारंग व्दारा अविष्कृत शेकडो ख्यालाच्या रचना आणि अमिर खुसरो व्दारा अविष्कृत सितार व तबला यांचा अत्याधिक प्रचार–प्रसार होत आहे. आणि मूळचे भारतीय संगीत (धृपद–वीणा–मृदंग) नष्ट होऊ लागले आहे.
7. धृपदाचा पूनरूध्दार जर झाला नाही तर एक दिवस प्राचीन भारतीय संगीताच्या या परंपरेची कल्पना केवळ लोककथा म्हणून शिल्लक राहील. अशी भीती वाटायला लागली आहे.

धृपद गायकी मानवी हृदयावर परिणाम करणारी होती याविषयी इतिहासातील काही दाखले – मध्यकाळात धृपद श्रेष्ठ व सर्वोत्कृष्ठ गायकी म्हणून संपूर्ण भारतात प्रचलीत होती. धृपदामध्ये काव्यविशेषाचे स्पष्टीकरण केल्यास त्याची भाषा ही ब्रज आहे आणि धृपदामध्ये श्रृंगारप्रधानता, भावप्रधानता हे गुणविशेष विद्यमान आहेत.

1. अबुल–फजल च्या मते – धृपदाचे ब्रजभाषेतील माध्यमातून जे रूप जनतेसमोर आले ते जनतेच्या प्रत्येक वर्गाला रिझविणारे होते.
2. बैजूने हुमायूं समोर धृपद गाऊन त्यांचा क्रोध इतका शांत केला की त्यांनी कतले आम बंद केले अशा प्रकारची धृपद गायकी बैजूची होती.
3. खुशहाल खॉं व बिलास खॉं ची आलापी ऐकून बादशाह शाहजहॉं तन्मय होऊन जात असत.
4. बहादूरशाह गुजरातीचे मन मानसिंह तोमरचे दरबारी गायक बख्शू खॉं नी मोहीत केले होते.
5. मूल्ला अब्दुल कादिर बदायुनी – बाबा रामदासांचे धृपदगायन ऐकून बहिरम खॉं चे डोळ्यातून अश्रू ओघळत होते.

वर्तमानात धृपद शैलीचा व गानाचा अभ्यास अनिवार्य असल्याची कारणमिमांसा –

प्राचीन काळापासुन आठराव्या शतकापर्यंत भारतीय संगीतात 'धृपद गायकी' ने मानी [illegible] अपली छाप टाकली व राज्य केले. त्यानंतर इंग्रजी राजवटीत धृपद गायकी मागे पडत गेली [illegible] असायर पाहिजे त्या स्तरावर रूरळलीच नाही. ख्यालगायनाने वर्तमानातही आपले स्थान कायम [illegible] वस्तु इतिहास घडविणा–या धृपद गायकीला आज संजवनी देण्याची नितांत गरज आहे व वर्तमानात धृपद शैलीचा व गानाचा अभ्यास अनिवार्य असल्याच्या कारणमिमांसेची चर्चा केल्यावर धृपदाचे महत्व पटल्याशिवाय राहत नाही.

1. प्राचीन संगीताच्या मूळापर्यंत पोहचता येईल.
2. 'गीत–वाद्य–नृत्य' या तिन्ही कलांचा प्राचीन काळातील सांगोपांग अभ्यास किंवा त्यांचे [illegible] स्वरुप जाणून घेता येईल.
3. 'स्वर, ताल व पद' यांचा प्राचीन काळातील स्वरूप व दर्जा समजून घेता येईल.
4. धृपदाच्या दीर्घ परंपरेत प्राचीन व अर्वाचीन संगीताचा ठेवा व स्वरूपाची अर्थात संगीताची सांगोपांग माहिती मिळेल.
5. धृपदाचा संबंध 'धृवा गायन' व धृवा नर्तनाशी आहे' याचा उल्लेख प्राप्त होतो. म्हणून [illegible] धृवागायन व नर्तनाविषयीची माहिती मिळेल.
6. 'धृपद' हे प्राचीन काळापासून तर जवळ–जवळ अठराव्या शतकापर्यंत सर्व संगीत कलावंत, [illegible] विचारवंतांचे केंद्र होते म्हणूनच ते अग्रस्थानी होते काय? याचा उलगडा होईल.
7. भारतीय संगीताचा इतिहास बघितल्यावर संगीतातील अलौकीक कथांचा उल्लेख हा 'धृपद' गायनाशी प्रत्यक्ष जोडला गेलेला आहे उदा. दिवेलागणे, पाऊस पडणे यांसारख्या विषयांचा संबंध धृपदाशीच आहे का? याची उत्तरे मिळतील.
8. 'स्वर आणि ताल' यांचा सुक्ष्मदिसुक्ष्म प्रयोग धृपदाच्या प्रयोगशीलतेत असल्याने स्वर–तालाचा जास्त सखोल अभ्यास होईल.
9. गायकीचे अनेक पैलू, स्वरलगाव, स्वरोच्चार, स्वरमाधुर्य, गमक, आलापी बढत लयकारी ही सर्व वैशिष्टयांचा सखोल अभ्यास करता येईल.
10. धृपदाची वाणी (वानी) म्हणजेच धृपदाच्या गायनशैली ह्या मध्यकाळातील 'धृपद घराणी होत. असे म्हणण्यास जर हरकत नसेल तर त्याचा शोध घेण व माहिती मिळविणे हे आद्यकर्तव्य आहे.
11. 'धृपद' हा प्राचीन व मध्यकालीन भारतीय संगीताचा आत्मा आहे? असे वक्तव्य केल्यास अतिशयोक्ती होणार नाही. अशा शैलीविषयी नवीन पिढीने अभ्यासविषय म्हणून शोध करून बोध घ्यावा.
12. 'धृपद' गानशैली हा प्राचीन व मध्यकालीन संगीताचा अमूल्य ठेवा आज लुप्त होऊ नये म्हणून त्याला नव संजीवनीची आवश्यकता आहे.
13. आज 'मृदंग' वादकांची संख्या कमी होत आहे व 'तबला' वादकांची संख्यचा वाढत आहे.
14. 'मृदंग' किंवा 'पखावज' हे धृपद गायकीचे साथीची वाद्ये आहेत.
15. धृपदाच्या अभ्यासाने धृवा गीतीचा विस्तृत उलगडा करता येईल.
16. धृपद' हे भारतीय संगीताच्या इतिहासातील एक महत्वाचा (Milestone) टप्पा आहे.
17. धृपद गायकी ही भारतीय संगीताच्या इतिहासातील दीर्घकाळ प्रचलीत असलेला गानविधा आहे.
18. धृवागीतांवर नर्तन केल्या जात असे. याचा उल्लेख मिळातो. तत्कालीन नृत्यप्रकार व पध्दतींचा अभ्यासही धृपद–अध्ययनानेच शक्य होऊ शकेल.
19. प्राचीन व मध्यकालीन धृपद पदावलींचा संग्रह करणे सोपे होईल.
20. प्राचीन धृवागीतांची माहिती संकलीत करणे.

ही सर्व माहिती 'धृपद' या गीताच्या अभ्यासाने शक्य होऊ शकेल.

धृपदाचे पुनरुज्जीवन करण्यासाठी काही उपाययोजना –

'Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor - (SJIF) -7.675, Issue NO, 293 (CCXCIII)
ISSN : 2278-9308
April, 2021

1. येत्या काळात धृपद परंपरेच्या प्रात्यक्षिक आणि वैचारिक या दोन्ही क्षेत्रास पुनरूज्जीवित करण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न करण्यात यावेत.

2. धृपदाचे मूळ रूप कसे असावे यासंबंधी संगीत क्षेत्रात शोधाची (Research) ची आवश्यकता असल्याने अनेक जिज्ञासूंनी त्यावर काम करणे अनिवार्य आहे.

3. धृपद गायकी सर्वश्रेष्ठ गायकी- मानली जाते. त्याची कारणामिमांसा व वैशिष्टये शोधणे अत्यंत गरजेचे आहे व त्यावर सखोल होणे आवश्यक आहे.

4. सर्व संगीत मासिकांमधून, साप्ताहिकांमधून व वर्तमान पत्रांव्दारे म्हणजे दैनिकांमध्ये देखील 'धृपद' या गान प्रकाराची चर्चा होणे व त्यावर प्रकाश टाकणे गरजेचे आहे.

5. धृपद' या विषयावर चर्चासत्र, अधिवेशन, संगोष्टीचे कार्यशाळांचे आयोजन संपूर्ण भारतवर्षातल्या निरनिराळ्या विद्यापीठांव्दारे व संगीत संस्थांव्दारे होणे आवश्यक आहे.

6. धृपद हे एक प्राचीन व मध्यकाळातील संगीताचे प्रेरक होते' हे नवीन पीढीतील युवक–युवतींमध्ये रूजविणे गरजेचे वाटते.

7. मध्यकाळातील म्हणजे संगीतांच्या सुवर्ण काळातील केंद्रबिंन्दु 'धृपद' असल्याने धृपदाच्या उत्कर्षावरील कारणमिमांसा शोधणे व वैशिष्टयांचे अध्ययन करून मुल्यमापन करणे.

8. धृपद गायनाच्या राष्ट्रीय आंतरराष्ट्रीय 'Concerts' चे आयोजन करणे अनिवार्य आहे.

9. जुन्या तज्ञ गायकांच्या ध्वनीफितींचा शोध घेऊन त्याचा प्रचार प्रसार करणे.

10.Youtube, Social Meada, Facebook, What's app, Instagram वर धृपद गायकीविषयी व धृपद शैलीविषयी अनेक Audio-Video क्लीपं टाकणे जेणे करून नवीन पीढीमध्ये धृपद गीताविषयी आकर्षण निर्माण होईल.

11.धृपद गीत व शैली चे विषय देऊन शाळा महाविद्यालयीन व विद्यापीठ स्तरावरील विद्यार्थ्यांसाठी निबंध स्पर्धा व वादविवाद स्पर्धेचे आयोजन.

12.टि.व्ही. वाहिन्यांमधून धृपद गानाविषयी Reality Shows चे आयोजन. जेणे करून नवीन पीढी धृपदाकडे आकर्षित होईल.

13.भारत सरकाने आपल्या चॅनल्सच्या माध्यमातून धृपदाच्या प्रचार–प्रसार विषयी अभियान चालविणे अनिवार्य आहे.

14.भारत सरकाने 'धृपद' प्रशिक्षण घेणा–या विद्यार्थ्यांना शिष्यवृत्ती देऊन त्यांचा उत्साह वाढविणे गरजेचे आहे.

15.भारत संरकाने धृपद गाणा–या कलावंतांना मासिक वेतन देऊन ही परंपरा जोपासावी. कारण धृपद गायकी भारतीय संगीताची प्राचीन संस्कृती आहे.

16.आज ,ख्यालगायन समाजाच्या सर्व स्तरांमध्ये प्रचलीत आहे. त्यासोबतच धृपद गायकीला देखील समतोल संधी देणे क्रमप्राप्त आहे. त्यादृष्टिने प्रयत्न आवश्यक आहेत.

17.'मृदंग' वाद्याच्या सोलोवादनाचे कार्यक्रम आयोजित करणे.

18.तालवाद्यांमध्ये तबल्या सोबत 'मृदंग' वादनाच्या स्पर्धा आयोजित करणे.

19.भारत सरकारनेही मृदंग वादकांविषयी विचार करून त्यांचा आर्थिक प्रश्न सोडविणे.

20.भारताबरोबरच इतर राष्ट्रांमध्ये 'धृपद' कसे लोकप्रिय करता येईल? याविषयी विचार मंथन व योजना आखणे.

21.आजच्या जगातिकीकरणाच्या काळात विश्वाचे भौगोलिक अंतर कमी झालेले आहे. त्यातच धृपद गायकी संपूर्ण विश्वभर प्रसारीत करून रूजविणे व त्यासाठी प्रयत्न करणे.

22.'कलेची देवाण घेवाण' या योजने अंतर्गत अनेक कलावंतांना परदेशात पाठवून भारतीय संगीताचा प्रचार करणे तेथील इच्छुक विद्यार्थ्यांना ख्यालगायन व धृपद गायनाचे प्रशिक्षण देणे.

23.विद्यालयीन व विद्यापीठीय स्तरावर संगीताच्या अभ्यासक्रमात धृपदगायकांचे चरित्र, धृपदाचा इतिहास, धृपदाची वैशिष्टये, धृपद गायकी, धृपद ही भारतीय संगीताची धरोहर, यासारख्या विषयांचा अंतर्भाव करणे.

24.विद्यार्थ्यांमध्ये धृपदाविषयी आस्थेची भावना निर्माण करणे.

25.धृपदाविषयीचे गैरसमज दूर करून धृपद शिकण्याकडे विद्यार्थ्यांचा कल वळविणे व त्यांना प्रोत्साहन देणे.

26.'धृपद' ही केवळ मर्दाना गायकी आहे, हा पुरूषी भाव नष्ट करावा व स्त्रियाही धृपदे गाऊ शकतात याविषयी प्रबोधन करणे.

27.हवेली संगीतातील ध्रुवपदांचा आदर्श समोर ठेवावा.

28.भारतीय संगीतातील ध्रुवपदाबरोबरच वीणा अणि मृदंग (पखावज) ची प्राचीन भारतीय परंपराही लुप्त होत असल्याचे जाणवते. त्यालाही संजीवनीची आवश्यकता आहे.

29.भारतीय संस्कृतिला आणि संगीताला पर्यायाने धृपदाला अक्षुण्ण ठेवण्यासाठी धृपद, वीणा व पखावज परंपरेचा पूनर्रुध्दार करण्याीच आवश्यकता आहे.

निष्कर्ष –

'धृपद' ही चतुर्विध गानशैली प्राचीन काळापासून अठराव्या शतकापर्यंत संपूर्ण भारतवर्षात संगीत क्षेत्रात चर्मोत्कर्षावर होती. आजही अल्प प्रमाणात धृपदाचे गायक धृपद गातांना आढळतात. परंतु धृपद या शैलीचाच मुलाधार लोप होण्याची भीती नाकरता येत नाही. 'धृपद' हा संगीताचा मानबिंदू होता व आहे.

सर्वतोपरी परिपूर्ण, सर्वश्रेष्ठ अशा या गानशैलीला पुनश्च पुनर्जिवित करण्यासाठी सर्वतोपरी प्रयत्न करणे ही काळाची गरज आहे. म्हणून 'धृपद' शैलीला संजीवनी देणे हे सर्व संगीतप्रेमींचे, रसिकजनांचे, कलावंतांचे, अभ्यासकांचे, शिक्षकांचे व विद्यार्थ्यांचे आद्यकर्तव्य आहे. जेणेकरून धृपद हा अमोल ठेवा आज व भविष्यातही कायम राहील असे प्रयत्न करावे.

संदर्भ ग्रंथ सूचि –

1)संगीत कला विहार – लेखक – श्री आदिनाथ उपाध्याय, डिसेंबर 1994
2)संगीत कला विहार – लेखक – श्री धर्मेंद्र काढा, जून 1996
3)संगीत कला विहार – लेखक – विशाल जैन, फेब्रुवारी 2010
4)संगीत बोध – लेखक – शरचंद्र परांजपे, म.प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी
5)निबंध संगीत – लेखक – लक्ष्मी नारायण गर्ग, संगीत कार्यालय हाथरस
6)संगीत विजयिनी – लेखक – डॉ. नारायण मंगरूळकर, विजय प्रकाशन नागपूर

CamScanner

ISSN- 2349-638x

Impact Factor
7.149

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed and Indexed Journal

Special Issue

Sustainable Development in Science, Social Sciences and Languages

30th May 2021

Special Issue - 88

Chief Editor:
[illegible]

Executive Editor
Dr. Mangalkumar K. Patil
Principal,
Dr. Ghali College, Gadhinglaj

Co-Editor
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CamScanner

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

Peer Reviewed And Indexed Journal

ISSN 2349-638x

Impact Factor 7.149

Website :- www.aiirjournal.com

Theme of Special Issue

Sustainable Development in Science, Social Sciences and Languages

Chief Editor

Mr. Pramod P. Tandale

Executive Editor

Dr. Mangalkumar R. Patil

Principal,

Dr. Ghali College, Gadhinglaj

Co-Editor

Mr. Ashvin G. Godghate

Dr. Dattatray N. Waghmare

Dr. Nilesh. K. Shelake

CamScanner

Sr.No.	Name of the Aurhor	Title of Paper	Page No.
152.	वंदना गोविंद वेळकर	शाश्वत विकासाचे तत्व - लिंग पद समभाव	703
153.	प्रा.सुर्यकांत प्रभाकर माने कु.शुभराणी शिवदास होरंबे कु.पौर्णिमा चंद्रकांत साठे	अर्थ साक्षरतेची आर्थिक विकासातील भूमिका: एक व्यष्टी अध्ययन	707
154.	डॉ. शोभा नारायणराव ढानकिकर	हिंदी भाषा और रोजगार के अवसर	712
155.	डॉ.आण्णासाहेब हरदारे	महिला सक्षमीकरण आणि शासनाचे धोरण	715
156.	डॉ. मृणालिनी आबासाहेब शिंदे	वेदांतील पर्यावरणसंरक्षणविषयक विचार	719
157.	डॉ. दिलीप सुदाम शहापुरे	भारतातील अन्नसुरक्षा समस्या आणि उपाय एक चिकित्सक अभ्यास	726
158.	सांते लालचन्द्र रामचंद्र	भारतातील अन्न सुरक्षितता:एक अभ्यास	732
159.	प्रा.डॉ. सुनिल भावराव देसले	रवींद्र शोभणे यांच्या साहित्यातील भेदभाव विषयक जाणीव	735
160.	श्री. अशोक खंडू मोरमारे डॉ. डी.एम. पाटील	कोळी मल्हार आदिवासी जमातीचा चौकाचा विधी एक संस्कारशील विधी	742
161.	प्रा.डॉ. शिवाजी एस.वाघमारे	लोकगीतांची परंपरा व स्वरूप	747
162.	प्रा. डॉ. दत्तात्रय रामचंद्र डुबल	महिलांचा राजकीय क्षेत्रातील सहभाग आणि वास्तव	752
163.	प्रा.डॉ. चंद्रकिरण घाटे	शारिरिक, मानसिक व संसर्गजन्य (कोरोना) रोगांवर संगीतोपचार व संगीत चिकित्सा पध्दतीचे योगदान	756
164.	प्रा. लक्ष्मी नरहरी पवार	बहिणाबाईच्या काव्यातील पर्यावरणाचे प्रतिबिंब	760
165.	तेंडोलकर दीपा दत्ताराम	ॲक्युप्रेशर: एक वरदान	764
166.	प्रा. सोनकावळे डी. एन.	दारिद्रय निर्मूलनात मागासवर्गीय विकास महामंडळाचे योगदान	768
167.	डॉ . प्रतिभा सदाशिव देसाई	लिंगभाव समानता व स्त्रीसबलीकरणाच्या परस्पर संबंधाचा चिकित्सक अभ्यास	772
168.	सनी गजानन सुतार	गुणवत्तापूर्ण शिक्षण	778

CamScanner

शारिरिक, मानसिक व संसर्गजन्य (कोरोना) रोगांवर संगीतोपचार व संगीत चिकित्सा पध्दतीचे योगदान

- प्रा.डॉ. चंद्रकिरण घाटे
एम.ए., एम.फील, पीएच.डी. (संगीत)
सहयोगी प्राध्यापक, मो.नं. 8766774414
श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय, पुसद जि. यवतमाळ

प्रस्तावना -

'संगीत चिकित्सा' मानवांचे मनोविकार दूर करण्याची एक श्रेष्ठ उपचार पध्दती आहे. याचा प्रभाव हा दूरलक्षी आहे. संगीताची भावना मनाच्या तळाला स्पर्श करते आणि सुप्त आणि कटू रोगविकारांना दूर करून आनंद निर्माण करते व मानसिक अशांती दूर करते. या विशिष्ट गुणांमुळे वर्तमान काळात 'संगीत चिकित्सा' याचे प्रचलन वाढत आहे. या चिकित्सेच्या प्रभावाने केवळ मानसिक मनोविकृती दूर होत नसुन शारिरिक सुदृढ स्वास्थ्य देखील प्राप्त होते.

आज शारिरिक-मानसिक विकृतींच्या निराकरणाकरिता भारतीय संगीताचे उपचार परिणामकारक सिध्द होत आहेत. 'संगीत चिकित्सा' वैदिक काळापासुनच भारतीय संगीत देत आले आहे आणि वर्तमान काळात देखील या चिकित्सेवर पुन:शोधकार्य सुरु आहे. आजची जीवनशैली मानवाची मन:शांती क्षीण करणारी आहे. त्यामुळे अनेक व्यक्ति रोगग्रस्त व पिडाग्रस्त होत आहेत. ही पीडा दूर करण्यासाठी भारतीय 'संगीत चिकित्सा' मोलाचे कार्य करत आहे.

कोरोना-19 या विषाणूने नोव्हे. 2019 मध्ये सबंध जगात हाहा:कार करून टाकला. यामुळे मृत्यू दर वाढला व जगाने एक महामारी चे रुप धारण केले. अशा परिस्थितीत एप्रिल, मे, 2021 मध्ये कोरोना या संसर्गजन्य विषाणुवर भारताने औषध व प्रथमोपचार म्हणून लस शोधून काढली. त्यामुळे या महामारीवर हळू-हळू नियंत्रण केल्या जात आहे. अशातच संगीता सारख्या कला खचलेल्या रुग्णांना मानसिक आधार देण्याचे कार्य करीत आहे.

'कोरोना संक्रमण काळ' -

वैश्विकरणाच्या या प्रगत व वैज्ञानिक काळात संपूर्ण जग हे प्रगतशील झालेले आहे. देशा-देशातील अंतर कमी झाले आहे. अशातच नोव्हे. 2019 मध्ये 'कोरोना' या नावाचा व्हायरस बाहेर आला आणि संसर्गजन्य असल्याने जगातील मानवांवर आक्रमण करु लागला. नाक व तोंडाव्दारे हा व्हायरस मानवी शरीरात प्रवेश करतो व मानवाला कोरोनाची लागण होते. संसर्गजन्य असल्याने जगात तो फार द्रुतगतीने पसरला व एक प्रकारची 'महामारी' चे संकट सर्व विश्वामध्ये आले. यामुळे हजारो लोक मृत्युमुखी पडले. लाखो लोकांना संक्रमण झाले. यातुन काहींचे रोग निवारण झाले तसेच यामध्ये सर्वांनी आपआपल्या घरी राहूनच स्वत:ला सुरक्षित ठेवणेहा एकच उपाय या संकटातून निघण्याकरिता उपयोगी आहे.

www.aiirjournal.com

अशातच विश्वभरातल्या सर्व हालचाली जणू बंद झाल्या, आर्थिक, सामाजिक, शारिरिक, भौतिक, हालचाली जणू थांबल्या. यातच 'Physcial Distancing' चे पालन हाच उपाय असल्याने जणू सर्व प्रगतीच खुंटली व संपूर्ण जग जणू थांबले.

शारिरिक, मानसिक व संसर्गजन्य (कोरोना) रोगांवर संगीत चिकित्सेचे परिणाम -

1) गायन 'क्रोध, चिंता आणि काळजी' कमी करण्यासाठी मदत करते.
2) गायनामुळे 'गायकाची प्रतिरक्षा प्रणाली' मजबुत होते व रोगांशी सामना करण्याची क्षमता वाढवते.
3) गायनामुळे गायकात 'एंडोफिन' नामक रसायनाचा श्राव निर्माण होतो. ज्यामुळे दुःख व पीडा यापासून मुक्ति मिळते.
4) गायनामुळे 'साइनस व श्वासनलिका' पूर्णपणे मोकळी होते व श्वास घेण्यास अटकाव होत नाही.
5) गायनामुळे मानव मानसिकदृष्ट्या अधिक सबळ व सचेत होऊ शकतो.
6) गायनामुळे मानवाच्या 'शरिरिक मुद्रेतही' परिवर्तन व सुधार होते.
7) गायनामुळे चेहऱ्याच्या मासपेशींचा व्यायाम होतो आणि त्यामुळे चेहरा देखील सतेज दिसू लागतो.
8) गायनामुळे मांसपेशीतील ताण दूर होतो.
9) गायनामुळे ह्रदयावरील ताण दूर होतो.
10) गायनामुळे रक्ताभिसरण क्रियेमध्ये सुधारणा होऊ शकते.
11) गायनामुळे फुप्फुसाला व्यायाम होतो. ज्यामुळे श्वासप्रक्रिया मजबुत होते.

भारतात प्रयागराज येथील एका अध्ययनाप्रमाणे शास्त्रीय संगीतामुळे कोरोनासारख्या आजारातूनही मुक्ती प्राप्त होऊ शकते. या थेरपीमुळे कोरोनापासून नंतर येणाऱ्या समस्यांपासून देखील मुक्ती मिळू शकते.

कमला आर्या पी.जी. कॉलेज मधील सहकारी प्राध्यापक 'डॉ. ऋतू सिंह' यांनी 10 संक्रमित कोरोना ऋग्णांचा अभ्यास करून असे निष्कर्ष दिले की,

अ) कोरोना ऋग्ण संक्रमणानंतर 'पाच ते सहा' दिवसानंतर स्वस्थ होण्यास सुरुवात होते.
ब) रुग्णांची मानसिक शांती वाढते.
क) रुग्णाची प्रतिकारक शक्ती वाढण्यास मदत होते.
ड) रुग्णाची निरोगी होण्याची इच्छाशक्ती वाढते.
इ) रुग्णाचे चित्त शांत होते ज्यामुळे (Oxygen level) ऑक्सिजन ची पातळी वाढविण्यास मदत करते.
फ) रुग्णातील सकारात्मक विचारांचे प्रमाण वाढते व नकारात्मक विचारांपासून दूर ठेवण्यास संगीत मदत करते.
ग) राग आणि आलापांच्या गायनाने व श्रवणाने रुग्णाच्या श्वासाची गति स्थिर ठेवण्यास मदत होते.
ह) 'डॉ. ऋतू' यांचे मतानुसार कोरोना संक्रमण काळात रसिकांना गंभीर व आशावादी संगीत ऐकविण्याची आवश्यकता आहे. मुख्यत्वे राग-भैरवी, दरबारी-कानडा, मधुवंती, बिहाग, शिवरंजनी, तोडी, पुरीया इत्यादि, रागांपासून विशेष लाभ मिळण्याची शक्यता आहे.

ए) उच्च रक्तचापाच्या रुग्णांनी वीणावादनाचे श्रवण करावे. मसीतरवानी व रजाखानी गत ऐकल्याने हृदयाचे ठोके व गती सामान्य होते.

ज) जेव्हा अंगात ताप असेल त्यावेळी 'अडाणा व दरबारी-कानडा' हे राग लाभकारी असतात.

क) रोग्यांना विलंबित गतिमधील वादनाचे श्रवण फायदेशीर आहे.

ल) 'डॉ. ऋतू' यांचे मतानुसार कोरोना आजाराची भीती रुग्णांच्या मनातून निघून जाते व रुग्ण शांत होतात.

म) नाडी स्वस्थ व नियंत्रित होते. यामुळे कोरोना रुग्णांमध्ये सुधार होण्यास मदत मिळते.

'राजकीय आयुर्वेदिक महाविदयालय इंडिया' चे सेवानिवृत्त 'प्राचार्य डॉ. जी.एस. तोमर' यांचे मतानुसार सरळ सांगायचे झाल्यास कोविड 19 वर संगीताचा इलाज असंभव आहे मात्र -

अ) संगीताच्या प्रभावाने रुग्णांना मानसिक शांती व सकारात्मक उर्जा प्राप्त होते.

ब) संगीतामुळे रुग्णांची रोग प्रतिरोधक क्षमता निश्चितरुपाने वाढते.

क) कोरोना मुक्त झालेल्या रुग्णांमध्ये त्यानंतर येणाऱ्या समस्या आहेत त्या समस्यांमध्ये संगीत प्रभावशाली कार्य करते व समस्यांचे प्रमाण कमी करते.

कोरोनाच्या संसर्गापासून सुरक्षिततेकरिता चतु:सुत्री -

'डॉ. योगिता सत्रे' -

जेव्हा रसिक किंवा कलाकार गातात, नाचतात, हसतात, प्रार्थना किंवा ध्यानयोग करतात तेव्हा मानवी तरंग 120-350 हर्टस असतात आणि कोरोना विषाणूचे तरंग 05.5 हर्टस आहे. 25.5 हर्टसला विषाणू मरतो. यामुळे कोरोनाला हरविण्यासाठी मनाची सकारात्मकता आणि प्रसन्नता अधिक गरजेची आहे. असे मत 'डॉ. योगीता सत्रे' यांनी मांडले.

'डॉ. योगिता सत्रे' यांनी चतु:सुत्री उपाय योजना सांगितली आहे.

कोरोना सहजासहजी संपणार नाही. त्यामुळे मानवाने कोरोना सोबतच जगायची सवय लावणे अनिवार्य आहे. हे करतांना कोरोनाच्या संसर्गापासून वाढविण्याकरिता 'आहार, विहार, झोप आणि तंदुरुस्ती' ही चार सुत्रे पाळणे अत्यावश्यक आहे.

1) आहार - आहारात 'क' जीवनसत्वाचा समावेश करावा.
2) विहार - प्रतिदिन एक तास व्यायाम, योगासने, चालणे, धावणे व प्राणायाम करावे.
3) झोप - रात्री 10 वाजता झोपावे व सकाळी 5 वाजता उठावे उशिरा झोपल्याने रोग प्रतिकारक शक्ती क्षीण होते.
4) मन - मन नेहमी प्रसन्न आनंदी व सकारात्मक ठेवावे. मानवी मनातील भीती चिंता, चिडचिड, नकारत्मकता 'मानवी तरंग' कमी करतात.

या चतु:सुत्री मध्ये गाणे, वाजविणे, नाचणे या सांगीतिक क्रियांमुळे मानव हा सुदृढ राहतो त्याची शारिरिक व मानसिक स्थिती संशक्त व सकारात्मक राहते.

एक महिला डॉक्टर (फिजिओथेरपीस्ट) - (कोरोना संबंधी काळजी)

1) गरम पाण्याचे सेवन, गरम वस्तुंचा खाण्यात प्रयोग आणि ब्रिदिंग एक्सरसाईज हया तीन गोष्टी दिन-प्रतिदिन नियमित करणे.
2) (ब्रिदिंग) श्वासोश्वास खोलवर दीर्घ श्वास घेणे व सोडणे ही क्रिया करावी.
3) दीर्घ श्वास घेऊन बऱ्याच वेळेपर्यंत फूंकर घालावी यामुळे फुप्फुसातील श्वास रोखल्या जातो व फुप्फुसातील इतर गोष्टी वाढण्यास वाव मिळत नाही.
4) 'ओम' या शब्दाचे दीर्घ उच्चारण करणे.
5) दीर्घ श्वास आत घेऊन एक रुमाल घेऊन त्यावर तोंडाने दीर्घ फूंकर घालून उडविण्याचा प्रयत्न करावा.

ही क्रिया रोज 20 मिनिटे पर्यंत करावी फूप्फूसामध्ये कोरोना व्हायरसला निवास करण्यास जागा मिळणार नाही.

निष्कर्ष -

गायन क्रिया एक प्राणायाम आहे. वादन व नर्तन एक व्यायाम आहे. संगीत चिकित्सेने मानवी शरीर व मन रोगमुक्त, सशक्त व उत्साही होण्यास मदत होते व शारीरिक व मानसिक व्याधी दूर होतात व मानव संगीत चिकित्सेने रोगमुक्त होतो. म्हणून शारीरीक, मानसिक व संसर्गजन्य (कोरोना) रोगांवर संगीतोपचार व संगीत चिकित्सा महत्वाची आहे.

संदर्भ ग्रंथ सूचि -

1) वर्तमान पत्रातील लेख - लेखक - अमलंद त्रिपाठी प्रयागराज
2) वर्तमान पत्रातील लेख - लेखक - डॉ. योगिता सत्रे
3) यौगिक एवं संगीत चिकित्सा - लेखक - संजय दास - प्रकाशन - पिलग्रीम्स पब्लिशर, वारानसी
4) शरिर विज्ञान एवं स्वास्थ्य रक्षा - लेखक - डॉ. स्नेहलता - प्रकाशन - डिस्कव्हरी पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली.
5) संगीत कला विहार - मे 2000 - पृष्ठ 38-39
6) संगीत कला विहार - जाने 2014 - पृष्ठ 13-14

CamScanner

A Multidisciplinary & Multilingual Book on

Innovative Best Practices in 21st Century (Opportunities & Challenges)

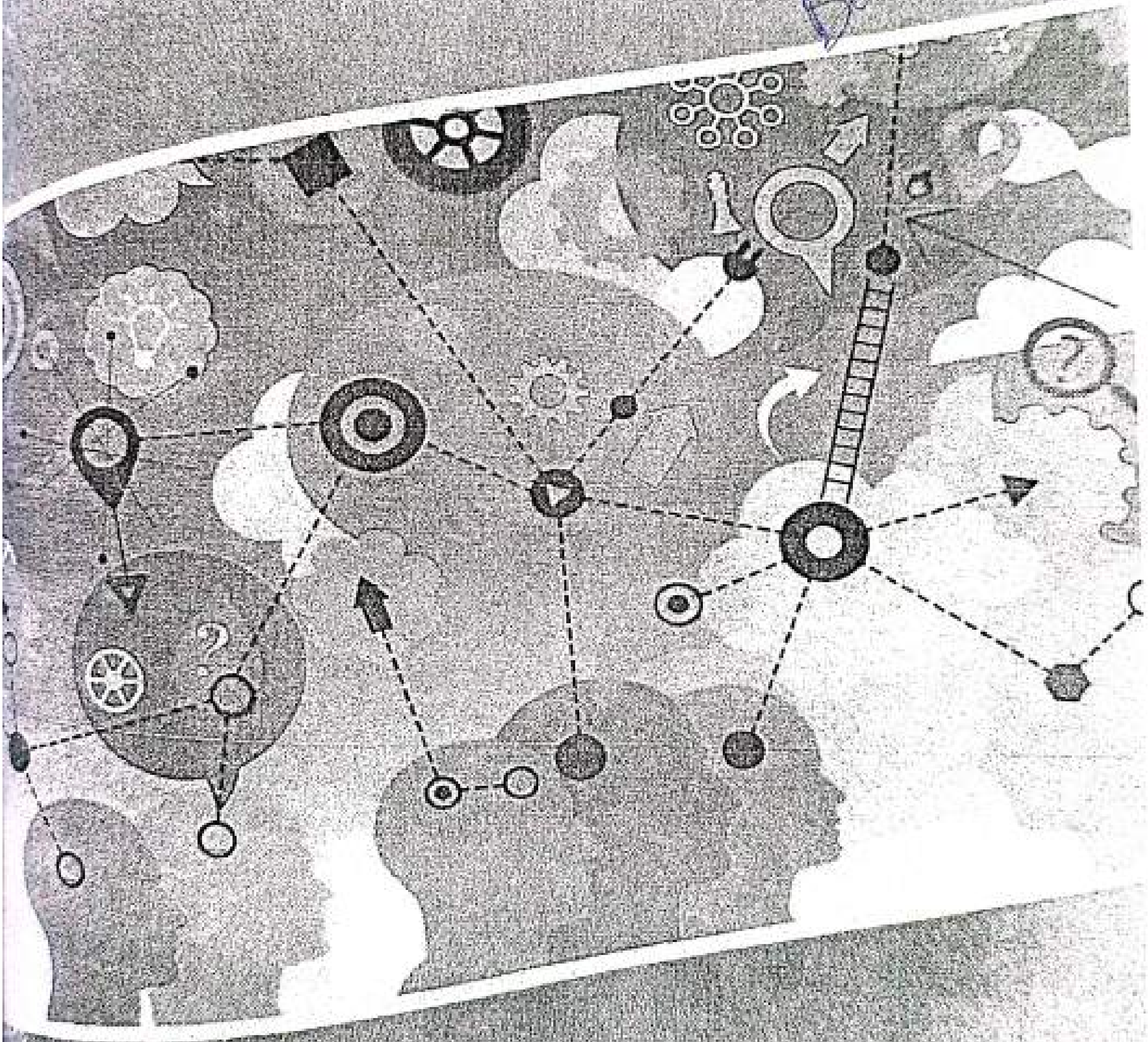

Editors
Dr. Devendra N. Vyas
Dr. Rupa Z. Gupta

CamScanner

A Multidisciplinary & Multilingual Book

on

INNOVATIVE BEST PRACTICES IN 21st CENTURY

(OPPORTUNITIES & CHALLENGES)

Editors

Dr. Devendra N. Vyas

Dr. Rupa Z. Gupta

CamScanner

A Multidisciplinary & Multilingual Book on
Innovative Best Practices in 21^{st} Century
(Opportunities & Challenges)

Editors

Dr. Devendra N. Vyas
Dr. Rupa Z. Gupta

ISBN No. : 978-93-91305-02-4

Year : May, 2021

Published by :

Aadhar Publications,
Amravati-444604,
Mobile-9595560278

Printed by :

Skyline Computers,
Murlidhar Towers, Ranpise Nagar,
Akola 444005
Cell - 9890606868

Coverpage Designed by :

Milind Traders
Cell - 9890213137

Papers published in this edited book is the own thoughts, ideas, views and opinions of respective authors. Editors are not responsible for it.

CamScanner

28	A study on Impact of Advertisement on Consumer Buying Behaviour **Mr. Aditya Shahu & Dr. Snehal Godbole**	144
29	A Study of marketing strategies adopted by companies for the sales of recycled product **Ms. Nidhi Choudhary & Dr. Snehal Godbole**	155
	Humanities & Social Sciences	
30	Ethical Issues In Research **Dr. Pawan Kumar Arya**	164
31	Upliftment of Quality Imperatives in Indian Higher Education through Lean Six Sigma (LSS) **Pabitra Kumar Ganguly,**	170
32	The effects of COVID-19 on Travel and Tourism industry in India **Dr. Anjali Ramchandra Kadam /Narayane**	177
33	भारतातील सेंद्रिय शेती : आधुनिक काळाची गरज **प्रा.डॉ. शर्वरी कुलकर्णी**	182
34	पाटबंधारे विभागामार्फत होणारी जलसंवर्धनाची कामे : काळाची गरज **प्रा. डॉ. विष्णु पांडूरंग कुटे**	185
35	मधुमेह आणि आधुनिक जीवनशैली **प्रा. उज्वला वाजपेयी**	190
36	Compitative Aggression Difference Between Kabaddi &Wrestling Players. **Mr. Ashok L. Walikar & Kaveri Belgavi**	196
37	21 व्या शतकात तंत्रज्ञानाद्वारे विकसित उपकरणांचे संगीत क्षेत्रावर झालेले परिणाम **डॉ. अर्चना संदीप देशपांडे**	201
38	21 व्या शतकातील नावीण्यपूर्ण सर्वोत्तम सांगीतिक सराव, संधी व आव्हाने **प्रा.डॉ. चंद्रकिरण घाटे**	207
39	वैश्विक शान्ति और बौद्धधर्म :एकचिंतन **डॉ .रमेश रोहित**	211
40	A Study on Right to Survival, Protection, Participation and Development of Child **Elizabeth Alexander**	215
41	Principles and Applications of Blockchain for the Social Media **Ananya Ganguly & Gourab Das**	220
42	Indian Govt. Activities to empower Start-ups **Dr. Mangala Tomar**	228

ISBN No. : 978-93-91305-02-4

21 व्या शतकातील नावीण्यपूर्ण सर्वोत्तम सांगीतिक सराव, संधी व आव्हाने

प्रा.डॉ. चंद्रकिरण घाटे
एम.ए., एम.फील, पीएच.डी. (संगीत)
सहयोगी प्राध्यापक
श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय, पुसद जि. यवतमाळ

प्रस्तावना -

संगीत ही एक अतिप्राचीन कला आहे. संगीत प्राचीन काळापासुनच कलेच्या विकासाकरिता कलावंतांनी शर्त केली. प्राचीन काळात संगीत हे अध्यात्माशी जुळलेले होते. मात्र आधुनिक काळात विशेषत: 21 व्या शतकात संगीत हे विज्ञानाशी जुळलेले आहे. प्रत्यक्ष कले सोबतच आज शास्त्रालादेखील वैज्ञानिक महत्व प्राप्त झाले आहे. संगीत केवळ मनोरंजनासाठी सीमित न राहता एक कला व शास्त्र स्वरुपात विकसित झाले आहे व एक अभ्यासविषय म्हणून विद्यार्थ्यांना संगीताचा अभ्यास करणे देखील सोईचे झाले आहे. आज 21 व्या शतकात संगीत या कलेतही अनेक परिवर्तने आलेली आहेत. त्यामुळे अभ्यासका समोर अनेक संधी, आव्हाने आलेली आहेत.

संगीताचे 'अध्ययन व अध्यापनात' माहिती व तंत्रज्ञानाचा प्रयोग –

1) **'E-Learning'** ही संकल्पना अलिकडच्या 10 वर्षात रुढ झालेली माहिती तंत्रज्ञानातील संकल्पना आहे. E-Learning म्हणजे Electronic Learning म्हणजे ईलेक्ट्रॉनिक्स च्या सहाय्याने घेतले जाणारे प्रशिक्षण होय.

2) **'Whats App, Telgram, Instagram, Facebook'** या माध्यमातुन समाज जवळ आलेला आहे. समाजातील संवाद या माध्यमांच्याव्दारे सहज झालेला असल्याने या माध्यमांना सोशल मिडीया असे नांव पडलेले आहे. यातुन सामाजिक व सांस्कृतिक विचारांचे आदन-प्रदान होत असते.

3) "www.swayam.gov.in" आणि 'MOOCS' आज शिक्षण क्षेत्रात केंद्रीय स्तरावर याव्दारे ऑनलाईन प्रशिक्षण दिल्या जाते.

4 **'Blended Learning'** या ICT च्या मदतीने अनेक विषयासोबतच विद्यार्थ्यांना संगीत शिक्षण देखील दिले जाते.

5) **'Conferencing Tools'** या माध्यमाने ऑनलाईन क्लासेस घेऊन विद्यार्थ्यांना त्याचा लाभ होतो.

6) राष्ट्रीय स्तरावर **'NCERT, IGNOU, AICTE'** हे ऑनलाईन कोर्सेस चालविले जातात.

7) 'Online Class Room, Virtual Class Room, Google Class Room' या ऑनलाईन पध्दतीचा वापर संपूर्ण शाळा, कॉलेजमध्ये अनिवार्य आहे. या पध्दतीमध्ये 'ICT' चा उपयोग केला जातो.

माहिती व तंत्रज्ञानाचे फायदे –

1. या संपूर्ण पध्दतीमध्ये वेळेची खूप बचत होते.
2. शिक्षणातील वेळेची बचत झाल्यास विद्यार्थी उर्वरीत वेळ संगीत कलेच्या रियाजाकरिता राखून ठेवतील.
3. विद्यार्थ्यांला आपल्या घरी बसुनच 'अध्ययन-अध्यापनाची' सोय उपलब्ध होते.
4. कमी वेळात अधिक परिणामकारक शिक्षण गुरु कडुन प्राप्त होते.

तोटे –

1. ही संपूर्ण व्यवस्थ आर्थिकदृष्टया खर्चिक व महागडी आहे.
2. ही व्यवस्था यांत्रिक असल्यामुळे यंत्र व यंत्रातील बिघाड यामुळे अडचणी निर्माण होतात.
3. माहिती व तंत्रज्ञान ही एक 'आभासी' पध्दती आहे. ज्यामुळे शिक्षक व विद्यार्थ्यांतील सुसंवाद नाहिसा होतो.

'दृक-श्राव्य' यंत्रातील योगदान –

1. ऑडिओ उपकरणे – रेडिओ, टेपरेकॉर्डर, ग्रामोफोन, ऑडिओ कॅसेट प्लेअर व भाषा प्रयोगशाळा ई.
2. व्हिडिओ उपकरणे – चार्ट, कृष्णधृवल बोर्ड, नकाशे, चित्र, मॉडेल्स, पुस्तके, ग्रंथ, मासिके, स्लाईड प्रोजेक्टर, ट्रान्सपरंसी, फलॅश कार्ड, छापलेले साहित्य ई.
3. ऑडिओ-व्हिडिओ उपकरणे – एल.सी.डी. प्रोजेक्टर, दूरचित्रवाणी, फिल्म प्रोजेक्टर, संगणक, व्हिसीडी प्लेअर, व्हर्चुअल वर्गकक्ष, मल्टीमिडीया ई.

फायदे –

1. दृक-श्राव्य यंत्राव्दारे गायन व वाद्यसंगीत ऐकता येते.
2. या यंत्राव्दारे संगीत साठऊन ठेवता येते व केव्हाही ऐकता येते.
3. ईच्छेप्रमाणे व आवडीप्रमाणे साठवलेले संगीत कोणत्याही वेळी श्रवण करता येते.
4. कॉम्प्युटर व्दारा सर्व संगीत व गायन व मैफिली साठविता येतात व वारंवार श्रवण करता येतात.

तोटे –

1. विकसीत व वैज्ञानिक माध्यमे महागडी आहेत.

CamScanner

2. ही सर्व यंत्रे असल्याने ती नेहमी दुरुस्तच ठेवावी लागतात.
3. ही यंत्रे नेहमीसाठी तयार व तत्पर असावी यासाठी त्यांची निगा राखणे अनिवार्य आहे.
4. ही सर्व महागडी व आर्थिकदृष्टया न परवडणारी बाब आहे.

21 व्या शतकातील सांगीतिक व प्रयोगिक नवीन लोकप्रिय विधा -

1) **'रिमिक्स'** – हे भारतीय शब्द नाहीत, पाश्चात्त्र कलाक्षेत्रातुन भारतात आलेले हे शब्द आहेत. आधुनिक उपकरणांच्या माध्यमातून व संगणकव्दारा वेगवेगळया कलॉकृतीतील वेगवेगळे तुकडे एकत्रितपणे जोडुन रिमिक्स करणे हे वैज्ञानिकतेने अतिशय सोपे झाले आहे. अशा प्रकारची रिमिक्स ही प्रक्रिया भारताला मिळालेली देणगीच आहे. तरुण वर्गात मात्र रिमिक्स ने उंच्चांक गाठला आहे. रिमिक्सव्दारे पॉप, रॉक् व डिस्को संगीताच्या लाईव्ह शो चे आयोजन विविध मंचावर उभे राहुन ईलेक्ट्रीक गिटार, कॉर्ड गिटार, बेस गिटार, ड्रमसेट व जॉर्सेट व ऑक्टोपॅड सारखी ईलेक्ट्रॉनिक्स वाद्ये जोरजोरात वाजवुन हाती मायक्रोफोन घेवुन व काही तरुण व निवडक नर्तकी-नर्तक नृत्य करित असतात व गात असतात.

2) **'फयुजन'** – 21 व्या शतकातील 'फयुजन' ही आधुनिक लोकप्रिय संगीत विधा आहे. भारतीय संगीत व पाश्चिमात्य संगीत या दोन संगीताचे सूवर्ण मिलन करुन एक वेगळा आनंद देणारी विधा म्हणजे फयुजन होय. उदा. भारतीय स्वरवादय व तबल्या सोबतच पश्चिमी संगीताचा संयोग करुन एक आधुनिक प्रयोग सादर करतात.

3) **'सिंफोनी'** – याचे प्रयोग विश्वस्तरावही यशस्वी झाले आहेत. पाश्चात्य संगीतातील हार्मनी व भारतीय संगीतातील मेलडी यांचा सुंदर मिलाफ म्हणजे सिंफोनी होय. भारतीय विद्यार्थी पाश्चात्य संगीताकडे व पाश्चात्य विद्यार्थी भारतीय संगीताकडे आकर्षित होवु लागले आहेत.

4) **'ट्रॅक-सॉंग'** – एखादया गीतातील स्वर व वाद्यांचा ट्रॅक असलेली ध्वनीफित वाजवुन त्यासोबत गायक स्वत: मायक्रोफोनवर गातो यात कुठल्याही प्रकाराचा वादयवृंद नसतो. दिसायला केवळ एकटा गायक दिसतो मात्र ध्वनीफितीच्या व्दारे वादयवृंदाची साथसंगत घेतली जाते व ट्रॅकसॉंग गाईले जाते. हे संपूर्ण संगीत स्टुडिओत रेकॉर्ड केलेले असते व ओरिजिनल संगीताचा आभास निर्माण केला जातो. ज्यातुन श्रोत्यांना आनंद घेता येतो.

5) **'रियालिटी शो'** – आजच्या वैज्ञानिक काळात दूरचित्रवाणीवरिल खाजगी वाहीन्यांची जणू स्पर्धा सुरु झालेली आहे. त्यात सोनी, झी, स्टार टिव्ही व मराठी वाहिन्यादेखील सुगम संगीत, चित्रपट संगीत, नृत्य स्पर्धा या रियालीटी शो या मथळयाच्या अंतर्गत आयोजित करतात व या कार्यक्रमाला प्रसिध्द अभिनेते, अभिनेत्री, संगीतकार परिक्षक म्हणून आसनस्थ होतात व त्यामुळे या कार्यक्रमाला रसिक गर्दी करतात.

'21 व्या शतकातील संगीत क्षेत्रातील एक नविन संकल्पना जागतिकीरण' –

इतिहासाचा विचार केला तर असे लक्षात येईल की, पायथा गोरस च्या सप्तकाची निर्मिती हाच जागतिकीकरणाचा पहिला टप्पा मानावा लागेल. संगीतातले मूळ स्वरसप्तक ज्याला 'बिलावल' थाट

प्रचलनात ते पायथा गोरीयनच्या स्केलच्या अगदी जवळ आहे. आधुनिक औद्योगिकरण, शहरीकरण व जागतिकीकरण याचा परिणाम संपूर्ण देशावर व जगावर झाला. भौतिकशास्त्र, ईलेक्ट्रॉनिक्स, कॉम्प्युटर यांच्या नवनिव शोधाने संगीत या कलेवरही त्याचा परिणाम झाला. स्पुल, कॅसेटस, सिडी, डिव्हीडी, पेनड्राईव्ह, हार्डडिस्क, मोबाईल, स्मार्टफोन, स्मार्टटिव्ही, यासारख्या वैज्ञानिक उपकरणांचा शोध लागला. घरोघरी ही साधने लोकप्रिय व उपलब्ध झाली. कॉम्प्युटर व मोबाईल चा वापर वाढला, इंटरनेटच्या सहाय्याने संपूर्ण विश्व जणू जवळ आले. समाजातील गती वाढली व समाज गतिशील झाला. शिक्षणाच्या विविध पध्दती अस्तित्वात आल्या, संगीत कला प्रसिध्दीच्या उच्च शिखरावर गेली. संगीत विद्यालये व विद्यापीठे अस्तित्वात आली. संगीत मासिके प्रकाशित होवु लागली, ईलेक्ट्रॉनिक्स वाद्यांची निर्मिती झाली. ही वाद्ये वाजवायला सोपी व कॅरी करण्यास सुटसुटीत असल्याने ओरिजिनल वाद्ये मागे पडतात की काय? अशी भीती वाटु लागली. भारतीय संगीताचा परिणाम केवळ मानवावरच नव्हे तर पशू-पक्षांवर व वनस्पतीवर होतो याचे शोध सुरु झालेले आहेत.

निष्कर्ष –

वैज्ञानिक प्रगतीचा परिणाम संगीतावर होत आहे व या प्रक्रियेतुनच रिमिक्स, फ्युजन व रियालिटी शो सारख्या सांगीतिक विधा जन्म घेत आहेत. व त्याचे स्वागत 21 व्या शतकात नविन पिढी करीत आहे. हे आमच्या काळातील मोठे परिवर्तन आहे.

आधुनिक काळात औद्योगिकरण, शहरीकरण, जागतिकीकरण यामुळे सर्व क्षेत्रात परिवर्तन होवू लागले. संगीतात धृपद व ख्यालाची असलेली घराणी लोप पावु लागली, विद्यालयीन शिक्षणप्रणाली व सामुहिक शिक्षणाकडे समाजाचा व संगीताचा कल वाढू लागला. ICT व्दारे संगीत शिक्षणाचा एक नविन प्रवाह व एक नविन दिशा वेगळया प्रवासात विकसीत होवु लागली याला एक शिक्षणाचे नवयुग म्हटल्यास वावगे ठरणार नाही. या नवयुगाच्या परिवर्तनामुळे संगीत साधकाला व अभ्यासकाला अनेक संधी प्राप्त होत आहेत सोबतच काही आव्हानांना देखील समोर जावे लागत आहे. तरी देखील संगीताचा विकास अव्याहतपणे सुरुच राहणार आहे.

संदर्भ ग्रंथ सुची –

1. संगीत कला विहार, अंक एप्रिल-मे-जुलै 2010,
2. संगीत कला विहार, अंक मार्च 2005
3. भारतीय संगीत मे वैज्ञानिक उपकरणोका प्रयोग, डॉ. अनिता गौतम, कनिष्क प्रकाशन, नवी दिल्ली.
4. हमारा आधुनिक संगीत, डॉ. सुशिलकुमार चौबे, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लकनौ.
5. शिक्षण संगीत शिक्षणाच्या विविध पध्दती, पं.ना.द. कशाळकर
6. शास्त्रीय संगीत शिक्षा समस्याए व समाधान, डॉ. अलकनंदा पळनिटकर, अरुन पब्लीशिंग हाऊस, नवी दिल्ली.

SRJIS
www.srjis.com

IMPACT FACTOR (SJIF) 2021= 7.380 Online ISSN 2278-8808
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

APRIL - JUNE,2021, VOL - 10, ISSUE-47

Indian Social & Research Foundation Akola ,

ARTS COLLEGE MALKAPUR, AKOLA

(Accredited By NAAC With "B" Grade)
Department of Music & IQAC Organizing

In Collaboration with
Sharda Sangeet - Kala Academy Indore (M.P.)

One Day National E- Conference

Contribution of Modern Technology in Globalization & Development of Music & All Interdisciplinary Subjects

Editor-In-Chief
Asso. Prof. Dr. Yashpal D. Netragaonkar
MIT World Peace University School of Education, Kothrud, Pune

Editor
Dr. Gitali S. Pande
Principal , Head of Music Department, Arts College Malkapur, Akola (M.S.)

Co- Editor
Dr. Sunil B. Patake
Department of Music Arts College Malkapur, Akola (M.S.)

SCHOLARLY RESEARCH JOURNALS
S. No. 5+4/5+4, TCG'S, Saidatta Niwas, D-wing, Ph- II, 2nd Floor, F. No. 104, Nr. Telco Colony & Blue Spring Society, Dattanagar, Jambhulwadi Road, Ambegaon (BK), Pune - 411046,

CamScanner

MARATHI SECTION

Title & Author (S) Name	Page. No.
1. मराठी गझल गायकीचा उदगम व विकास डॉ. राजेश उमाळे	480-484
2. वाद्य वर्गीकरणाचे विस्तारीकरण व इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्ययंत्रांचा वर्गीकरणात अंतर्भाव प्र. डॉ. चंद्रकिरण घाटे	485-494
3. संगीताच्या विकासात आणि जागतिकीकरणात आधुनिक तंत्रज्ञानाचे योगदान डॉ. सौ. सेहल सुनील डहाळे	495-498
4. समर्थ रामदासांचे बहुआयामी कार्य व सांगीतिक व्यासंग डॉ. मनोजकुमार श्रीडोपंत देशपांडे	499-511
5. जागतिकीकरण व भारतीय स्त्रियांच्या शैक्षणिक व सामाजिक समस्या डॉ. आशा एम. धारस्कर– भावसार	512-516
6. संगीताचे वैश्विकीकरण आणि विकासात, आधुनिक तंत्रज्ञानाचे योगदान प्र. डॉ. अस्मिता नानोटी	517-520
7. वाचनाच्या सवयी : समस्या आणि उपाय प्रा. डॉ. गव्हाणे एम. पी.	521-525
8. आधुनिक जगतातील संगीत वाद्ययंत्रांचा विकास व आवश्यकता संगीता श्याम पवार	526-530
9. संगीताच्या विकास आणि वैश्विकरणात आधुनिक तंत्रज्ञानाचे योगदान डॉ. नेत्रा तेल्हारकर	531-533
10. शिक्षणात तंत्रज्ञानाची भूमिका आणि ऑनलाईन शिक्षण पद्धती डॉ. पदमानंद मनोहर तायडे	534-540
11. संगीत विकासामध्ये तंत्रज्ञानाचे योगदान प्र. डॉ. प्रतिभा वं. पवित्रकार	541-545

CamScanner

Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL SPECIAL ISSUE APR-MAY, 2021, VOL- 8/65

वाद्य वर्गीकरणाचे विस्तारीकरण व इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्ययंत्रांचा वर्गीकरणात अंतर्भाव

प्रा. डॉ. चंद्रकिरण घाटे

एम.ए., एम.फील, पीएच.डी. (संगीत), असोसिएट प्रोफेसर आणि संगीत विभाग प्रमुख, श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय, पुसद मो.नं. ८७६६७७४४१४ Email ID – crghate@gmail.com

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :–

आजचे युग '२१' वे शतक हे 'वैज्ञानिक युग' आहे, कॉम्प्युटर युग आहे. विज्ञानाच्या प्रगतीची झेप कल्पनेपलीकडे म्हणजे पृथ्वीच्या पलीकडे इतर ग्रहांपर्यंत जाऊन पोहचली आहे. अशातच 'भारतीय संगीत' देखील विज्ञानाच्या नवनवीन शोधांपासून वेगळे राहू शकले नाही. इलेक्ट्रॉनिक्स आणि कॉम्प्युटर च्या या आधुनिक युगात वैज्ञानिकांच्या नवनवीन शोध–प्रशोध 'ध्वनी व आंदोलन' यांचे माध्यमातून नवीन तंत्र (Techonolgy) चा उपयोग करून संगीत क्षेत्रात नवीन वाद्ययंत्राची निर्मिती केली आहे. संगीत क्षेत्रातील ही मोठी क्रांती म्हणता येईल, ज्यामुळे संगीत क्षेत्रातील कलावंत, रियाझी, अभ्यासक, साधक, स्वर–ताल साधक, गायक–वादक–नर्तक, विद्यार्थी–शिक्षक, अध्ययन–अध्यापन प्रक्रियेतील घटक स्वरवाद्य व तालवाद्याचे साथीदार, स्वतंत्र वाद्यवादक या सर्वांसाठी उपयुक्त अशी साथीची इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्यये उपलब्ध झाली आहे यामध्ये –

इलेक्ट्रॉनिक्स स्वरमंडल, सूरपेटी, तालमाला, तबला सूरसंगत, इलेक्ट्रॉनिक्स तानपुरा, सुंदमाला किंवा सुगतमाला, इलेक्ट्रॉनिक वीणा इ. या वाद्ययंत्राची निर्मिती म्हणजेच आधुनिक काळातील संगीत क्षेत्रास प्राप्त झालेले एक वरदानच होय. आज या वाद्यांची लोप्रियता असिमित वाढली आहे. म्हणून या वाद्यांच्या वर्गीकरणाची समस्या उदभवली आहे. ती सोडविणे अनिवार्य आहे.

वाद्य व वाद्यवर्गीकरण विकासाचे टप्पे –

वाद्य संगीताची कल्पना हळूहळू विकसित होत गेली. प्रारंभीच्या कालखंडात मानवाने आपल्या देहाचा वापर करून म्हणजे टाळी वाजविणे, जमिनीवर पाय आपटणे, कुल्ले थोपटणे, अशा क्रियांव्दारे संगीताचा निर्मितीत हातभार लावला असावा. वेदकाळात हाताच्या पंजावरील बोटांवर ऋचांचे गायन करीत. त्याला

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

CamScanner

'गात्रवीणा' म्हणत. उदरनिर्वाहासाठी शिकारीकरिता वापरण्यात येणारे शस्त्र म्हणजे धनुष्यबाण व पाषाणयुगातील दगडी हत्यारे यापासुन घनवाद्ये व तंतुवाद्याची निर्मिती झाली. शिकार केलेल्या जनावरांच्या कातडयातून चर्मवाद्यांची कल्पना पूढे येऊन तालवाद्यांची निर्मिती झाली असावी.

सिंधू संस्कृतीतील वाद्यांचे नमूने मुद्रांचे स्वरूपात प्राप्त झाले आहेत. त्यानंतर वेदकाळातील वाद्यकल्पना खूप विकसित स्वरूपात पूढे येते. अनेक प्रकारच्या वीणा (तंतुवाद्ये), फुंकुन वाजविण्याची वाद्ये वेणू, गोधा, नाळी, तृणव, नलिका, (सुषिर वाद्ये), भूदुंभी, केतूमत यासारखी चर्मवाद्ये (अवनग्ध), डमरू व ढोलकी सारखी वाद्ये, झांज, नगारा (घनवाद्ये) ही वाद्ये वेदकाळात अस्तित्वात होती. या वाद्यांच्या रचनेनुसार त्यांचे वरिलप्रमाणे गट करून पं. भरतमुनींनी 'नाटयशास्त्र' ग्रंथाच्या २८ व्या अध्यायात प्रथमतः 'वाद्यांचे वर्गीकरण' केले भारतीय संगीतात भरतमुनींच्या 'वाद्य वर्गीकरणाला' नंतरच्या सर्वच ग्रंथकारांनी प्रमाण मानले आहे. नंतर मध्यकाळात काही वाद्ये विकसित झाली. अनेक वाद्यांची निर्मिती झाली. जेसे – सितारा, तबला, व्हायोलीन, संतूर परंतु वाद्यांच्या वर्गीकरणात या सर्व प्रचलीत वाद्यांना आजतागायत निर्विवादपणे समाविष्ठ करून घेण्यात आलेले आहे. व आजही भरत मुनिंचे 'वाद्य–वर्गीकरण' प्रचलीत स्वरूपात कायम आहे.

पूढे अधुनिक काळात 'चित्रपट–संगीत' ऑर्केस्ट्रा सारखी परिवर्तने संगीतात आली व लोकप्रिय झाली. यामुळे भारतीय वाद्यांमध्ये पाश्चिमात्य वाद्यांचा समावेश ही भारतात होऊ लागला. विशेषतः ऑर्केस्टामुळे ॲकॉर्डियन, कोंगो, वोंगो, ड्रमसेट, क्लेरेनेट, सेक्सफोन, ट्रंपेट, गिटार इ. वाद्ये प्रचलित झाली. ज्याचा उपयोग वृंदवादनात होतो. वृंदवादन व वृंदगान याची भारतात प्राचीन परंपरा आहे. याला 'कुतप' म्हणत असत. नाटयशास्त्रात याचा उल्लेख आहे. अजिंठयामधील शिल्पांमध्ये व पेंटींग्ज मध्ये याचे प्रमाण पहावयास मिळते.

अलीकडे 'जुगलबंदी व फ्युजन' हया कल्पनाही वाद्यांचे माध्यमाने साकारून भारतीय कलावंतांनी भारतातच नव्हे तर संपूर्ण विश्वभरात सादर केल्या. जगभरातल्या रसिकजनांनी व संगीतप्रेमींनी त्याला भरभरून दाद दिली व भारतीय संगीत जगाच्या कनाकोपऱ्यात जाऊन पोहचले. याचे भरपूर श्रेय पं. रविशंकर, उ. झाकीर हुसेन, उ. अली अकबर खॉ, पं. हरिप्रसाद चौरासिया, पं. शिवकुमार शर्मा या कलावंतांना आहे. ही कीमया भारतीय संगीताची आहे.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

CamScanner

वाद्यांचे वर्गीकरण

(पं. शारंगदेव–संगीत रत्नाकर)

प्राचीन वाद्यांचा नामोल्लेख

तंतूवाद्ये	सुषिरवाद्ये (वायुवाद्ये)	अवनध वाद्ये (चर्मवाद्ये)	घनवाद्ये
ब्रम्हवीणा, किन्नरी, विपंची, जेष्ठा, चित्रा, त्रिशती, पिनाकी, घोष, परिवादिनी, मधुस्वरी, वीणा (अकरा प्रकार) कांडवीणा, गोषा, रावणी, रावणास्त्र, सरस्वती वीणा नारदी वीणा, एकतारी कर्करी वीणा, कौंपशीर्षवीणा, बाण वीणा, धनुर्वीणा, मत्तकोकीला, एकतंत्री वीणा, नकूल, त्रितंत्री, चुर्तंतंत्री वीणा, आलपिनी वीणा.	वंशी, मुरली, स्वनाभि, तितरी, कवका, माधुरी, अलगूज, वेणू, शंख, बीन, नागीण, पुंगी, नरसिंघा गोषा नाळी तुणव, नालिका	पुष्कर (अठरा प्रकार), भूदुंदुभि, भेरी, पटह, दुंदुभि, पद्माव, डिमडिस, त्रिपुस्कर, मर्दव, आलिंग्य, दुर्दर, हरितकी यवाकृति, गोपुच्छ, डफ, नगारा, मृदंग, नलचौघडा, खंजिरी, कुडकुडे, खडडावाद्य, ढोल, भूरज, मंडुक, चेलिका, आडंबर, केतूमन, द्रवप दक्षिणी तालवाद्ये – तावील, घटम, अलगोझा चेंदा, उरुमी, फिरकिट्टी, एकडवक्का, उडक्क्कू.	करताल, जयघंटा, कर्पुरी, चिमटा, झझंर, रौद्रतरंग.

इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्यांची रचना व उपयुक्तता –

प्राचीन व अर्वाचीन काळापासूनच संगीतामध्ये वाद्यांचा प्रचार होता. याची उदाहरणे सिंधू संस्कृतीतील चित्र, मुद्रा व शिल्पावरून दिसून येते. देवी–देवतांची चित्रे व मुर्त्यांवरून (शिल्प) संगीतातील वाद्यांची प्राचीनता सांगता येईल उदा. महादेवांचा शंख, श्रीकृष्णाची बांसरी, देवी सरस्वतीच्या करकमलातील वीणा, गणेशाचा मृदंग, नारदमुनींची एकतंत्री वीणा, गंधर्वांचे गायन, अप्सरांचे नर्तन, मोहंजोदडो–हडप्पा या सिंधू संस्कृतीतील वाद्येशिल्प, अजिंठा–वेरूळची लेणी व पेंटींग्ज ही सर्व पारंपारीक वाद्यांच्या प्राचीनतेची प्रमाणे होत.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

१) 'सूरपेटी' – उत्तर भारतात या वाद्याचे प्रचलन गेल्या २० ते २५ वर्षापासून आहे. आज वाद्यसंगीतात सतार, सरोद, व्हायोलीन, वीणा, संतूर ही वाद्ये साथीची व मुख्यत्वे स्वतंत्र वादन (Solo) करण्यीच वाद्य होत. आधार स्वर देण्याच्या कार्यासाठी 'सूरपेटी' या वाद्याचा उपयोग होतो, षडज–पंचम किंवा षडज मध्यम किंवा षडज–निषाद या स्वरांचा कायमस्वरूपी वाजविण्यासाठी रागनियम धर्माप्रमाणे तंबो–यासोबतच या इलेक्ट्रॉनिक्स सूरपेटीचा उपयोग होतो. त्यासाठी इतर स्वर वाजविण्यासाठी साथीदाराची आवश्यकता नसते. स्वरपेटी विद्युत किंवा बॅट्रीचे सहाय्याने स्वत: अखंडीत वाजते. स्वर वाजविण्याकरिता वेगळया वादकाची आवश्यकता नाही.

२) 'तालमाला' – 'तालमाला' एक भारतीय तालवाद्य आहे. ज्याव्दारे तबल्यावर वाजणारे हिंदुस्थानी संगीतातील सर्व तालांचे ठेके कोणत्याही लयीत वाजविल्या जातात. हे ठेके पाहिजे त्या स्वरांत 'Tune' करून वाजविल्या जाते. 'तालमाला' हे 'स्वयंभू' वाद्य आहे. एकदा या वाद्याला Set केले तर 'बॅट्रीच्या' सहाय्याने ते निरंतर वाजते या ठेक्यांचा ध्वनि प्रोसेसर च्या सहाय्याने इलेक्ट्रॉनिक्स टेक्नॉलॉजी च्या माध्यमातून या वाद्ययंत्राव्दारे आपल्याला स्पिकर्स मधून ऐकायला येतो असे अनेक हिन्दुस्थानी ताल या वाद्यामध्ये 'Programe' फिड करून ठेवलेले आहेत. जवळ–जवळ १०० ताल या 'Programe' मध्ये आहेत. ० ते ९ अशी संख्येची बटने दिलेली आहेत. आणि ताल क्रमांक नावानिशी यादी त्यावर वरच्या भागाला लावलेली जो ताल पाहिजे त्याचा क्रमांक दाबला असता तो ताल वाजू लागतो. 'Tune' चे बटन असल्याने आपल्याला प्राप्त होणारा तालाचा ध्वनि द्रुत व अतिद्रुत अशा पांचही प्रकारच्या लयीमध्ये ठेका वाजण्याची सोय या वाद्यात उपलब्ध आहे. हे वाद्य विद्युत किंवा बॅट्री च्या Power वर कार्य करीत असल्याने तबला वादकाची आवश्यकता या 'वाद्ययंत्रा' करीता नाही आहे. हे वाद्य जरी 'ओरिजिनल' तबल्याची बरोबरी करू शकत नसले तरी 'अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया' व रियाजाला अतिशय उपयुक्त असे वाद्य आहे.

३) 'तबला सूरसंगत' – इ.स. १९९० मध्ये 'तबला सरसंगत' या वाद्याची निर्मिती झाली हे वाद्य देखील 'तबला' साथीदाराचे काम करते. या वाद्याचा ध्वनि हा 'तबला' वाद्याचा ध्वनिशी बराच मिळता जुळता आहे. या वाद्यात २६ हिंदुस्थानी ताल पाहिजे त्या स्वरात व लयीत वाजविण्याची सोय केलेली आहे. दादरा, केहरवा, त्रिताल, रूपक, झपताल, एकताल, झुमरा, दिपचंदी, आडाचौताल, धमार, पंजाबी भजन धुमाळी इ.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

CamScanner

सारख्या तालांना 'Programe' मध्ये समाविष्ठ केलेले आहे. ज्या विभन्न लयी Bass व Trible मध्ये Blance Tone मध्ये वाजतात.

या वाद्यामुळे संगीत शिकणारे विद्यार्थी संगीताचा क्रियात्मक अभ्यास करू शकतात. तालांचा अभ्यास करू शकतात. तालाच्या संगतीचा प्रत्यक्षदर्शी अनुभव घेऊ शकतात. कलावंत रियाश करू शकतात. तबला वादकाच्या अनुपस्थितीत कलेचे प्रदर्शन देखील करू शकतात.

४) **'इलेक्ट्रॉनिक्स तानपुरा'** – 'तानपुरा किंवा तंबोरा' हे हिन्दुस्थानी संगीतातील आधार स्वरवाद्य आहे. ज्याची संगीतातील सर्वच साधकांना कलावंतांना शिक्षकांना व विद्यार्थ्यांना नितांत गरज असते. 'तानपुरा' हे चार तारांचे वाद्य आहे. कलावंताला ज्या स्वरात प्रदर्शन करावयाचे असते व निवडलेल्या रागाच्या वर्ज्यस्वरांचा विचार करून त्याला पसासासा, मसासासा, निसासासा अशा तिन पध्दतीप्रमाणे स्वरांमध्ये मिळवितात व वाजवितात व त्या आधार स्वरांव्दारे कंठगायन व वाद्यवादनाचे सादरीकरण केले जाते.

Original तंबोरा हे वाद्य अतिशय नाजूक वाद्य व अनिवार्य वाद्य आहे. या वाद्यामध्ये पोकळ भोपळा व लाकडी पोकळ चार ते पांच फुट लांब दांडी व त्यात तारपिळण्याकरिता चार खुंट्या व त्याला पोलादी व पितळी अशा चार तारा लावलेल्या असतात व वाजविण्याकरिता अशा 'Tanpura Player' प्रकारची रचना 'तंबोरा' किंवा 'तानपुरा' या वाद्याची असतो तानपुरा सांभाळणे अत्यंत जिकरीचे काम आहे.

वरिल सर्व गोष्टी लक्षात घेऊन वैज्ञानिकांनी 'इलेक्ट्रॉनिक तानपुरा' या वाद्याची निर्मिती केली आणि Portable Model असणारा हा तंबोरा आकाराने लहान असतो. लांबी ९ ते १० इंची, उंची ६ इंच व रूंदी ३ इंच असणारा हा प्लॅस्टीक किंवा वा चौकोनी डबा आहे. जो विद्युत Battary किंवा च्या Power वर कार्यरत असतो. वरच्या बाजूला on/off बटन, तीन मध्य व मंद षडजाच्या तारा स्वरांमध्ये मिळविण्यासाठी तीन वेगवेगळी बटने व मध्यम, पंचम आणि निषाद यापैकी एक स्वर वाजविण्यासाठी वेगळे बटन असते. ज्याव्दारे तंबोऱ्याच्या चारही तारा पाहिजे त्या स्वरात वाद्य मिळवून त्याचा प्रयोग करू शकतो. मध्य षडजापासून तार षडजापर्यंत किंवा आवश्यक त्या Scale मध्ये हे वाद्य मिळविण्याची व्यवस्था या वाद्यात आहे. या व्यतिरिक्त 'Valume' चे बटन असल्याने वाद्याचा loadness कमी जास्त करू शकतो. तसेच 'Fine tunning' च्या बटनाव्दारे स्वरातील सुक्ष्म फरक देखील update होतो व चार तारांच्या छेडण्यामधील speed म्हणजे गति सुध्दा कमी अधिक करता येते. अशाप्रकारची रचना व सोय

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

CamScanner

या वाद्यात करण्यात आलेली आहे आणि या वाद्यामध्ये जमेची बाजू अशी तानपुरा वाजविण्यासाठी वेगळ्या साथीदाराची आवश्यकता नसते. त्यासाठी हे एक स्वयंभू वाद्य आहे.

५) 'सुंदमाला किंवा सूगतमाला' – सुंदमाला किंवा सूगतमाला हे इलेक्ट्रॉनिक वाद्य एक लहरा किंवा धून देणारे वाद्य आहे. या लहरांचे सहाय्याने 'तबला वादक' तबला सोलो (Solo) किंवा स्वतंत्र तबलावादनाचे कार्यक्रम करित असतात. अशा वादकांना व कलावंतांना हे अतिशय महत्वाचे व उपयुक्त वाद्य आहे. ज्यामुळे कायदे, परन, चक्धार सारखे जटिल बोल आड–विआड–कुआड सारख्या क्लिष्ट लयकारीत बसविणे व त्याचे सादरीकरण करणे हा एक प्रकारे साधल्या जाणारा प्रयोगिक हिशेब सिध्दीस नेण्यासाठी वेगळ्या सहवादकाची भूमिका 'सुंदमाला' या वाद्याने स्विकारून यशस्वीपणे पार पाडली आहे. कारण या वाद्याची लय ही अतिशय तंतोतंत असते. त्यात Accuracy असते म्हणून हे वाद्य तबलावादकाकरिता वरदानच ठरले आहे.

त्याच प्रमाणे नृत्याच्या प्रयोगशीलतेकरिता देखील हे एक उपयुक्त वाद्य आहे. कारण त्याठिकाणी देखील आमद तोडे व लयकारी या करिता आधार लयीसाठी एक उपयुक्त वाद्य आहे. या वाद्याची लय accurate असते.

या वाद्यात '२५'ताल व '१४७' लहरे असा Program फिड आहे. 'वादन व नर्तन' क्षेत्रात या वाद्याची उपयोगिता अपार आहे.

६) 'स्वरूपिनी' (इलेक्ट्रॉनिक स्वरमंडल) – 'स्वरूपिनी' हे इलेक्ट्रॉनिक वाद्य म्हणजे भारतीय वाद्यामधील 'स्वरमंडल' सारखे वाद्य होय. हा एक लाकडी चपटा Box असून त्याला वरच्या बाजूला '२४' तारा तीन सप्तकामध्ये वाजण्याकरिता २४ खुटयामध्ये ताणलेल्या असतात. त्याबाजूला त्या तारांना वेगवेगळया रागांमध्ये स्वरात मिळविण्यासाठी (Tune) २४ बटने दिलेली आहेत. याला Volume, Tone, Finetune अशा प्रकारची बटने दिलेली आहेत. यामधील प्रत्येक तार ही पांच स्वरांच्या Range मध्ये Tune होते. त्यामध्ये Memory save करण्या ची देखील सोय आहे. हे वाद्य विद्युत व बॅट्री power वर कार्यरत आहे. बाजुच्या अरूंद पट्टीवर on/off, volume, tone, fine tunning अशी बटने दिली असून Disply सुध्दा दिलेला असतो. या वाद्यात्यात अनेक राग Tune करता येतात व अनेक राग Memory मध्ये save करून ते केंव्हाही वाजविता येतात. यामुळे वेळेची बचत होते.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

CamScanner

वृंदगान व वृंदवादनात उपयुक्त इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्य –

१) **'सिंथेसाइजर' –** हे वाद्य आज अतिशय लोकप्रिय वाद्य आहे. ऑकेस्ट्रॉमध्ये हे अनिवार्य वाद्य आहे आणि या वाद्याच्या वादकांची संख्या देखिल खुप वाढली आहे. या वाद्याची विशेषता म्हणजे या वाद्यतुन अनेक वाद्यांच्या आवाजाचा आभास हुबहु निर्माण केला जाऊ शकतो. या एकाच वाद्यातुन अनेक वाद्यांचे आवाज स्टोअर केलेले असल्याने त्या त्या वाद्याचे बटन दाबल्यावर त्या वाद्याचे आवाज प्रदर्शित होतात. त्यामुळे एकाच वाद्यातुन अनेक वाद्यांचे आवाज निघत असल्याने अनेक वाद्यांचे काम एकच वाद्य करते. त्यामुळे याची लोकप्रियता वाढली आहे. अनेक आकारांची वाद्ये उपलब्ध आहेत. परंतु मोठया आकाराची वाद्य जरी महागा असली तरी दर्जेदार असल्याने त्याची मागणी जास्त आहे. Casio, Yamaha, Roland हया कंपनी ही वाद्य निर्माण करतात.

२) **'आक्टोपॅड' (Octopad) –** हे एक तालवाद्य आहे. यातुन अनेक बिटस् तयार केल्या जाऊ शकतात व वाजविल्या जाऊ शकतात २/१ फुट असे चौरस वाद्य आकाराने असते. ते काडींने वाजवितात. या वाद्यातुन ड्रम, कोंगो, बोंगो, ज्वारसेट अशा अनेक वाद्याचे आवाज सादर होतात. आज हे वाद्य पाश्चिमात्य घरतीचे असले तरी याची लोकप्रियता व उपयोगीता भारतात खुप वाढली आहे.

इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्ययंत्रांचा प्रचार व प्रसार –

'१९९०' च्या आसपासचा काळ हा इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्यांच्या निर्मितीचा काळ होय. त्यानंतर आजपर्यंतच्या २५ ते ३० वर्षात या वाद्यांचा इतका प्रचार व प्रसार झाला की आज घराघरांमध्ये इलेक्ट्रॉनिक्स तंबोरा, तालमाला व सिंथेसाइजर ही वाद्ये सहजपणे उपलब्ध असलेली दिसतात व त्याचा दैनंदिन वापरही संगीत क्षेत्रात जास्त प्रमाणात होत आहे.

बेंगलोर चे निवासी श्री. राजनारायण यांची 'Radal' कंपनी, 'रागिनी', मुंबईची 'श्रुती' अशा विविध कंपन्या या वाद्यांच्या निर्मितीत उतरल्या आहेत व स्पर्धा करू लागलया आहेत संगीत शिकणारे विद्यार्थी, शिक्षक साधक, गायक, पंडीत, कलावंत यांच्याव्दारा या वाद्यांना वापराचे व उपलब्धतेचे प्रमाण खूपच वाढले आहे. याची काही कारणे पुढे देता येतील. –

१) ही वाद्ये आकाराने फार मोठी नाहीत व वजनाने हलकी (light & portable) आहे.

२) प्रवासात ने–आण करण्याकरिता सोईची आहेत.

३) विद्युत च्या Power वर ही वाद्ये कार्यरत असल्याने ती कुठेही वापरणे सोईचे आहे.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

CS CamScanner

४) साधकाला व कलावंतांना जेव्हा वेळ मिळेल त्यावेळी ही इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्ये साथ करण्यास तत्पर असतात.

५) 'Tunning करणे सोपे असल्याने कमी वेळात Tune होतात. त्यामुळे वेळेची बचत होते. व Tunning क्लिष्टतेतून मुक्ती मिळते.

६) ही वाद्ये किंमतीच्या तूलनेत स्वस्त व सहजसुलभ असल्याने मागणीचे प्रमाण अधिक आहे.

७) अध्ययन अध्यापन प्रक्रियेतसाठी अत्यंत उपयोगी आहे.

८) या वाद्ययंत्रांमुळे वादकांची आवश्यकता भासत नाही, कारण ही वाद्ये स्वयंभूपणे अव्याहत वाजतात.

९) 'तालमाला' सारखे तालवाद्य तंतोतंत लय देण्याचे उत्तम कार्य करते. या वाद्याच्या लयीमध्ये देखील 'Accuracy' असते. कारण या वाद्यांनी दिलेली लय हालत नाही.

वरिल प्रमाणे प्रस्तुत वाद्ये संगीत दृष्ट्या ही फायदयाची व उपयोगी असल्याने याचा प्रचार व प्रसार खूप प्रमाणात झालेला आहे. वीस ते पंचवीस वर्षापुर्वीच्या निर्मितीत व सद्यास्थितीत असलेल्या वाद्यांमध्ये निश्चितपणे दर्जा वृध्दींगत झालेला आहे, पुढे आणखी होईल ही आशा आहे. आज मोठमोठे कलावंत देखील कार्यक्रमातही (शास्त्रीय/ उपशास्त्रीय/सूगम) इलेक्ट्रॉनिक्स तानपुरा हे वाद्य उपयोगात आणतात. अप्रत्यक्षपणे या वाद्यांना सर्व स्तरांतील रसिक कलावंतांनी आपलेसे केले आहेत हे प्रमाणही दिवसेंदिवस वाढत आहे.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

CamScanner

वद्यवर्गीकरणाचे विस्तारीकरण (पंचवर्ग वर्गीकरण) इलेक्ट्रॉनिक्स, वाद्यांचा अंतर्भाव

वर्तमान कालीन नामोल्लेख, (इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्ये व इतर वाद्ये)

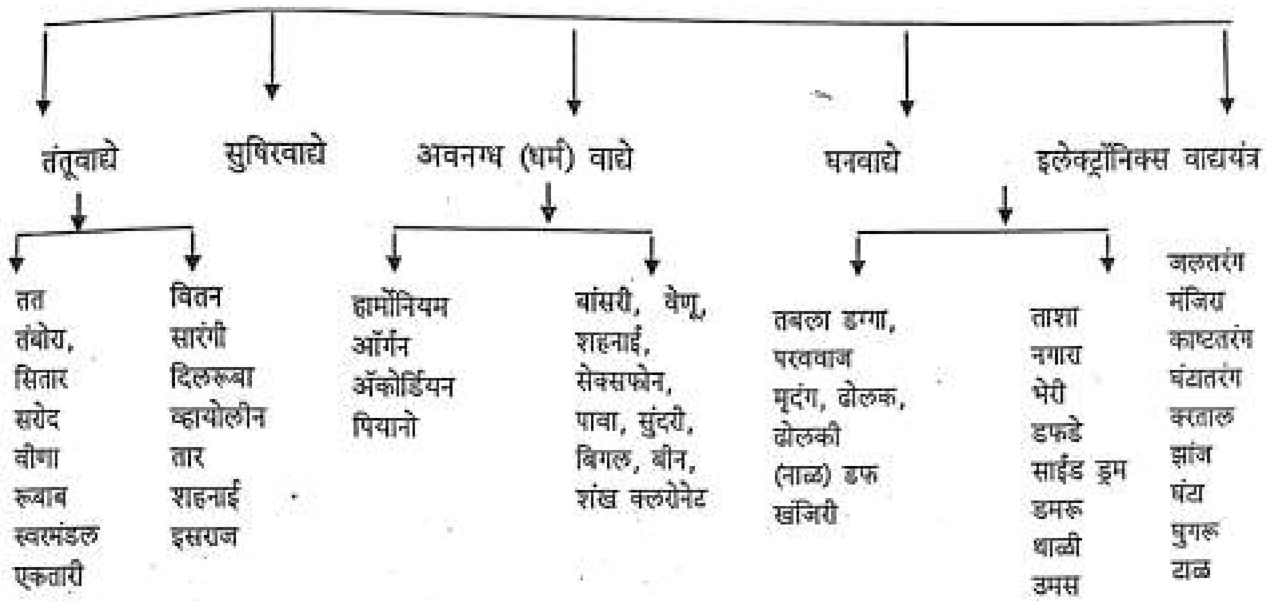

निष्कर्ष —

आजच्या टेक्नॉलॉजीच्या काळात इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्य आज प्रसिध्दीच्या शिखरावर आहेत. म्हणून या वाद्यांचे वर्गीकरण करणे आज काळाची गरज झालेली आहे. त्याकरीता परंपरागत असणाऱ्या वाद्यांच्या चतुर्विध वर्गीकरणात आज एक वर्ग वाढवून वाद्यांचे पंचगणिक वर्गीकरण करणे अनिवार्य झालेले आहे व वर्गीकरणाच्या पाचव्या वर्गात इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्यांचा समावेश करण्यात यावा ही आजच्या विज्ञानयुगातील सांगीतिक अनिवार्यता आहे. याला दुसरा पर्याय नाही. म्हणून ही नवीन संकल्पना मांडणे हेच माझ्या या शोधपत्राचे ध्येय आहे.

संदर्भ ग्रंथ सूचि —

अ.क्र.	ग्रंथनाम	लेखक	प्रकाशक	पान क्रं.
१	भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणो का प्रयोग	डॉ. अनिता गौतम	कनिष्क प्रकाशन नई दिल्ली	
२	संगीत कला विहार	राजर्षी कुमार	अ.भा.गां.मं.	फेब्रुवारी २०१६
३	संगीत कला विहार	सौ. वंदना	अ.भा.गां.म.	डिसेंबर २००८
४	संगीत कला विहार	डॉ. प्रकाश महाडिक	अ.भा.गां.म.	जुलाई १९९५
५	संगीत कला विहार	सुधा पटवर्धन	अ.भा.गां.म.	नाव्हेंबर २०१०

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

CamScanner

६	संगीत कला विहार	डॉ. रिता धनकर	अ.भा.गां.म.वि. मंडळ मिरज	जुलै २०१०
७	संगीत परिभाषा	श्री. ना. रातंजनकर	आडीयल बुक सर्व्हिसेस पुणे	पान. १२५–१३३
८	संगीत अलंकार शास्त्र व कला	मधूकर द. गोडसे	गोडसे वाद्यवादन विद्यालय, पुणे मधुरंजन प्रकाशन	पान. १२७–१३८
९	मार्गदर्शकन			
१०	हिन्दुस्थानी संगीत पध्दती : मूलतत्वे आणि सिध्दांत	प्रा. डॉ. बाळ पुरोहित	विजय प्रकाशन, नागपुर	२०९–२०१७
११	भारतीय संगीताचा इतिहास वर्ग ११ व १२	श्रजेंद्र देशमुख	महाराष्ट्रराज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडळ, पुणे	३६–४३
१२	संगीत विजयिनी	डॉ. नारायणराव मंगरूळकर	विजय प्रकाशन, नागपुर	१४२

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

CS CamScanner

RNI MAHMAR
36829-2010

ISSN- 2229-4929

Peer Reviewed

Akshar Wangmay

International Research Journal
UGC-CARE LISTED

Special Issue, Volume- III
Challenges of Higher Education in India to Compete with Global Level

July 2021

Chief Editor:
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

Executive Editor:
Dr. Purandhar Dhanapal Nare
Principal,
Night College of Arts and Commerce,
Ichalkaranji

Co-Editor:
Dr. Madhav. R. Mundkar

Address
'Pranav', Rukmenagar,
Thodga Road, Ahmadpur, Dist- Latur 413515 (MS)

CamScanner

AKSHAR WANGMAY

International Peer Reviewed Journal

UGC CARE LISTED JOURNAL

July 2021

Special Issue, Volume-III

On

CHALLENGES OF HIGHER EDUCATION IN INDIA TO COMPETE WITH GLOBAL LEVEL

Chief Editor
Dr. NanasahebSuryawanshi
Pratik Prakashan, 'Pranav, Rukmenagar, Thodga Road Ahmedpur,
Dist. Latur, -433515, Maharashtra

Executive Editor
Dr. Purandhar Dhanapal Nare
Principal
Night College of Arts & Commerce, Ichalkaranji.

Co-Editor
Dr. Madhav. R. Mundkar
Assistant Professor, Head Dept. of Hindi
Night College of Arts & Commerce, Ichalkaranji.

Editorial Board
Prof. M. R. Dandekar
Prof. Dr. S. L. Randive
Prof. Dr. G. B. Khandekar
Prof. Dr. D. B. Birnale
Prof. Dr. R. V. Sapkal
Prof. Dr. S. V. Chaple
Prof. S. R. Patankar

Published by-Dr. Purandhar Dhanapal Nare, Principal, Night College of Arts & Commerce, Ichalkaranji.

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors Price:Rs.1000/-

'Akshar Wangmay' UGC Care Listed, International Research Journal, ISSN: 2229-4929, July 2021, Special Issue, Volume-III
"Challenges of Higher Education in India to Compete with Global Level"

भारतीय शास्त्रीय संगीतातील अपवाद

प्रा.डॉ. चंद्रकिरण घाटे
श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय, पुसद
Email ID – crghate@gmail.com

सारांश

संगीत एक प्राचिन कला आहे. चौसष्ट कलांपैकी एक लोकप्रिय कला आहे. यात भारतीय संगीत हा एक विषय म्हणुन आज सर्व विद्यापीठात व महाविद्यालयात वैकल्पिक विषय म्हणुन शिकविला जातो. या कलेला शास्त्राची जोड आहे. संगीताचे आपले स्वतंत्र शास्त्र आहे. या शास्त्राला धरुन जे गायील वाजविले जाते त्याला शास्त्रीय संगीत अभिजात संगीत संबोधले जाते.

भरतमुनिंच्या नाट्य शास्त्रापासुन संगीत या कलेला शास्त्राची जोड लाभलेली आहे. त्यानंतर अनेक ग्रंथ रचले गेलेत ज्यामध्ये संगीत शास्त्राची चर्चा आजतागायत केलेली दिसते. परंतु काही मुद्दे नजर चुकीने किंवा विस्मरणाने जसेच्या तसे राहिलेत त्याला आपण अपवाद म्हणु शकतो. अशा मुद्दयांवर प्रकाश टाकणे करीता प्रस्तुत लेख. यामध्ये राग रचनेचे ग्रंथात सांगितलेले नियम व त्याचा प्रत्यक्षात प्रयोग व अपवाद यांचा ऊहापोह केलेला आहे.

प्रस्तावना :-

संगीत एक प्राचिन कला आहे. चौसष्ट कलांपैकी एक लोकप्रिय कला आहे. यात भारतीय संगीत हा एक विषय म्हणुन आज सर्व विद्यापीठात व महाविद्यालयात वैकल्पिक विषय म्हणुन शिकविला जातो. या कलेला शास्त्राची जोड आहे. संगीताचे आपले स्वतंत्र शास्त्र आहे. या शास्त्राला धरुन जे गायील वाजविले जाते त्याला शास्त्रीय संगीत अभिजात संगीत संबोधले जाते.

भरतमुनिंच्या नाट्य शास्त्रापासुन संगीत या कलेला शास्त्राची जोड लाभलेली आहे. त्यानंतर अनेक ग्रंथ रचले गेलेत ज्यामध्ये संगीत शास्त्राची चर्चा आजतागायत केलेली दिसते. परंतु काही मुद्दे नजर चुकीने किंवा विस्मरणाने जसेच्या तसे राहिलेत त्याला आपण अपवाद म्हणु शकतो. अशा मुद्दयांवर प्रकाश टाकणे करीता प्रस्तुत लेख. यामध्ये राग रचनेचे ग्रंथात सांगितलेले नियम व त्याचा प्रत्यक्षात प्रयोग व अपवाद यांचा ऊहापोह केलेला आहे.

राग रचनेचे नियम –

गणिताच्या सहाय्याने अनेक रागांची निर्मिती सहज शक्य आहे. हे असंख्य राग रसात्मकतेच्या कसोटीवर उतरणे शक्य नाही. म्हणुन रसानुकुल असे २०० ते ३०० राग प्रसिध्द आहेत. प्रतिभावंत गायक संगीतकार आपल्या प्रतिभेच्या सामर्थ्याने नवनविन रागरुपे निर्माण करतात. त्यापैकी कलात्मक व रंजकात्मक मुल्ये असणारे राग दीर्घकाळ टिकतात व बाकी लोप पावतात. रसवत्ता हा रागाचा मुळ गुणधर्म आहे. राग रचनेचे नियम व त्यात आढळणारे अपवाद खालील प्रमाणे -

अ) रागात कमीतकमी पाच स्वर असावेत असे सांगितले आहे. या नियमाला अपवाद म्हणुन -

१) मारवा हा थाटवाचक राग आहे. '१०' थाटांमध्ये मारवा थाटाचा अंतर्भाव आहे व 'मारवा' हा आश्रय राग आहे. या आश्रय रागातच पंचम हा स्वर वर्ज असुन या रागाची जाती 'षाडव-षाडव' अशी आहे. आश्रय रागात '७' स्वर असावे अशी अपेक्षा आहे. परंतु मारवा हा '६' स्वरांचा राग आहे.

२) पिलु, जयजयवंती, कालींगडा, कामोद हे राग संपुर्ण-संपुर्ण जातिचे मानले जातात. तरी देखील या रागांच्या आरोहात '१ ते २' स्वर वर्ज असलेले दिसते. म्हणुन हे राग मिश्रजातीच्या वर्गात येतात.

३) धुप व मालकंस यांसारखे औडव राग हे विस्तारक्षम राग आहेत. ज्यात मोठेख्याल व छोटेख्याल गायीले जातात व त्याचा विस्तृत गायकीसह विस्तार देखील केला जातो. याउलट '१२' स्वर लागणाऱ्या भैरवी रागात विलंबीतख्याल गायीले जात नाहीत तर ठुमरी व दादरा यांसारखे उपशास्त्रीय गीतप्रकार गातात.

४) प्रत्येक राग हा कमीत कमी '५' स्वरांचा असावा. '४' स्वरांच्या समुदायाला राग म्हणता येणार नाही. '७' स्वर लागणाऱ्या रागाला संपुर्ण, '६' स्वर लागणाऱ्या रागाला षाडव व '५' स्वर लागणाऱ्या रागाला औडव जातीचा राग संबोधले जाते.

१) राग भवानी हा बिलावल थाटजन्य राग आहे. ज्यामध्ये केवळ '४' स्वरांचा प्रयोग होतो आणि हा राग नियमानुसार राग संज्ञेस पात्र नाही. तरी देखील गायक त्याला गातात व रसिक चवीने ऐकतात. संपुर्ण, षाडव, औडव जातीत बसत नाही. म्हणुन याची जाती 'चौडव-चौडव' अशी आहे.

२) राग मालश्री हा '३' स्वरांचा राग आहे. या रागात षड्ज, गांधार व पंचम हे तिन स्वर लागतात. राग नियमानुसार याला अपवाद म्हणावे लागेल.

ब) कोणत्याही रागात षड्ज स्वर वर्ज करता येत नाही. कारण तो स्वरसप्तकाचा आधारस्वर आहे.

१) मारवा या रागात षड्ज हा आधारस्वर दुर्बल आहे आणि शुध्द धैवत व कोमल ऋषभ हे वादी-संवादी आहेत. मात्र षड्ज दुर्बल आहे.

क) षड्ज स्वराशी साधर्म्य असणारे स्वर मध्यम व पंचम आहेत. मध्यम व पंचम या दोन्ही स्वरांना एका रागात वर्ज करता येत नाही. पंचम वर्जीत रागात मध्यम स्वर आपल्या अंगभुत सौंदर्यामुळे उठुन दिसतो. ज्यामध्ये पंचम स्वर लागतो त्या रागात स्वरमेळ साधण्यासाठी तो पुढे येतो. तर पंचमवर्जीत रागात ती भुमिका पंचमाचे आसपासचे स्वर म्हणजे शुध्द मध्यम पार पाडतो

१) राग मारवा - या रागात शुध्दमध्यम व पंचम दोन्ही स्वर वर्ज असतात अशा रागात निषाद हा स्वर आपली भुमिका पार पाडतो आणि अशा रागाच्या गायनाच्यावेळी तंबोऱ्यातील पहिली तार निषाद या स्वरात लावतात.

ड) रागामध्ये लगतचे स्वर वर्ज करता येत नाहीत.

१) राग केदार - या रागाच्या आरोहात ऋषभ व गांधार हे दोन्ही स्वर दुर्बल आहेत. गातांना ते गाळले जातात व षड्ज या स्वरावरुन एकदम शुध्द मध्यम या स्वरावर जातात. उदा. सम या प्रमाणे करतात. अवरोहात मात्र ऋषभ या स्वराचा प्रयोग करतात. उदा. पमरेसा या प्रमाणे करतात.

CamScanner

२) मालकंस - या रागाची जाती औडव-औडव आहे. औडव जातीच्या रागात '२' स्वर वर्ज्य करतात. त्यापैकी एक पुर्वांगात असतो व दुसरा उत्तरांगात असतो. असे मालकंस रागामध्ये ऋषभ व पंचम हे दोन स्वर वर्ज्य आहेत. त्यापैकी एक पुर्वांगात आहे व दुसरा उत्तरांगात आहे.

क) कोणत्याही रागात एका स्वराची दोन रुपे (कोमल व शुध्द आणि शुध्द व तिव्र) एका मोगत एक प्रयोगीत नाहीत. कारण त्यामुळे सुसंवाद तयार होत नाही. त्यात बाधा येते. असा नियम असला तरी त्याला अपवाद आहे.

१) राग ललित - राग ललित हा दिवसाच्या पहिल्या प्रहरी गायील्या जाणारा लोप्रिय राग आहे. या रागामध्ये दोन्ही मध्यमाचा प्रयोग होतो. शुध्द मध्यम व तिव्र मध्यम हे दोन्ही स्वर एका पाठोपाठ एक या प्रमाणे उपयोगात आणतात. तरी या स्वराचा गोडवा म्हणजेच ललित रागाचा गोडवा अधिक आहे. म्हणुनच तो लोकप्रिय आहे. उदा. गिरिजन, मेमन, मेनरेसा.

२) ललित अंग - ललित हा एक रागांग राग आहे. ललित या रागाचे रागांग अनेक रागात दाखविले जाते. ज्यामध्ये मध्यम स्वराची दोन्ही रुपे एका पाठोपाठ एक येणे अनिवार्य आहे यालाच 'ललित अंग' असे म्हणतात.

अ) राग वसंत - या रागात ललित अंगाचा प्रयोग होतो. जो अतिषय कर्णमधुर आहे. वसंत राग तार सप्तकात गातात.

३) राग शुध्दसारंग - हा एक आधुनिक राग आहे. सारंग रागाचा प्रकार आहे. या रागात शुध्द मध्यम व तिव्र मध्यम या दोन्ही स्वराचा प्रयोग होतो. आरोहात केवळ तिव्र मध्यम तर अवरोहात शुध्द मध्यमाचा प्रयोग होतो. या रागातही तिव्र मध्यमा नंतर शुध्द मध्यम लावुन षडजावर येतात. हे काम मिंड काम होय.

४) राग भटीयार - या रागातही शुध्द मध्यम व तिव्र मध्यम अशा दोन्ही मध्यमाचा प्रयोग होतो. यामध्ये शुध्द मध्यमाचे प्रमाण अधिक असते तर तिव्र मध्यम अल्प लागतो. तार षडजाचा प्रयोग करावयाचा असल्यास आरोहा मध्ये तिव्र मध्यम लावुन मेळसां या प्रमाणे मारवा अंगाचे तार शडज लावतात.

ग) रागात भिन्न रसपरिपोशण क्षमता असली पाहिजे. राग गायन रसवत्तेच्या कसोटीला उतरले म्हणुन या नियमाचे बंधन असावे.

१) राग बहार - हा मौसमी राग आहे व उत्तरांग प्रधान आहे. व श्रृंगारी राग आहे.

२) दरबारी कानडा - हा संथ व गंभीर प्रकृतीचा आहे. षांत रसपरिपोशक राग आहे.

३) तोडी - तोडी हा थाटकर्ता राग आहे. '१०' थाटांमध्ये त्याला स्थान आहे व एक आश्रय राग आहे.

४) राग मियामल्हार - हा प्राचीन व गंभीर प्रकृतीचा मल्हार प्रकार आहे. तानसेन द्वारा या रागाचा अविष्कार झाला.

५) राग षंकरा व हमीर - हे दोन्ही राग संपुर्ण जातिचे राग असुनही या रागात अनेक स्वर दुर्बल आहेत. ज्याचा प्रयोग गातांना गायक करीत नाहीत. दोन्ही राग वीररस परिपोशक राग आहेत.

६) मालकंस - औडव जातीचा सर्व स्वर कोमल असलेला राग आहे. या रागातुन करुण रसाचे भाव प्रगट होतात.

७) सोहनी - उत्तरांग प्रधान राग आहे. ज्यामध्ये तार शडज अतिषय महत्वाचा स्वर आहे. या रागातुन श्रृंगार रस निर्माण होतो.

८) मारवा - मारवा हा देखील सोहनी चे स्वर असणारा राग आहे. परंतु मारव्याची प्रकृती गंभीर आहे व स्वभाव षांत त्यामुळे षांत रसपरिपोशक राग आहे.

९) भैरव - भैरव हा राग गंभीर प्रकृतीचा व षांतरस परिपोशक असलेला राग आहे.

१०) श्री - श्री हा प्राचीन राग आहे. या रागातुन श्रृंगाररस निर्माण होतो.

ड) रागातुन रसानुकुल भाव व्यक्त होण्यासाठी पुर्वांग व उत्तरांग संवाद समान असले पाहिजे. पुर्वांगातील स्वर विस्तार उत्तरांगातील स्वर विस्ताराला पुरक असला पाहिजे. रागाचे व्यक्तित्व श्रोत्यांच्या पुढे समुण समान उभे राहिले पाहिजे.

१) मारवा-पुरिया-सोहनी - तिन्ही राग हे सारख्या स्वराचे म्हणजे समप्रकृतिक राग आहेत. परंतु त्यातुन उत्पन्न होणारा भाव, रस व पुर्वांग व उत्तरांगातील संवाद यात भिन्नता आहे.

रागातील वादी-संवादी स्वराचे महत्व -

प्रत्येक रागात लागणाऱ्या स्वरांमधैकी वादि व संवादी स्वराचे महत्व असाधारण असते. वादी स्वरावरुन राग गायनाचा समय याचा अंदाज बांधता येतो. वादी-संवादी या स्वरांमध्ये संवादतत्व असावे. वादी स्वरामुळे रागाचे स्वरुप बदलते.

१) राग मारवा - या रागाचा वादिस्वर शुध्दधैवत असुन संवादी स्वर कोमल ऋषभ आहे. या दोन्ही स्वरांमध्ये संवादतत्व नाही. म्हणुन विद्वानांमध्ये मतभेद आढळतात.

२) राग पटदीप - या रागामध्ये तिव्र निषाद हा न्यास स्वर आहे. परंतु त्याला वादित्व दिलेले नाही. कारण वादी जर निषाद असेल तर संवादी स्वर गांधार असावा परंतु पटदीप रागात कोमल गांधाराचा प्रयोग होत असल्याने शुध्द निषाद व कोमल गांधार यामध्ये संवादतत्व नाहीत. त्यामुळे या रागाचा वादी-संवादी पंचम व शडज आहे.

रागनाम व राग स्वरुप -

संगीतामध्ये अनेक शुध्द राग, जोड राग, मिश्र राग आहेत. या जोड रागांना ज्या दोन रागांचा जोड असतो त्याचे शिर्षक दिले जाते. उदा. वसंत-बहार. परंतु काही राग असे आहेत त्यांच्या नावाप्रमाणे त्यात लागणारे स्वर नसुन वेगळे आहेत.

१) गोरख-कल्याण - नावावरुन हा एक जोड राग असल्यासारखे वाटते व गोरख आणि कल्याण या दोन रागाचे मिश्रण असावे असा अंदाज बांधतात. परंतु हा अंदाज या रागाचे स्वरुप पहाताच खोटा ठरतो. कारण गोरख हा एक स्वतंत्र राग आहे. यामध्ये कल्याण थाटाचे किंवा अंगाचे कुठलेही स्वर नाहीत. पण नाव मात्र गोरख-कल्याण आहे. या रागाच्या नावात सुधार करुन केवळ गोरख असे म्हणण्यास हरकत नाही.

२) गौड-सारंग - या रागाच्या नावाप्रमाणे या रागात गौड आणि सारंग या रागाचे मिश्रण असावे असे वाटते. परंतु तसे नाही या रागात सारंग रागाचा लवलेषही नाही. मात्र गौडअंग व कल्याणअंग असे दोन अंग या रागात दिसुन येतात. त्यामुळे या रागाचे नाव गौड कल्याण केल्यास विद्वानांची हरकत नसावी.

ताल - केहरवा

ताल केहरवा हा उत्तर हिंदुस्थानी संगीतातील उपशास्त्रीय गीत प्रकारास उपयुक्त असलेला लोकप्रिय ताल आहे. या तालाच्या बाबतीत बोलांमध्ये कुठेही संभ्रम नाही. परंतु याच्या मात्रांमध्ये मात्र संभ्रम आहे. काही विद्वान याच्या मात्रा '४' भाग '२' टाळी '१' वर आणि काल '3' वर मानतात.

मात्रा	१	२	3	४
बोल	धागे	नति	नक	धीन
चिन्ह	x		०	

काही विद्वान याच्या मात्रा '८' भाग '२' टाळी '१' वर आणि काल '५' वर मानतात.

मात्रा	१	२	3	४	५	६	७	८
बोल	धा	गे	न	ति	न	क	धी	न
चिन्ह	x				०			

ताल रूपक - हा उत्तर हिंदुस्थानी संगीतातील शास्त्रीय गीत प्रकारास उपयुक्त असलेला लोकप्रिय ताल आहे. या तालाच्या बाबतीत बोलांमध्ये कुठेही संभ्रम नाही. परंतु याच्या समेच्या मात्रेमध्ये मात्र संभ्रम आहे. काही विद्वान याच्या पहिल्या मात्रेवर समेचे चिन्ह देऊन टाळी देतात तर काही कालाचे चिन्ह देऊन समेचे वजन मानतात.

काही विद्वान याच्या मात्रा '७' भाग '3' टाळी '४ व ६' वर आणि काल '१' वर मानतात.

मात्रा	१	२	3	४	५	६	७
बोल	ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
चिन्ह	०			२		3	

निष्कर्ष -

प्राचीन काळापासून आजपर्यंतच्या संगीत शास्त्राकडे एक दृष्टीक्षेप टाकल्यास शास्त्रातील असणारे नियम व प्रत्यक्षात प्रायोगिक पक्ष यांमध्ये काही अल्प ठिकाणी अपवाद आढळतात तसेच ताल केहरवा च्या मात्राबाबत एकमत नाही आणि ताल रूपक च्या सम व काल या मात्रे बाबत एकमत नाही. त्यामुळे आडवळणाची स्थिती निर्माण होते. अशा सर्व गोष्टींचा ऊहापोह इथे केलेला आहे.

संदर्भ ग्रंथ सूची -

१)हिंदुस्थानी संगीत पध्दती क्रमिक पुस्तक मालिका भाग २ ते ४ लेखक पं. विष्णु नारायण भातखंडे प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस (उप्र)
२)राग विज्ञान भाग १ ते ५ लेखक पं. विनायकराव पटवर्धन प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस (उप्र)
3)संगीत विशारद लेखक लक्ष्मीनारायण गर्ग प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस (उप्र)
४)रागदारी संगीतातील सौंदर्य स्थळे लेखक रेवती भडकमकर प्रकाशक प्रतिमा प्रकाशन, पुणे
५)संगीत शास्त्र लेखक डॉ. वसंतराव राजोपाध्ये प्रकाशक अ.भा.गा.म. मंडळ, मिरज

संदर्भ ग्रंथ सूची -

१) हिंदुस्थानी संगीत पध्दती क्रमिक पुस्तक मालिका भाग २ ते ४ लेखक पं. विष्णु नारायण भातखंडे प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस (उप्र)
२) राग विज्ञान भाग १ ते ५ लेखक पं. विनायकराव पटवर्धन प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस (उप्र)
3) संगीत विशारद लेखक लक्ष्मीनारायण गर्ग प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस (उप्र)
४) रागदारी संगीतातील सौंदर्य स्थळे लेखक रेवती भडकमकर प्रकाशक प्रतिमा प्रकाशन, पुणे
५) संगीत शास्त्र लेखक डॉ. वसंतराव राजोपाध्ये प्रकाशक अ.भा.गा.म. मंडळ, मिरज

CamScanner

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred Journal

August 2021 Volume-12 Issue-4

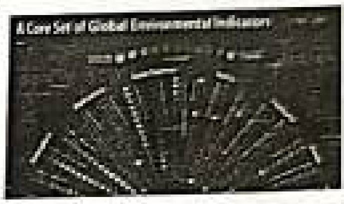

Global Environmental Health and Sustainable Development

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon

Executive Editors
Dr Suresh S Bakare
Principal Shri Dnyanesh Mahavidyalaya, Nawargaon

Executive Editors
Dr. Anita Lokhande
Head Department of Sports & Physical Education, Gondwana University, Gadchiroli

Co- Editors

Dr Manoj P Armarkar
Director, Dept of Sports & Physical Education, & NSS Coordinator Shri Dnyanesh Mahavidyalaya, Nawargaon, Dist. Chandrapur

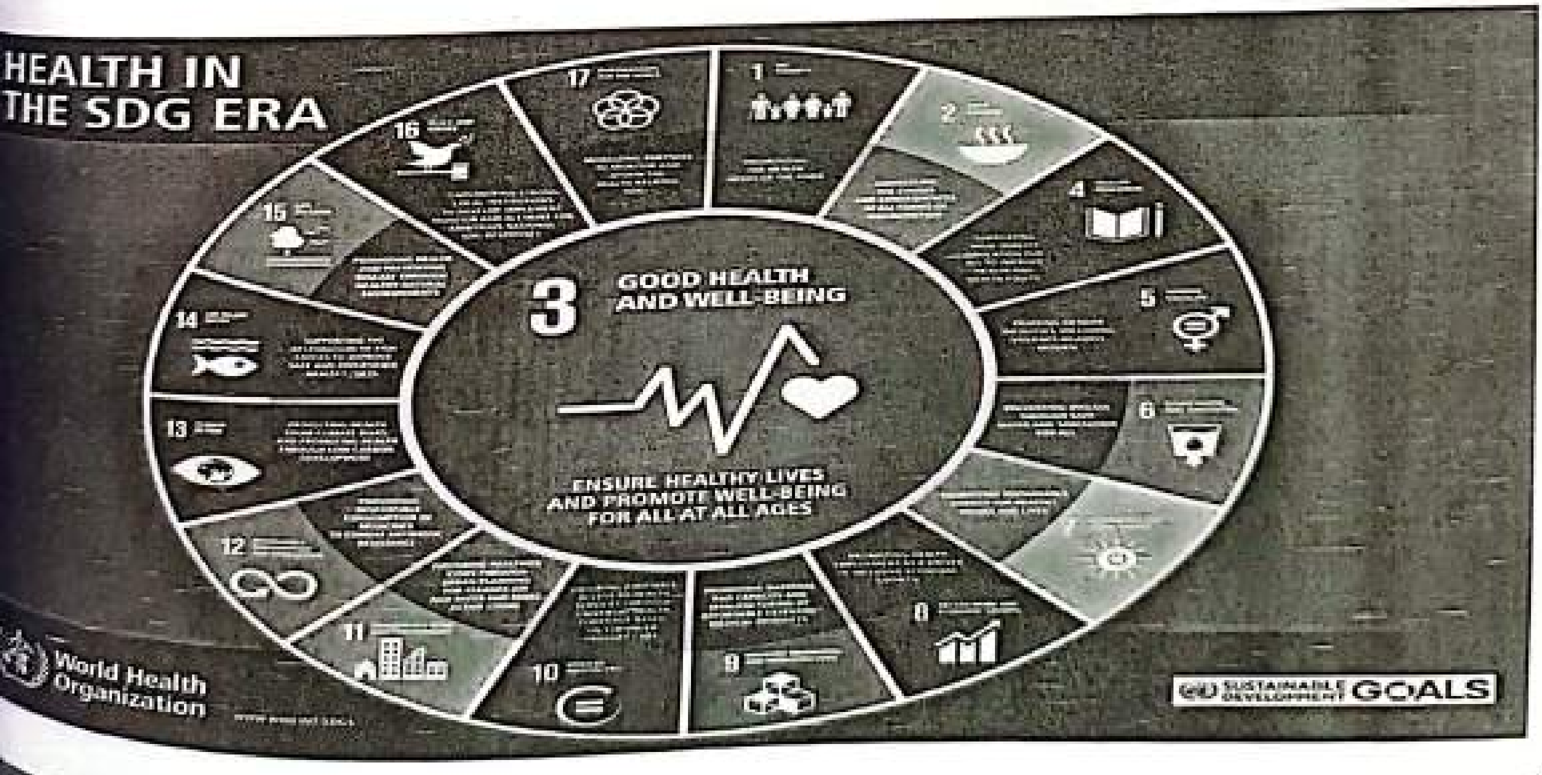

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

20th August 2021 Volume-12 Issue-4

On

Global Environmental Health and Sustainable Development

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Executive Editor
Dr Suresh S Bakare
Principal Shri Dnyanesh Mahavidyalaya, Nawargaon

Executive Editor
Dr. Anita Lokhande
Head Department of Sports & Physical Education, Gondwana University, Gadchiroli

Co- Editor
Dr Manoj P Armarkar
Director, Dept of Sports & Physical Education, & NSS Coordinator Shri Dnyanesh Mahavidyalaya, Nawargaon, Dist. Chandrapur

Published by- Dr Suresh S Bakare, Principal Shri Dnyanesh Mahavidyalaya, Nawargaon

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

'Journal of Research & Development' A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.263, ISSN: 2230-9578, 20 August-2021, Volume-12, Issue-4
'Global Environmental Health and Sustainable Development'

"भारतीय संगीतात राग वर्गीकरणाची आधुनिक, सुयोग्य व तर्कशुध्द पध्दती......रागांग पध्दती"

- प्रा .डॉ. चंद्रकिरण घाटे

पीएच.डी. (संगीत), सहयोगी प्राध्यापक, श्रीमती वत्सलाबाई नाईक महिला महाविद्यालय, पुसद जि. यवतमाळ

सारांश - प्राचीन काळापासून संगीताची जसजशी प्रगती होत आहे. तसे नवनवीन रागांची संख्या वाढतच चालली आहे. ज्यामुळे रागवर्गीकरणाच्या प्रचलीत पध्दतीमध्ये तोटकपणा व उणिवा जाणवू लागल्या असल्याने आधुनिक रागांग पध्दतीची आवश्यकता व महत्व जाणवू लागले आहे. नवनविन राग संख्या यामुळे राग वर्गीकरण करणे अनिवार्य झाले असल्याने राग रागीणी वर्गीकरण पध्दती व थाट राग वर्गीकरण पध्दती सारख्या पध्दती प्रचलित झाल्या व काही आजतागायत सुरु आहे. कालमानपरत्वे उणिवा वाढत गेल्या असल्याने आज नविन राग वर्गीकरणाची पध्दती असावी हा विचार समोर आला व रागांग पध्दती चे चलन आज मान्यता पावले असे म्हटल्यास वावगे ठरणार नाही.

प्रस्तावना –

'भारतीय संगीत' ही कला अतिशय प्राचीन कला आहे. वैदिक काळ, रामायण-महाभारत काळ, बौध्द काळ, जैन काळ तसेच मध्यकाळ व आधुनिक काळामध्ये या कलेचा परंपरागत विकास-प्रवाह गंगाजलाप्रमाणे स्वच्छ व निरलस अव्याहत आपल्यापर्यंत येऊन पोहचत आहे. प्राचीन काळामध्ये सात स्वर व सप्तकानंतर महर्षि पं. भरतमुनींनी नाट्यशास्त्रात 'राग' शब्द केवळ रंजन हेतू प्रयोजिला असुन पं. मतंग यांनी 'बृहद्देशी' मध्ये रंजन करणारा स्वरसमुदाय अशाप्रकारे वर्णिलेला आहे. 'राग' ही भारतीय संगीताची आधारशिला आहे. ज्याव्दारे अनेक प्रबंध, वस्तु, गान, गीतप्रकार इत्यादी अदि निबंध्द गाणाची निर्मिती होऊन आज 'संगीत' केवळ कला व शास्त्र इतक्या पुरतेच मर्यादित न राहता शालेय व विदयापीठात एक अभ्यासविषय म्हणून विकसित झाला अनेक शोधार्थी या विषयात बी.ए., एम.ए., एम.फिल., पी.एच.डी., विशारद, अलंकार, प्रवीण अशा पदव्या प्राप्त करीत आहेत.

रागवर्गीकरण – प्राचिन काळापासुन आधुनिक काळापर्यंत रागवर्गीकरणाच्या अनेक पध्दती विव्दानांनी संगीत क्षेत्रात सांगितल्या आहेत.

1) गीतीच्या आधारावर रागवर्गीकरण - मतंगमुनी यांनी तत्कालीन 7 रागांचे वर्गीकरण सर्व प्रथम कले. जे गीताव्दारे कलेले आहे. पं. शारंगदेव यांनी रागवर्गीकरण 5 गीतांच्या आधारावर केले.

2) समयानुसार रागवर्गीकरण – समयानुसार रागवर्गीकरणाचा सर्वप्रथम नारदाच्या 'संगीत मकरंद' ग्रंथामध्ये याचा उल्लेख मिळतो. आजची पुर्वांगवादी राग व उत्तरांगवादी राग ही विकसित संकल्पना व संधिप्रकाश राग, अध्वदर्शक स्वर, हे पारिभाषीक शब्द देखील यामधीलच होय.

3) रसानुसार राग वर्गीकरण – पं. नारद यांनी 'संगीत मकरंद' मध्ये याचा उल्लेख केला आहे. पुरुष राग, स्त्रीराग व नपुसक राग असे वर्ग व याचा रसाशी संबंध याची माहिती दिली आहे.

4) लिंगानुसार राग वर्गीकरण – पुरुष राग, स्त्री राग व नपुंसक राग या प्रमाणे लिंगानुसार राग वर्गीकरण संगीत मकरंद या ग्रंथात केले आहे.

अ) 'राग रागिणी पध्दती' - या वर्गीकरण पध्दतीची मुहुर्तमेळ पं. नारद यांनी संगीत मकरंद ग्रंथात घातली आहे. यात 20 पुरुषराग, 24 स्त्रिराग व 14 नपुंसक रागाचा उलेख प्राप्त होतो. 'वाचनाचार्य सुधाकलश' यांनी संगीत दामोदर ग्रंथात मुख्य राग 6 सांगुण पुरुष राग – श्री. वसंत, भैरव, पंचम, मेघ व नटनारायण सांगून त्यांच्या प्रत्येकी 5-5 रागिण्या सांगितल्या आहे. पुढे शिवमत, कल्लिनाथमत, हनुमंतमत, सोमेश्वर यांनी भैरव, कौशिक, हिंडोल, दिपक, श्री मेघ हे 6 पुरुषराग सांगून त्यांच्या प्रत्येकी सहा रागिण्या सांगितल्या व रागरागिनी वर्गीकरण पध्दतीवर शिक्कामोर्तब केले व ती प्रचलीत केली. या पध्दतीत पुरुष राग, स्त्रीराग,

CamScanner

पुत्र राग, पुत्रवधु राग अशा पध्दतीचे वर्गीकरण केलेले आहे. जवळ-जवळ 8 व्या शताब्दीपर्यंत ही राग रागिणी वर्गीकरण पध्दती प्रचलीत होती. नंतर त्यामध्ये काही परिवर्तने आलीत आणि उणिवा देखील भासू लागल्या.

पाटण्याचे महम्मद रजा यांनी 1856 मध्ये राग रागिणी वर्गीकरण पध्दतीचे खंडण करुन त्यात दोष दाखविले व एक नविन वर्गीकरण सांगीतले. पुढे तेही लोप पावले.

5) जातीनुसार वर्गीकरण – ही पध्दती पं. नारद यांनीच उल्लेखीली आहे. ही वर्गीकरण पध्दती औडव-षाडव व संपूर्ण या रागजातींवर आधारीत आहे. जी आजही प्रचलीत आहे.

6) संस्थान राग वर्गीकरण – '15' व्या शतकात लोचन कवी यांच्या 'रागतरंगिणी' ग्रंथात याचा उल्लेख मिळतो. '12' मूळ राग मानून जवळ-जवळ '85' रागांचे वर्गीकरण केलेले आहे. या '12' रागांना 'संस्थान' हे नामाभिदान करुन यवन संगीतातील '12' 'मुकाम' यांचा संबंध असल्याचे काही विव्दान मानतात.

7) मेल राग वर्गीकरण पध्दती – मध्ययुगात '14' व्या शतकात प्रवर्तक विदयारण्य यांनी मुख्य '15' मेल मानुन प्रचलीत रागांचे वर्गीकरण केले. त्यांनी शुध्दराग 'नट' मानला. दक्षिण भारतात हीच पध्दती प्रचलीत आहे. त्यानंतर पं. रामामात्यांनी मेल संख्या वाढवून '20' केली व शुध्दराग 'मुखारी' मानला. पं. सोमनाथ व पं. व्यंकटमुखींनी या पध्दतीचे अनुकरण केले. पं. सोमनाथांनी मुख्य राग वाढवून '23' केले व पं. व्यंकटमुखींनी '72' गणितीय मेलांची मेल राग वर्गीकरण पध्दती चर्तुदण्डीप्रकाशिका ग्रंथात सांगितली.

8) थाट राग वर्गीकरण पध्दती - या पध्दतीचे प्रवर्तक पं. विष्णू नारायण भातखंडे यांनी मुख्य थाट '10' मानून प्रचलीत सर्व रागांचे वर्गीकरण 'अभिनव राग मंजिरी' ग्रंथात केले आहे. त्यांची नावे – 1) भैरव 2) कल्याण 3) पुर्वी 4) मारवा 5) तोडी 6) काफी 7) खमाज 8) बिलावल 9) असावरी 10) भैरवी. ही पध्दती हिंदुस्थानी संगीतात उत्तर भारतात आजही प्रचलित आहे.

हिंदुस्थानी संगीतातील प्रचलित (थाट राग) पध्दतीतील उणिवा –

1) हिंदुस्थानी संगीत पध्दतीत शेकडो राग आहेत. काळानुसार नवनवीन रागांची भर पडतच आहे. एवढया सर्व रागांचे वर्गीकरण दहा थाटात करणे केवळ अशक्यप्रत मुददा आहे. उदा. जोगकंस, मधुवंती

2) स्वरसाधर्म्य असलेले राग वेगवेगळया थाटात वर्गीकृत केलेले आहेत. त्यामुळे अभ्यासकामध्ये संभ्रम निर्माण होतो. उदा. भूप व देशकार वेगवेगळया थाटातील राग आहेत.

3) काही रागांचा संबंधित थाटाशी कुठलाही संबंध नसुनही ते राग त्या थाटात वर्गीकृत केलेले आहे. उदा. भूपाली राग व कल्याण थाट

4) नवनवीन राग, मिश्रराग व जोडराग जबरदस्तीने काही थाटात वर्गीकृत केल्या सारखे वाटतात.

5) वर्तमान काळातील सर्व रागांना वर्गीकृत करण्याची क्षमता वर्गीकरणातील मुख्य दहा थाटात नाही हा आक्षेप थाट राग पध्दतीवर काही विव्दवान घेतात.

6) वर्तमान काही विव्दानांनी स्वयंप्रेरणेने काही नविन दहा थाटांमध्ये जोडण्याचा प्रयत्न केलेला आहे. उदा. वाचस्पती, चाळकेशी, षडविधमार्गीणी षण्मुखप्रिय पण यामुळे संभ्रमता वाढते याला उपाय म्हणता येणार नाही.

7) एखादया रागात एकाच स्वराची दोन रुपे प्रयोजिल्या जातात. त्या रागाच्या वर्गीकरणाचा प्रश्न कायमच राहतो. कारण एका स्वराची दोन रुपे असणारा थाटनियम ग्राहय करित नाही.

8) ज्या थाट स्वरावलीतून प्रत्यक्ष रागांची निर्मिती सांगितली आहे ती थाट स्वरावली गाण्यायोग्य व रंजक नाही. अशावेळी थाट आणि त्यातुन निर्माण होणाऱ्या रागाच्या स्वरावलीमध्ये पूरकतेचा अभाव किंवा विसंगतीचा प्रभाव दिसून आल्याखेरीज राहत नाही.

9) सात स्वरांचा थाट आठ ते दहा स्वरांच्या रागाची निर्मिती कशी करु शकेल? हा प्रश्न भेडसावतो.

10) 'खमाज' थाटात केवळ निषाद कोमल केलेला आहे आणि खमाज थाटातील रागात दोन्ही निषाद लागणारे राग वर्गीकृत केलेले आहे. थोडक्यात दोन्ही निषाद लागणारे राग 'खमाज' थाटातील होत. यावावत काही विव्दानांचे प्रश्न आहेत.

11) तिव्र मध्यम लागणारा थाट कल्याण आहे व कल्याण थाटातून उत्पन्न होणाऱ्या रागात शुध्द मध्यमाचे प्राबल्य व तीव्र मध्यमाचे अल्पत्व दिसून येते ही विसंगती वाटते. उदा. हमीर, कामोद, छायानट, केदार इत्यादी.

12) 'तिव्र मध्यम' स्वर लागणारा प्रमुख थाट 'कल्याण' आहे ज्यामध्ये तीव्र मध्यमाचे अतिरिक्त लागणारे सर्व स्वर शुध्द आहेत. कल्याण थाटोत्पन्न रागात दोन्ही मध्यम व दोन्ही निषाद लागणारे अनेक राग कल्याण थाटात वर्गीकृत करण्यात आलेले आहे.

13) थाटातून रागाची निर्मीती होते असे सांगितली जाते. प्राचिन काळात '6' व्या शताब्दीपर्यंत रागनिर्मिती झालेली आहे. मध्यकाळापर्यंत ही रागसंख्या शेकडो पर्यंत आली आणि '14' व्या शतकात मेल सकल्पना अस्तित्वात आली व '20' व्या शतकात 'थाट' त्यामुळे रागाची निर्मिती थाटातून कशी झाली असावी? असा तात्विक तर्क विव्दान मांडतात.

14) 'मारवा' आश्रय राग हा षाडव जातीचा आहे. त्यात पंचम वर्ज्य आहे. आश्रय राग हे थाटाचे गेय रुप आहे. म्हणजेच 'मारवा' थाटच सहा स्वरांचा म्हटल्यास वावगे ठरणार नाही.

पं. विष्णू नारायण भातखंडे यांनी '20' व्या शतकात 'अभिनव राग मंजिरी' या ग्रंथात वर्णिलेली सुटसुटीत, सरळ अशी 'थाट राग वर्गीकरण पध्दती' मध्ये आजच्या '21' शतकाच्या संदर्भात वरीलप्रमाणे बऱ्याच उणिवा असल्याचे जाणवते व अशावेळी तर्कसंगत व सुटसुटीत अशी नवीन राग वर्गीकरण पध्दतीची आवश्यकता मात्र आज भासू लागली आहे व आशात राग वर्गीकरणाच्या 'रागांग पध्दती' चा उदय झाला.

रागांग रागवर्गीकरण पध्दती –

राग वर्गीकरणाची नवीन पध्दती अविष्कृत झाली ती म्हणजे म्हणजे 'रागांग पध्दती' रागांग पध्दतीच्या प्रवर्तनाचे श्रेय 'स्व. नारायण मोरेश्वर खरे' यांना दिले जाते. 'स्वरसाधर्म्य व चलन सादृश्य' हे या पध्दतीची मुख्यतत्वे आहेत. हे चलन म्हणजे उदाहरणादाखल 'रेगरेसा' हे 'तोडी' चलन त्यामुळे मिया की तोडी, गुर्जरी तोडी, बिलासखानी तोडी, मालगवराळी तोडी हे सर्व राग एकाच भागात येतात. ही चलने गेय आहेत. त्यात रागाची सादृश्यता आहे. अशा रागांना 'रागांग' ही संज्ञा दिली असून असे रागांग '30' सांगितले आहेत – 1) भैरव 2) भैरवी 3) कल्याण 4) पूर्वी 5) मारवा 6) तोडी 7) काफी 8) खमाज 9) बिलावल 10) आसावरी 11) सारंग 12) भिम्पलासी 13) ललीत 14) सोरठ 15) बिभास 16) नट 17) शंकरा 18) केदार 19) हिंडोल 20) आसा 21) भरियार 22) बागेश्री 23) मल्हार 24) कानडा 25) दुर्गा 26) श्री 27) कानडा 28) बिहाग 29) भूपाली 30) पिलू या प्रत्येक रागांगातील मुख्य चलन व इतर रागांत आढळणाऱ्या त्याच स्वरसाधर्म्यांचे व चलनाचे राग वर्गीकृत केले जातात. या रागांगापैकी 'असा' आज प्रचलित नाही. मात्र इतर रागवर्गीकरणाच्या पध्दतींच्या तुलनेत आधुनिक काळात 'रागांग पध्दती' अधिक उपयोगी व स्वीकाराई अशी पध्दती आहे, आजच्या आधुनिक काळात नवराग निर्मितीकडे विशेष कल असल्याने रागसंख्या वाढत आहे. जोडराग, मिश्रराग, नवीन राग या सर्वांचे वर्गीकरण चलनाचे आधाराने करणे अधिक तर्कसंगत आहे.

रागांगाची संख्या '30' असल्याने प्रचलीत राग 'रागांग वर्गीकरण पध्दती' मध्ये सहजतेने वर्गीकृत करता येतात. हाच या पध्दतीचा मुददा वाटतो. म्हणून पं. गोविंदराव पलुस्कर, पं. वसंतराव राजोपाध्ये व श्री श्याम दडपे या विव्दतजनांनी देखील रागांग रागवर्गीकरण पध्दतीची पुष्ठी केली आहे. यांनी पुष्ठी करतांना ही पध्दती शंभर टक्के निर्दोष आहे. असे ठासून म्हणता येणार नाही. परंतु आधुनिक रागसंख्येची वृध्दी, 'रागांग' पध्दतीचे गुण, व अल्पस्त दोष यांचा सांगोपांग विचार करुन आधुनिक काळात ही पध्दती योग्य असल्याचे मानता येईल. स्व. पं. ना मो खरे शास्त्री यांनी रागांग संख्या '30' दिली आहे. व पं. वसंतराव राजोपाध्ये यांनी या '30' रागांगामध्ये भर घालून रागांगाची संख्या '35' केलेली आहे. जेणेकरुन जोडराग, मिश्ररागांचेही वर्गीकरण योग्य पध्दतीने व्हावे हाच विचार त्यामागे असावा. आज सर्व प्रचलीत व अप्रचलीत रागांचे वर्गीकरण तर्क संगत होणे अनिवार्य आहे. या आधीच्या सर्व पध्दतीच्या उणिवा दूर करण्याकरिता 'रागांग पध्दती' सुयोग्य, आधुनिक व तर्कशुध्द अशी पध्दती आहे. असे म्हणणे वावगे ठरणार नाही.

निष्कर्ष –

प्राचीन काळात 'राग रागिणी वर्गीकरण' पध्दती ही एक मान्यताप्राप्त राग वर्गीकरण पध्दती होती. कालमानपरत्वे त्या पध्दतीमध्ये दोष निर्माण झलेत व ती पध्दती लोप पावली. 'थाट राग पध्दती' चा उदय झाला. सरळ व सुटसुटीतपणा या गुणवैशिटयांमुळे स्वरसाधर्म्य हे प्रमुख तत्व मानून '10' थाटांची 'थाट राग वर्गीकरण पध्दती' चा अवलंब आजतागायत हिंदुस्थानी संगीतात सुरु आहे. आज आधुनिक काळात नवरागनिर्मिती जोडराग व मिश्रराग यामुळे प्रचलीत रागवर्गीकरण पध्दतीला मर्यादा आल्या आहेत व उणिवा भासू लागल्या आहेत. त्या उणिवांची पूर्ति करण्याकरिता नवीन राग वर्गीकरण पध्दतीची आवश्यकतेचा विचार प्रकट होत आहे. अशातच आधुनिक, सुयोग्य, तर्कसंगत आणि चलन तत्व अंगीभूत असलेली 'रागांग वर्गीकरण पध्दती' हाच एकमात्र पर्याय असल्याने त्याच्या अवलंबनास मान्यता देणे याशिवाय अन्यत्र कोणताही तरुणोपाय राहत नाही.

संदर्भ ग्रंथ सूचि –

1) *संगीतशास्त्र विज्ञान – लेखक – पन्नालाल मदन, अभिषेक पब्लिकेशन, चंदिगड, पृष्ठ 57-75.*
2) *हिन्दुस्थानी संगीत पध्दती – मुलतत्वे आणि सिध्दान्त – लेखक, प्रा.डॉ. बाळ पुरोहीत प्रकाशक – विजय प्रकाशन, नागपूर, पृष्ठ 100 ते 104*
3) *संगीतशास्त्र परिचय – लेखक, मेहना आर्डीकर, प्रकाशन, विजय प्रकाशन नागपूर पृष्ठ 57-60*
4) *संगीत विजयिनी, लेखक – डॉ. नारायण मंगरुळकर, प्रकाशन विजय प्रकाशन नागपूर पृष्ठ 101-106*
5) *संगीतशास्त्र – लेखक, डॉ. वसंतराव राजोपाध्ये, प्रकाशन अ.भा.गा. मवि मंडळ, मुंबई पृष्ठ 37-45*
6) *संगीत कला विहार – लेखक, मधुसुदन पटवर्धन, पृष्ठ 15-16*
7) *संगीत कला विहार – लेखक, ना.मो. खरे, पृष्ठ 23-25*
8) *संगीत कला विहार – लेखक, श्याम दडपे, पृष्ठ 18-20*
9) *संगीत कला विहार – लेखक, गोविंदराव पलुसकर, पृष्ठ 7-11*

CS CamScanner

संगीत एवं नृत्यकलाएँ: कल आज और कल

प्रो. (डॉ.) भावना ग्रोवर

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस
नई दिल्ली–110 002

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस
4695/5–21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली–110 002
फोन: 2327 0497, 2328 8285
फैक्स : 011–2328 8285
E-mail: kanishka_publishing@yahoo.co.in

संगीत एवं नृत्यकलाएँ: कल आज और कल

प्रथम संस्करण–2021
© लेखिका
ISBN:978-81-950394-2-5

भारत में मुद्रित

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, 4695/5–21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002 से चैतन्य सचदेवा द्वारा प्रकाशित; क्वालिटी प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा शब्द–संयोजन तथा नाइस प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

प्रस्तावना

समय सदा से ही परिवर्तनशील रहा है। निरंतर परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। भारतीय संगीत व नृत्यकलाएँ भी समयानुसार परिवर्तन से अछूती नहीं है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान तक संगीत व नृत्यशैलीयों पर समाज व मानव जीवन शैली का प्रभाव स्वरूप परिवर्तन होते रहे है। संगीत एवं नृत्यकलाओं का जो स्वरूप कल था वह आज नही है तथा भविष्य में भी निश्चय ही परिवर्तनशील रहेगा। मूल रूप से यदि हम भारतीय संगीत की बात करें तो पूर्व में अनेक सिद्धहस्त कलाकार हुए है जिन्होंने कला के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर, संगीत रूपी यज्ञ में गुरु शिक्षा व रिजाय रूपी आहूति दे सिद्ध फल प्राप्त किया है तदोपरान्त संगीत के श्रोता व दर्शकगण भी उस फल का आस्वादन कर अपनी आत्मा तृप्त करते रहे हैं। वर्तमान में जो स्वरूप हमें दिखाई देता है वह इस युग की देन है। सदा ही परिवर्तनशील व उन्नति की ओर अग्रसर भारतीय संगीत में नित नये प्रयोग हुए है, परन्तु भारतीय संगीत व नृत्यकलाएँ शाश्वत है। अनेकानेक परिवर्तन के उपरान्त भी विश्व पटल पर इनकी अमिट छाप है। उक्त विषय पर चिंतन, मनन, अध्ययन हेतु प्रदर्शनकारी विभाग, ललित कला संकाय, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय "संगीत एवं नृत्यकलाएँ: कल आज और कल" रहा। देश भर से अनेक विद्वानों को आमंत्रित कर दो दिन तक विषय पर चिन्तन हुआ। विदुषी नलिनी–कमलिनी अस्थाना, सुप्रसिद्ध कथक नृत्यांगना द्वय, पं० विजय शंकर मिश्र, सुप्रसिद्ध लेखक एवं समीक्षक, डॉ० विधि नागर, एसोसिएट प्रोफेसर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, डॉ० मधुरानी शुक्ला, विभागाध्यक्षा गायन विभाग प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद, डॉ० रागिनी प्रताप, भूतपूर्व विभागाध्यक्षा

संगीत विभाग कनोहर लाल डिग्री कॉलेज मेरठ, पं० हरिदत्त शर्मा, सदस्य उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, डॉ० जया शर्मा, विभागाध्यक्षा, संगीत विभाग आर्य कन्या डिग्री कॉलेज हापुड़, डॉ० रेखा सेठ, भूतपूर्व विभागाध्यक्षा, संगीत विभाग ईस्माईल नेशनल कन्या डिग्री कॉलेज मेरठ, डॉ० अम्बिका कश्यप, गुरू नानक गर्ल्ज कॉलेज यमुना नगर हरियाणा व डॉ० मोनिका सोनी, चंडीगढ़, श्री अजय पी झा, सुप्रसिद्ध मोहन वीणा वादक, श्री गीतेश मिश्र सुप्रसिद्ध गायक, श्री पवन घानक सुप्रसिद्ध शहनाई वादक ने विषय पर अपने तथ्यपूर्ण व सारगर्भित विचार रखे व मंच प्रस्तुतीकरण भी दिये व विषय पर गहन चिन्तन किया गया। निष्कर्ष स्वरूप कहा गया कि समयानुसार परिवर्तन अनुकूल है किन्तु उस परिवर्तन व नये स्वरूप से संगीत व नृत्यशैलीयों की शास्त्रीयता भंग नही होनी चाहिए अन्यथा भविष्य में उक्त शैली के मूल स्वरूप की हानि होगी। पाश्चात्यकरण व आज के डिजिटल युग में बढ़ते हुए इसकी संभावनायें है परन्तु यह कलाकारों व भावी पीढ़ी के हाथ में है कि भारतीय संस्कृति के स्तंभ भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्यकलाओं का संरक्षण व संवर्धन किस प्रकार हो सके।

प्रस्तुत पुस्तक में देश भर से आये विचारों से कुछ का संकलन कर प्रस्तुत कर रही हूँ। राष्ट्रीय संगोष्ठी में आये सभी विद्वानों के अमूल्य विचारधाराओं के लिए मैं हृदय से कृतज्ञता ज्ञापन करती हूँ। मैं अपने विश्वविद्यालय की संस्थापिका महोदया प्रो० (डॉ०) मुक्ति भटनागर जी का आभार व्यक्त करती हूँ जिनका स्नेह निरन्तर बना रहता है। विश्वविद्यालय का कार्यकारिणी अधिकारी डॉ० शल्या-राज जी को हृदय से धन्यवाद देती हूँ जिसके स्नेह व मार्गदर्शन से यह कार्य संभव हो सका है। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति महोदय जी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके मार्गदर्शन व प्रेरणा के बिना यह कार्य संभव नही था। ललित कला संकाय के डीन प्रो० (डॉ०) पिन्टू मिश्रा जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने प्रत्येक क्षण हर प्रकार से सहायता कर कार्य को परिणति तक पहुँचाने में मार्गदर्शन किया। मन से कर्म तक प्रेरणा देने वाले परम आदरणीय पं० विजय शंकर मिश्र जी का प्रत्येक पग पर मार्गदर्शन हेतु हृदय की गहराईयों से आभार व्यक्त करती हूँ। परफारमिंग आर्ट्स विभाग के सभी सदस्य डॉ० मोहिनी मेहरोत्रा, डॉ० प्रीति गुप्ता, श्री अभिषेक मिश्रा, सुश्री निशि व श्वेता सिंह के अथक सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। जीवन के प्रत्येक पग पर सहयोग देने के लिए मेरे जीवन साथी श्री निष्काम प्रेम दुआ व सुपुत्र पार्थ दुआ का आभार व्यक्त करती हूँ। अंत में ज्ञान की देवी माँ सरस्वती के चरणों में इस पुस्तक को श्रद्धा सुमन सहित अर्पित करती हूँ।

प्रो. (डॉ.) भावना ग्रोवर

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना v

1. भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षा में मल्टीमीडिया तकनीक की भूमिका
   डॉ. अंशुमती 1
2. चित्रपट संगीतः कल आज और कल
   डॉ. आकांक्षा रस्तोगी 5
3. तत वाद्य कला–कल, आज, कल
   डॉ. ऐश्वर्या भट्ट एवं तृप्ति जोशी 13
4. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीतः कल आज और कल
   डॉ. अम्बिका कश्यप 22
5. कथक नृत्य प्रस्तुतिकरण का बदलता स्वरूपः कल आज और कल
   डॉ. भावना ग्रोवर 30
6. राग संगीतः कल आज और कल
   डॉ. चंद्रकिरण घाटे 36
7. Folk Music: Past Present & Future
   Dr. Gaveesh 42
8. भारतीय संगीतः एक दर्शन
   डॉ. गीता शर्मा 45

6

राग संगीत: कल आज और कल

डॉ. चंद्रकिरण घाटे

शास्त्रीय संगीत का स्वरूप समय काल के गति से बदलता गया। मंदिरों से उद्‌गम हुआ, संगीत राजदरबारों से होते हुए कलावंतीनी के कोठे से जनसामान्यों की ओर पहुंचा। उसमें अनेक संस्कृतियों का मिलन हुआ। सामवेद से निर्माण हुआ संगीत आगे यवनी संस्कृती में भक्तिरस से श्रृंगाररस में परिवर्तित हुआ। शांत रस से विरह रस श्रृंगार लीला इनमें विलीन हुआ। मुगल काल में राजदरबारों में संगीत कला सेवक हुई, ब्रिटिश काल में कलावंत कोठे पर विराजमान हुए। आज मात्र जनसामान्यों में विशुद्ध स्वरूप में वृद्धिगत हो रही है। राग संगीत ध्रुपद–धमार के रूप में सामने आया। मध्यकाल में यह अपने चर्मोत्कर्ष पर रहा, ध्रुपद–धमार गायकों को राजदरबारों में आश्रय मिला। बानी के रूप में ध्रुपदगायन शैली का विकास हुआ। चार प्रकार की बानीया प्रचार में आई।

प्राचीन काल में राग संगीत

मतंग कृत बृहददेशी इस ग्रंथ में प्रथमतः यह राग शब्द आया है। जिनकी 7 जातियाँ बताई गयी है उसी में 1 जाति राग थी। ग्रंथकार के मत से अंश स्वर के प्रयोग से ग्राम रागों का जन्म होता है।

नारद कृत संगीत मकरंद इस ग्रंथ में पुल्लिंग, स्त्रीलिंग व नपुंसक लिंग के रागों का राग वर्गीकरण मिलता है। पुरुष राग 21, स्त्री राग 24, नपुंसक राग 13 एवं उनके नाम–श्री, छायानट, भूपाली, बसंत, सोरठ, शुद्ध सारंग, भैरवी, सैंधवी, गांधारी, देशी, बला बली, नारायणी, मेघ रंजनी, ललित, धनाश्री, सावेरी, शंकरा भरण। राग समय का उल्लेख मिलता है। इस में प्रातःकालीन राग, मध्यान्ह राग, सायंकालीन राग, रात्रिगेय राग इस प्रकार राग वर्गीकरण का ब्योरा है।

पं. शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर–इस ग्रंथ में दशविधी राग वर्गीकरण ग्रंथकार ने किया है।

गुरु–शिष्य परम्परा

गुरु–शिष्य परम्परा का आरंभ यही से हुआ। गुरु–शिष्य परम्परा यह भारतीय संगीत की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। जहाँ से संगीत के कला पक्ष की नींव मजबूत हुई।

संगीत में सतत विकास के लिए संपूर्ण श्रेय गुरु–शिष्य परम्परा को है। संगीत ह्रदय की स्वाभाविक भाषा है, एवं प्रायोगिक कला है। भारतीय संगीत में गुरु को पूजनीय स्थान प्राप्त है। सफल गुरु बनने हेतु पहले एक योग्य शिष्य बनना अनिवार्य हैं। वैदिक साहित्य में साम प्रशिक्षण के तीन रूप प्रचलित थे।

(1) पिता–पुत्र के रूप में,

(2) गुरु–शिष्य परम्परा के रूप में,

(3) गुरुकुल में जाकर शिक्षा ग्रहण करने के रूप में।

महाकाव्यकाल में गुरु–शिष्य प्रणाली थी। 6ठी एवं 7वीं शती में नालन्दा विश्वविद्यालय में संगीत शिक्षा की व्यवस्था थी। 10वीं शताब्दी में बीजापुर जिले के सलोरगी के मंदिर में संगीत विद्यालय की स्थापना हुई थी। 11वीं शती में चिलगीपुरक जिले में व्यकटेश्वर के मंदिर में तथा 14वीं शती में तिरोवेर्मिपुर एवं मल्कापुरक में विद्यामंन्दिरों की स्थापना हुई। इस प्रकार राग संगीत में गुरु–शिष्य परम्परा की व्यवस्था थी।

गुरुकुल शब्द जो आज प्रचलित है प्राचीन युग की देन है। प्राचीन एवं मध्य युग में 'मत एवं वाणियाँ' प्राचीन वैदिक संगीत में भी सामगायक अलग तरीके से गाया करते थे। जैसे 'द्युतान' गायक के नाम से द्योतान, वैखानस के नाम से वैखानस, शर्कर नाम से शार्कर साम गायक प्रसिद्ध थे। राग रागीनियों के संदर्भ में हनुमतमत, शिवमत, भरतमत, कल्लीनाथमत् आदि मतों का प्रचलन था। इन विद्वानों ने राग रागिनी वर्गीकरण पद्धति में मुख्य छः राग मानकर प्रत्येक राग की

पाँच या छः रागिनीयों का वर्णन किया है। उनमें शिवमत् एवं कल्लीनाथमत् में प्रमुख छः राग माने है उनके नाम—श्री, बसंत, पंचम, मेघ, भैरव, नटनारायण, भरतमत् व हनुमंतमत् में प्रमुख छः राग के नाम—भैरव, मालकंस, हिंदौल, दीपक, श्री, मेघ दिये हैं और उनकी 36 रागिनीयां आदि हैं।

पुरातन समय में सम्पर्क के साधन उपलब्ध न होने के कारण संगीतकला विशिष्ट परिवारों में एवं राजकीय घरानों में एवं दरबारों में पलती रही। ग्वालियर, आगरा, इंदौर, पटियाला, लाहौर, दिल्ली, बनारस इन भागों में घूमती रही। महाराष्ट्र में यह परम्परा पं. बालकृष्ण इचलकरंजीकरजी ने शुरू की, तत्पश्चात उनके शिष्य पं. विष्णुदिगंबर पलुस्करजी ने संगीत का समूचे भारत में प्रचार व प्रसार किया। पं. विष्णुदिगंबर पलुस्करजी एवं पं. विष्णुनारायण भातखंडे जी के अथक प्रयासों से एवं समूचे भारत भ्रमण से आज की शास्त्रीय संगीत की नींव रखी। अखिल भारतीय गांधर्व मंडल की स्थापना की। मंडल ने विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन संगीत शिक्षा में परीक्षा पद्धति का निर्माण किया। इन्हीं परिश्रमों से व यह संगीत विषय का चलन शुरू हुआ एवं राग संगीत जनसामान्यों में जा पहुंचा।

स्वातंत्र्योत्तर काल में पं. रविशंकर, पं. जाकिर हुसैन, पं. जसराजजी, पं. भीमसेन जोशी जी, पं. शिवकुमार शर्माजी, पं. हरिप्रसाद चौरसिया जी इन महात्माओं ने राग संगीत देस परदेस में जाकर समूचे विश्व में शास्त्रीय संगीत का प्रचार व प्रसार किया।

वर्तमान–संगीत की स्थिति

आज संगीत शिक्षक चतुरस्त्र संगीत का ज्ञान एवं संशोधक होता है। ध्वनि के नियम, नीतिक शास्त्र, इलेक्ट्रॉनिक, वाद्य यंत्र, रेडियो, दूरदर्शन, सी.डी. इनकी सहायता से सभी विषयों की जानकारी प्राप्त होता है। आज के काल में ध्वनिमुद्रण कार्य यह महत्वपूर्ण है। ध्वनि विस्तारक यंत्र, एम्लीफायर ग्रामफोन, कैसेट, सी.डी., हार्ड डिक्स, कंम्प्यूटर, पेन ड्राइव, एन्ड्रॉयड मोबाइल द्वारा इंटरनेट द्वारा ज्ञान के भंडार खुले हैं एवं इलेक्ट्रॉनिक्स वाद्यों मे तालमाला, तानपूरा, सुनादमाला, हवाईनगिटार, सिंथेसाइजर इन यंत्रों से आज के युग में क्रांति हुई है। कम्प्यूटर द्वारा संगीत शिक्षण एवं अध्यापन हो रहा है। खंडमेरू की तानों को 1 मिनट में हम स्क्रीन पर देख सकते हैं। अल्लाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी भोपाल के माध्यम से वाद्यों का केंद्र बनाया गया। इन में दुर्लभ वाद्य इकट्ठा किऐ गये है। ए.पी.जे. कॉलेज ऑफ फाईन आर्टस् जॉलंधर के संस्थापक प्रिंसिपल डॉ. शंकरलाल मिश्र इन्होंने 1983 में यूजीसी आयोग के सहायता से दिव्यांगों के लिए संगीत शिक्षण पद्धति इस विषय पर संशोधन किया रागों के साथ नये–नये रागों का नव निर्माण कर रहे है। कुमार गंधर्व द्वारा राग गांधी मल्हार, डॉ. प्रभा अत्रे द्वारा राग अपूर्व कल्याण, राग भिन्नकंस, राग मधुरकंस, राग दरबारीकंस, पटदीप मल्हार, रामरंगकृत, मंखारी, सरस्वती सारंग, विष्णुकल्याण, रामप्रिया, तिलक मल्हार, चंद्रावली, पं. गुणीदास द्वारा जोगकंस, मनरंजनी, मारूवसंत, पं. दिनरंग द्वारा गुनरंजनी, भूपाली, सालग भैरवी व नादप्रिया द्वारा ललितकली व राग भिन्न भैरव इन रागों का निर्माण किया गया है।

आज राग संगीत प्रगत विज्ञान के फल ले रहा है। विश्व स्तर पर विकास कर रहा है। आज राग संगीत को प्रायोजकों का आधार मिल रहा है। प्रचार–प्रसार माध्यमों की सहायता से धन, प्रसिद्धी, पैसा एवं महत्व प्राप्त हो रहा है। अनेक विद्वानों ने आज संगीत विषय में संगीत विशारद, एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी. व पोस्ट डॉक्टरेट पदवी प्राप्त की है। संगीत विषय में आज बड़ी मात्रा में लेखन हो रहा है। किताबों को महत्व प्राप्त हो रहा है। बंदिश एवं शास्त्रों की किताबें प्रकाशित हो रही हैं।

सिनेसंगीत, भावसंगीत, रैम्प, पॉप, गजल की तुलना में राग संगीत लोकप्रियता व लोकाश्रय से दूर है। दूरदर्शन या अन्य वाहिनीयों पर राग संगीत को स्थान नहीं मिल पाता। रेडियो का चलन अब नहीं रहा। इन सभी बातों से राग संगीत का प्रसार भी मानो थम सा गया है।

गुरु–शिष्य परम्परा की जगह आज संगीत विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों ने ली है। राग संगीत में लिखित एवं क्रियात्मक परीक्षाएँ होने लगी है। सैकड़ों, विद्यार्थी संगीत विशारद पदवी ग्रहण कर रहे है किंन्तु सादरीकरण यह मुद्दा राग संगीत से दूर होता जा रहा है। राग संगीत यह कला एवं छंद वर्ग में ही बंदिस्त हो चुका है।

पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर एवं पं. विष्णुनारायण भातखंडेजी के अथक परिश्रमों का फल है, की विद्यालयीन शिक्षा पद्धति में राग संगीत का अंतर्भाव हुआ है।

संगीत का भविष्य

राग संगीत के भविष्य का विचार किया जाय तो ऐसा प्रतीत होता है की समूचे विश्व का लक्ष्य हमारे राग संगीत की ओर है। कल राग संगीत का उद्दिदष्ट केवल मनोरंजन न रहकर रोगोपचार एवं योगसाधना, अध्यात्म यह होंगे।

मानसिक रोगों पर उपचार राग संगीत द्वारा हो सकते है, इसके प्रयोग एवं प्रयत्न शुरू है। कार्यक्षमता बढ़ाने हेतु (Work Efficiency) अनेक कार्यालयों में

राग संगीत सुनाया जाता है। वनस्पति बढ़ाने के लिए 'राग संगीत' उपयुक्त है यह सिद्ध हो चुका है।

'जागतिकीकरण' अथवा 'वैश्वीकरण' इन संकल्पनाओं द्वारा संपूर्ण विश्व मानो एक दूसरे से करीब आ रहा है। वैश्वीकरण में निश्चित रूप से स्पर्धा बढ़ रही है, विश्व छोटा हो रहा है, आप पर भाव नष्ट हो रहा है। हमारा 'राग संगीत' केवल हमारा न रहकर सभी विश्व का होने की सम्भावना दृढ़ हो रही है। 'राग संगीत एवं अन्य देशों का संगीत' भविष्य में स्पर्धात्मक पर्यावरण तैयार होगा किन्तु हमारा राग संगीत' जीवित रखने के लिए नए पीढ़ी को प्रयत्न करने होंगे।

आज राग संगीत में संगीत विषयक 'ज्ञानकोश' निर्माण होना अनिवार्य है। विज्ञान की सहायता से 'राग संगीत' में बहुत से परिवर्तन आएगे एवं विकास होगा। प्रचार–प्रसार की सीमाए बढ़ेगी। केवल पृथ्वीतल या विश्व ही नहीं अपितु जिन ग्रहोपर जीवसृष्टि होगी उन ग्रह पर भी 'राग संगीत' और भारतीय संगीत का डंका निरंतर बजता रहेगा।

'राग संगीत' के स्वरों का उपयोग मानवीय रोगों पर औषधी के माध्यम से किया जायेगा। मेडिकल क्षेत्र में खासकर मानसिक रोगों के लिए औषधोपचार के रूप में 'राग संगीत' (भारतीय शास्त्रीय संगीत) का बड़ा योगदान रहेगा। बड़े–बड़े अस्पतालों में संगीत द्वारा उपचार केंद्रों का स्वतंत्र संगीत उपचार विभाग होगा।

राग संगीत में 'बंदिशी' केवल हिन्दी, ब्रज, अवधी भाषा में न रहकर इंग्लिश, जर्मन, फ्रेंच, इटालियन, उर्दू, जापानी, फारसी भाषाओं में होगी। उन देशों में रागसंगीत उनके भाषा में बजेगा एवं लोकप्रिय होगा।

नवनवीन माध्यमों से हमारा राग संगीत लोगों के सामने आएगा। पौर्वात्य व पाश्चिमात्य देशों में उन देशों के प्रचलित वाद्यों पर राग संगीत बजाया जाऐगा एवं उसका एक अलग रूप सुनने को मिलेगा।

अलग–अलग देशों के अलग–अलग पंडितों के नाम विश्वभर में प्रसिद्ध होंगे। राग संगीत की अलग–अलग एकेडेमी, स्कूल, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में विश्व के अनेक देशों में स्थापित होंगे। आकाश में अलग–अलग ग्रहों पर भारतीय संगीत के गायन–वादन–नृत्य की कलाऐ भारतीय संगीत के रूप में जीवित होगी।

हमारे छात्र यदि अभ्यास एवं रियाज में सशक्त नहीं होते हैं तो ऐसे समय में हमें दूसरे देशों में जाकर हमारा संगीत उनसे सीखना होगा।

इस प्रकार हमारा राग संगीत एक वैश्विक संगीत होगा व उसकी चर्चा पूरे ब्रह्मांड में होगी।

संदर्भ सूची

- संगीत कला विहार–अंक अप्रैल–2010
- संगीत कला विहार–अंक जुलाई 2010
- संगीत कला विहार–अंक मार्च 2005
- संगीत कला विहार–अंक मार्च 2005
- भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देश–डॉ. पूनम दत्ता, पृ–70
- वर्तमान संगीत शिक्षा की शिक्षण पद्धतियाँ एवं तकनिकियाँ पत्रिका–रूचि पाण्डेय, पृ–212
- संगीत के घरानों की चर्चा, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, सुशील कुमार चौबे–2005
- संगीत पत्रिका (घराना अंक) पृ–122

संगीत एवं नृत्यकलाएँ:
कल आज और कल

प्रो. (डॉ.) भावना ग्रोवर

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस
नई दिल्ली—110 002

CamScanner

4695/5–21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली–110 002
फोन: 2327 0497, 2328 8285
फैक्स : 011–2328 8285
E-mail: kanishka_publishing@yahoo.co.in

संगीत एवं नृत्यकलाएँ: कल आज और कल

प्रथम संस्करण–2021
© लेखिका
ISBN: 978-81-950394-2-5

भारत में मुद्रित

कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, 4695/5–21 ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002 से चैतन्य सचदेवा द्वारा प्रकाशित; क्वालिटी प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा शब्द–संयोजन तथा नाइस प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

प्रस्तावना

समय सदा से ही परिवर्तनशील रहा है। निरंतर परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। भारतीय संगीत व नृत्यकलाएँ भी समयानुसार परिवर्तन से अछूती नहीं है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान तक संगीत व नृत्यशैलीयों पर समाज व मानव जीवन शैली का प्रभाव स्वरूप परिवर्तन होते रहे है। संगीत एवं नृत्यकलाओं का जो स्वरूप कल था वह आज नही है तथा भविष्य में भी निश्चय ही परिवर्तनशील रहेगा। मूल रूप से यदि हम भारतीय संगीत की बात करें तो पूर्व में अनेक सिद्धहस्त कलाकार हुए है जिन्होंने कला के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर, संगीत रूपी यज्ञ में गुरु शिक्षा व रिजाय रूपी आहूति दे सिद्ध फल प्राप्त किया है तदोपरान्त संगीत के श्रोता व दर्शकगण भी उस फल का आस्वादन कर अपनी आत्मा तृप्त करते रहे हैं। वर्तमान में जो स्वरूप हमें दिखाई देता है वह इस युग की देन है। सदा ही परिवर्तनशील व उन्नति की ओर अग्रसर भारतीय संगीत में नित नये प्रयोग हुए है, परन्तु भारतीय संगीत व नृत्यकलाएँ शाश्वत है। अनेकानेक परिवर्तन के उपरान्त भी विश्व पटल पर इनकी अमिट छाप है। उक्त विषय पर चिंतन, मनन, अध्ययन हेतु प्रदर्शनकारी विभाग, ललित कला संकाय, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका विषय 'संगीत एवं नृत्यकलाएँ: कल आज और कल' रहा। देश भर से अनेक विद्वानों को आमंत्रित कर दो दिन तक विषय पर चिन्तन हुआ। विदुषी नलिनी–कमलिनी अस्थाना, सुप्रसिद्ध कथक नृत्यांगना द्वय, पं० विजय शंकर मिश्र, सुप्रसिद्ध लेखक एवं समीक्षक, डॉ० विधि नागर, एसोसिएट प्रोफेसर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, डॉ० मधुरानी शुक्ला, विभागाध्यक्षा गायन विभाग प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद, डॉ० रागिनी प्रताप, भूतपूर्व विभागाध्यक्षा

संगीत विभाग कनोहर लाल डिग्री कॉलेज मेरठ, पं० हरिदत्त शर्मा, सदस्य उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, डॉ० जया शर्मा, विभागाध्यक्षा, संगीत विभाग आर्य कन्या डिग्री कॉलेज हापुड़, डॉ० रेखा सेठ, भूतपूर्व विभागाध्यक्षा, संगीत विभाग ईसमाईल नेशनल कन्या डिग्री कॉलेज मेरठ, डॉ० अम्बिका कश्यप, गुरू नानक गर्ल्ज कॉलेज यमुना नगर हरियाणा व डॉ० मोनिका सोनी, चंडीगढ़, श्री अजय पी झा, सुप्रसिद्ध मोहन वीणा वादक, श्री गीतेश मिश्र सुप्रसिद्ध गायक, श्री पवन धानक सुप्रसिद्ध शहनाई वादक ने विषय पर अपने तथ्यपूर्ण व सारगर्भित विचार रखे व मंच प्रस्तुतीकरण भी दिये व विषय पर गहन चिन्तन किया गया। निष्कर्ष स्वरूप कहा गया कि समयानुसार परिवर्तन अनुकूल है किन्तु उस परिवर्तन व नये स्वरूप से संगीत व नृत्यशैलीयों की शास्त्रीयता भंग नही होनी चाहिए अन्यथा भविष्य में उक्त शैली के मूल स्वरूप की हानि होगी। पाश्चात्यकरण व आज के डिजिटल युग में बढ़ते हुए इसकी संभावनायें है परन्तु यह कलाकारों व भावी पीढ़ी के हाथ में है कि भारतीय संस्कृति के स्तंभ भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्यकलाओं का संरक्षण व संवर्धन किस प्रकार हो सके।

प्रस्तुत पुस्तक में देश भर से आये विचारों से कुछ का संकलन कर प्रस्तुत कर रही हूँ। राष्ट्रीय संगोष्ठी में आये सभी विद्वानों के अमूल्य विचारधाराओं के लिए मैं हृदय से कृतज्ञता ज्ञापन करती हूँ। मैं अपने विश्वविद्यालय की संस्थापिका महोदया प्रो० (डॉ०) मुक्ति भट्नागर जी का आभार व्यक्त करती हूँ जिनका स्नेह निरन्तर बना रहता है। विश्वविद्यालय का कार्यकारिणी अधिकारी डॉ० शल्या राज जी को हृदय से धन्यवाद देती हूँ जिसके स्नेह व मार्गदर्शन से यह कार्य संभव हो सका है। विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति महोदय जी का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके मार्गदर्शन व प्रेरणा के बिना यह कार्य संभव नही था। ललित कला संकाय के डीन प्रो० (डॉ०) पिन्टू मिश्रा जी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने प्रत्येक क्षण हर प्रकार से सहायता कर कार्य को परिणति तक पहुँचाने में मार्गदर्शन किया। मन से कर्म तक प्रेरणा देने वाले परम आदरणीय पं० विजय शंकर मिश्र जी का प्रत्येक पग पर मार्गदर्शन हेतु हृदय की गहराईयों से आभार व्यक्त करती हूँ। परफारमिंग आर्ट्स विभाग के सभी सदस्य डॉ० मोहिनी मेहरोत्रा, डॉ० प्रीति गुप्ता, श्री अभिषेक मिश्रा, सुश्री निशि व श्वेता सिंह के अथक सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। जीवन के प्रत्येक पग पर सहयोग देने के लिए मेरे जीवन साथी श्री निष्काम प्रेम दुआ व सुपुत्र पार्थ दुआ का आभार व्यक्त करती हूँ। अंत में ज्ञान की देवी माँ सरस्वती के चरणों में इस पुस्तक को श्रद्धा सुमन सहित अर्पित करती हूँ।

प्रो. (डॉ.) भावना ग्रोवर

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना v

1. भारतीय शास्त्रीय संगीत शिक्षा में मल्टीमीडिया तकनीक की भूमिका
   डॉ. अंशुमती 1
2. चित्रपट संगीतः कल आज और कल
   डॉ. आकांक्षा रस्तोगी 5
3. तत वाद्य कला–कल, आज, कल
   डॉ. ऐश्वर्या भट्ट एवं तृप्ति जोशी 13
4. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीतः कल आज और कल
   डॉ. अम्बिका कश्यप 22
5. कत्थक नृत्य प्रस्तुतिकरण का बदलता स्वरूपः कल आज और कल
   डॉ. भावना ग्रोवर 30
6. राग संगीतः कल आज और कल
   डॉ. चंद्रकिरण घाटे 36
7. Folk Music: Past Present & Future
   Dr. Gaveesh 42
8. भारतीय संगीतः एक दर्शन
   डॉ. गीता शर्मा 45

CamScanner